यिर्मयाह

1 यिर्मयाह के ये सन्देश हैं। यिर्मयाह हिल्किय्याह नामक व्यक्ति
का पुत्र था। यिर्मयाह उन याजकों के परिवार से था जो अनातोत
नगर में रहते थे। वह नगर उस प्रदेश में है जो बिन्यामीन परिवार
का था। 2 यहोवा ने यिर्मयाह से उन दिनों बातें करनी आरम्भ की।
जब योशिय्याह यहूदा राष्ट्र का राजा था। योशिय्याह आमोन नामक
राजा का पुत्र था। यहोवा ने यिर्मयाह से योशिय्याह के राज्यकाल
के तेरहवें वर्ष में बातें करनी आरम्भ की। 3 यहोवा यिर्मयाह से
उस समय बातें करता रहा जब यहोयाकीम यहूदा का राजा था।
यहोयाकीम योशिय्याह का पुत्र था। यिर्मयाह को सिदकिय्याह के राज्यकाल के ग्यारह वर्ष पाँच महीने तक, यहोवा की वाणी सुनाई पड़ती रही। सिदकिय्याह भी योशिय्याह का एक पुत्र था। सिदकिय्याह के राज्यकाल के ग्यारहवें वर्ष के पाँचवें महीने में यरूशलेम के निवासियों को देश—निकाला दिया गया था।

परमेश्वर यिर्मयाह को अपने पास बुलाता है

4 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यहोवा का सन्देश यह था:

5 "तुम्हारी माँ के गर्भ में रखने के पहले
मैंने तुमको जान लिया।
तुम्हारे जन्म लेने के पहले,
मैंने तुम्हें विशेष कार्य के लिये चुना था।
मैंने तुम्हें राष्ट्रों का नबी होने को चुना था।"

6 तब मैंने अर्थात् यिर्मयाह ने कहा, "किन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा, मैं तो बोलना भी नहीं जानता। मैं तो अभी बालक ही हूँ।"

7 किन्तु यहोवा ने मुझसे कहा,

“मत कहो, ‘मै बालक ही हूँ।’
तुम्हें हर उन स्थानों पर जाना है जहाँ मैं भेंजूँ।
तुम्हें वह सब कहना है जिसे मैं कहने को कहूँ।
8 किसी से मत डरो।
मैं तुम्हारे साथ हूँ, और मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।”
यह सन्देश यहोवा का है।

9 तब यहोवा ने अपना हाथ बढ़ाया और मेरे मुँह को छू लिया।
यहोवा ने मुझसे कहा,

“यिर्मयाह, मैं अपने शब्द तेरे मुँह में दे रहा हूँ।
10 आज मैंने तुम्हें राज्यों और राष्ट्रों का अधिकारी बनाया है।
तुम इन्हें उखाड़ और उजाड़ सकते हो। तुम इन्हें नष्ट और उठा फेंक सकते हो।
तुम इन्हें और उठा फेंक सकते हो।
तुम निर्माण और रोपण कर सकते हो।”

दो अन्तर्दृश्य

11 यहोवा का सन्देश मुझे मिला। यह सन्देश यहोवा का था:
“यिर्मयाह, तुम क्या देखते हो”

मैंने यहोवा को उत्तर दिया और कहा, “मैं बादाम की लकड़ी की एक छड़ी देखता हूँ।”

12 यहोवा ने मुझसे कहा, “तुमने बहुत ठीक देखा और मैं इस
बात की चौकसी कर रहा हूँ कि तुमको दिया गया मेरा सन्देश
ठीक उतरे।”
13 यहोवा का सन्देश मुझे फिर मिला। यहोवा के यहाँ का सन्देश
यह था, “यिर्मयाह, तुम क्या देखते हो”

मैंने यहोवा को उत्तर दिया और कहा, “मैं उबलते पानी का एक बर्तन देख रहा हूँ। यह बर्तन उत्तर की ओर से टपक रहा है।”

14 यहोवा ने मुझसे कहा, “उत्तर से कुछ भयानक आएगा।
यह उन सब लोगों के लिए होगा जो इस देश में रहते हैं।
15 कुछ समय बाद मैं उत्तर के राज्यों के सभी लोगों को बुलाऊँगा।”
ये बातें यहोवा ने कहीं।

“उन देशों के राजा आएंगे।
वे यरूशलेम के द्वार के सामने अपने सिंहासन जमाएंगे।
वे यरूशलेम के सभी नगर दीवारों पर आक्रमण करेंगे।
वे यहूदा प्रदेश के सभी नगरों पर आक्रमण करेंगे।
16 और मैं अपने लोगों के विरूद्ध अपने निर्णय की घोषणा करूँगा।
मैं यह इसलिये करूँगा, क्योंकि वे बुरे लोग हैं, और वे मेरे विरुद्ध चले गए हैं।
मेरे लोगों ने मुझे छोड़ा।
उन्होंने अन्य देवताओं को बलि चढ़ाई।
उन्होंने अपने हाथों से बनाई गई मूर्तियों को पूजा की।

17 “यिर्मयाह, जहाँ तक तुम्हारी बात है, उठो।
तैयार हो जाओ! उठो और लोगों को सन्देश दो।
वह सब कुछ लोगों से कहो जो मैं कहने को कहूँ।
लोगों से मत डरो।
यदि तुम लोगों से डरे तो मैं उनसे डरने का अच्छा कारण तुम्हें दे दूँगा।
18 जहाँ तक मेरी बात है, मैं आज ही तुझे
एक दृढ़ नगर, एक लौह स्तम्भ, एक काँसे की दीवार बनाने जा रहा हूँ।
तुम देश में हर एक के विरूद्ध खड़े होने योग्य होगे,

यहूदा देश के राजाओं के विरूद्ध, यहूदा के प्रमुखों के विरूद्ध,
यहूदा के याजकों के विरूद्ध और यहूदा देश के लोगों के विरूद्ध भी।
19 वे सब लोग तुम्हारे विरूद्ध लड़ेंगे,
किन्तु वे तुझे पराजित नहीं करेंगे।
क्यों क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ,
और मैं तेरी रक्षा करूँगा।”
यह सन्देश यहोवा का है।

2

यहूदा विश्वासयोग्य नहीं रहा

1 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यहोवा का सन्देश यह
था: 2 “यिर्मयाह, जाओ और यरूशलेम के लोगों को सन्देश दो।
उनसे कहो:

“जिस समय तुम नव राष्ट्र थे, तुम मेरे विश्वासयोग्य थे।
तुमने मेरा अनुगमन नयी दुल्हन सा किया।
तुमने मेरा अनुगमन मरुभूमि में से होकर किया, उस प्रदेश में अनुगमन किया जिसे कभी कृषि भूमि न बनाया गया था।
3 इस्राएल के लोग यहोवा को एक पवित्र भेंट थे।
वे यहोवा द्वारा उतारे गये प्रथम फल थे।
इस्राएल को चोट पहुँचाने का प्रयत्न करने वाले हर एक लोग अपराधी निर्णीत किये गए थे।
उन बुरे लोगों पर बुरी आपत्तियाँ आई थीं।”
यह सन्देश यहोवा का था।
4 याकूब के परिवार, यहोवा का सन्देश सुनो।
इस्राएल के तुम सभी परिवार समूहो, सन्देश सुनो।
5 जो यहोवा कहता है, वह यह है:

"क्या तुम समझते हो कि, मैं तुम्हारे पूर्वजों का हितैषी नहीं था?
तब वे क्यों मुझसे दूर हो गए तुम्हारे पूर्वजों ने निरर्थक हो गये।
6 तुम्हारे पूर्वजों ने यह नहीं कहा,
'यहोवा ने हमें मिस्र से निकाला।
यहोवा ने मरुभूमि में हमारा नेतृत्व किया।
यहोवा हमे सूखे चट्टानी प्रदेश से लेकर आया,
यहोवा ने हमें अन्धकारपूर्ण और भयपूर्ण देशों में राह दिखाई।
कोई भी लोग वहाँ नहीं रहते कोई भी लोग उस देश से यात्रा नहीं करते।
लेकिन यहोवा ने उस प्रदेश में हमारा नेतृत्व किया।
अत: वह यहोवा अब कहाँ हैं?'

7 "यहोवा कहता है, मैं तुम्हें अनेक अच्छी चीज़ों से भरे उत्तम देश में लाया।
मैंने यह किया जिससे तुम वहाँ उगे हुये फल और पैदावार को खा सके।
किन्तु तुम आए और मेरे देश को तुमने "गन्दा" किया।
मैंने वह देश तुम्हें दिया था,
किन्तु तुमने उसे बुरा स्थान बनाया।"

8 "याजकों ने नहीं पूछा, 'यहोवा कहाँ हैं' व्यवस्था को जाननेवाले लोगों ने मुझको जानना नहीं चाहा।
इस्राएल के लोगों के प्रमुख मेरे विरुद्ध चले गए।
नबियों ने झूठे बाल देवता के नाम भविष्यवाणी की।
उन्होंने निरर्थक देव मूर्तियों की पूजा की।"

9 यहोवा कहता है, "अत: मैं अब तुम्हें फिर दोषी करार दूँगा,
और तुम्हारे पौत्रों को भी दोषी ठहराऊँगा।

10 समुद्र पार कित्तियों के द्वीपों को जाओ
और देखो किसी को केदार प्रदेश को भेजो
और उसे ध्यान से देखने दो।
ध्यान से देखो क्या कभी किसी ने ऐसा काम किया:
11 क्या किसी राष्ट्र के लोगों ने कभी अपने पुराने देवताओं को नये देवता से बदला है नहीं!
निसन्देह उनके देवता वास्तव में देवता हैं ही नहीं।
किन्तु मेरे लोगों ने अपने यशस्वी परमेश्वर को निरर्थक देव मूर्तियों से बदला हैं।

12 "आकाश, जो हुआ है उससे अपने हृदय को आघात पहुँचने दो!
भय से काँप उठो!"
यह सन्देश यहोवा का था।
13 "मेरे लोगों ने दो पाप किये हैं।
उन्होंने मुझे छोड़ दिया (मैं ताजे पानी का सोता हूँ।)
और उन्होंने अपने पानी के निजी हौज खोदे हैं।
(वे अन्य देवताओं के भक्त बने हैं।)
किन्तु उनके हौज टूटे हैं।
उन हौजों में पानी नहीं रुकेगा।

14 "क्या इस्राएल के लोग दास हो गए हैं
ल के लोगों की सम्पत्ति अन्य लोगों ने क्यों ले ली
15 जवान सिंह (शत्रु) इस्राएल राष्ट्र पर दहाड़ते हैं, गुरते हैं।
सिंहों ने इस्राएल के लोगों का देश उजाड़ दिया हैं।
इस्राएल के नगर जला दिये गए हैं।
उनमें कोई भी नहीं रह गया है।
16 नोप और तहपन्हेस नगरों के लोगों ने तुम्हारे सिर के शीर्ष को कुचल दिया है।
17 यह परेशानी तुम्हारे अपने दोष के कारण है।

तुम अपने यहोवा परमेश्वर से विमुख हो गए, जबकि वह सही
दिशा में तुम्हें ले जा रहा था।
18 यहूदा के लोगों, इसके बारे में सोचो:
क्या उसने मिस्र जाने में सहायता की क्या इसने नील नदी का
पानी पीने में सहायता की नहीं!
क्या इसने अश्शूर जाने में सहायता की क्या इसने परात नदी
का जल पीने में सहायता की नहीं!
19 तुमने बुरे काम किये, और वे बुरी चीजें तुम्हें केवल दण्ड
दिलाएंगी।
विपत्तियाँ तुम पर टूट पड़ेंगी और ये विपत्तियाँ तुम्हें पाठ
पढ़ाएंगी।
इस विषय में सोचो: तब तुम यह समझोगे कि अपने परमेश्वर से
विमुख हो जाना कितना बुरा है।
मुझसे न डरना बुरा है।"
यह सन्देश मेरे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा का था।
20 "यहूदा बहुत पहले तुमने अपना जुआ फेंक दिया था।
तुमने वह रस्सियाँ तोड़ फेंकी जिसे मैं तुम्हें अपने पास रखने
में काम में लाता था।
तुमने मुझसे कहा, 'मै आपकी सेवा नहीं करूँगा!'
सच्चाई यह है कि तुम वेश्या की तरह हर एक ऊँची पहाड़ी पर
और हर एक हरे पेड़ के नीचे लेटे और काम किये।
21 यहूदा, मैंने तुम्हें विशेष अंगूर की बेल की तरह रोपा।
तुम सभी अच्छे बीज के समान थे।
तुम उस भिन्न बेल में कैसे बदले
जो बुरे फल देती है
22 यदि तुम अपने को ल्ये से भी धोओ,
बहुत साबुन भी लगाओ,
तो भी मैं तुम्हारे दोष के दाग को देख सकता हूँ।"

यह सन्देश परमेश्वर यहोवा का था।
23 “यहूदा, तुम मुझसे कैसे कह सकते हो,
‘मै अपराधी नहीं हूँ, मैंने बाल की मूर्तियों की पूजा नहीं की है!’
उन कामों के बारे में सोचों
जिन्हें तुमने घाटी में किये।
उस बारे में सोचों, तुमने क्या कर डाला है।
तुम उस तेज ऊँटनी के समान हो जो एक स्थान से दूसरे स्थान को दौड़ती है।
24 तुम उस जँगली गधी की तरह हो जो मरुभूमि में रहती है
और सहभोग के मौसम में जो हवा को सूंघती है (गन्ध लेती है।)
कोई व्यक्ति उसे कामोत्तेजना के समय लौटा कर ला नहीं सकता।
सहभोग के समय हर एक गधा जो उसे चाहता है, पा सकता है।
उसे खोज निकालना सरल है।
25 यहूदा, देवमूर्तियों के पीछे दौड़ना बन्द करो।
उन अन्य देवताओं के लिये प्यास को बुझ जाने दो।
किन्तु तुम कहते हो, ‘यह व्यर्थ है! मैं छोड़ नहीं सकता!
मैं उन अन्य देवताओं से प्रेम करता हूँ।
मैं उनकी पूजा करना चाहता हूँ।’

26 “चोर लज्जित होता है जब उसे लोग पकड़ लेते हैं।
उसी प्रकार इस्राएल का परिवार लज्जित है।
राजा और प्रमुख, याजक और नबी लज्जित हैं।
27 वे लोग लकड़ी के टुकड़ो से बातें करते हैं, वे कहते हैं,
‘तुम मेरे पिता हो।’
वे लोग चट्टान से बात करते हैं, वे कहते हैं,
‘तुमने मुझे जन्म दिया है।’

वे सभी लोग लज्जित होंगे।
वे लोग मेरी ओर ध्यान नहीं देते।
उन्होंने मुझसे पीठ फेर ली है।
किन्तु जब यहूदा के लोगों पर विपत्ति आती है
तब वे मुझसे कहते हैं, 'आ और हमें बचा!'
28 उन देवमूर्तियों को आने और तुमको बचाने दो!
वे देवमूर्तियाँ कहाँ हैं जिसे तुमने अपने लिये बनाया है हमें देखने दो,
क्या वे मूर्तियाँ आती हैं और तुम्हारी रक्षा विपत्ति से करती हैं
यहूदा के लोगों, तुम लोगों के पास उतनी मूर्तियाँ हैं जितने नगर।

29 "तुम मुझसे विवाद क्यों करते हो
तुम सभी मेरे विरुद्ध हो गए हो।"
यह सन्देश यहोवा का था।
30 "यहूदा के लोगों, मैंने तुम्हारे लोगों को दण्ड दिया,
किन्तु इसका कोई परिणाम न निकला।
तुम तब लौट कर नहीं आए जब दण्डित किये गये।
तुमने उन नबियों को तलवार के घाट उतारा जो तुम्हारे पास आए।
तुम खूंखार सिंह की तरह थे
और तुमने नबियों को मार डाला।"
31 इस पीढ़ी के लोगों, यहोवा के सन्देश पर ध्यान दो:

"क्या मैं इस्राएल के लोगों के लिये मरुभूमि सा बन गया?
"क्या मैं उनके लिये अंधेरे और भयावने देश सा बन गया?
मेरे लोग कहते है, 'हम अपनी राह जाने को स्वतन्त्र हैं,
यहोवा, हम फिर तेरे पास नहीं लौटेंगे!'
वे उन बातों को क्यों कहते हैं?
32 क्या कोई युवती अपने आभूषण भूलती है नहीं।

क्या कोई दुल्हन अपने श्रृंगार के लिए अपना दुपट्टा भूल जाती
है नहीं।
किन्तु मेरे लोग मुझे अनगिनत दिनों से भूल गए हैं।

33 "यहूदा, तुम सचमुच प्रेमियों (झूठे देवताओं) के पीछे पड़ना जानते
हो।
अत: तुमने पाप करना स्वयं ही सीख लिया है।
34 तुम्हारे हाथ खून से रंगे हैं! यह गरीब और भोले लोगों का खून
है।
तुमने लोगों को मारा और वे लोग ऐसे चोर भी नहीं थे जिन्हें
तुमने पकड़ा हो!
तुम वे बुरे काम करते हो!
35 किन्तु तुम फिर कहते रहते हो, 'हम निरपराध हैं।
परमेश्वर मुझ पर क्रोधित नहीं है।'
अत: मैं तुम्हें झूठ बोलने वाला अपराधी होने का भी निर्णय दूँगा।
क्यों क्योंकि तुम कहते हो, "मैंने कुछ भी बुरा नहीं किया है।"
36 तुम्हारे लिये इरादे को बदलना बहुत आसान हैं।
अश्शूर ने तुम्हें हताश किया! अत: तुमने अश्शूर को छोड़ा
और सहायता के लिये मिस्र पहुँचे।
मिस्र तुम्हें हताश करेगा।
37 ऐसा होगा कि तुम मिस्र भी छोड़ोगे
और तुम्हारे हाथ लज्जा से तुम्हारी आँखों पर होंगे।
तुमने उन देशों पर विश्वास किया।
किन्तु तुम्हें उन देशों में कोई सफलता नहीं मिलेगी।
क्यों क्योंकि यहोवा ने उन देशों को अस्वीकार कर दिया है।

3

1 "यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को तलाक देता है,

और वह पत्नी उसे छोड़ देती है तथा अन्य व्यक्ति से विवाह कर लेती है
तो क्या वह व्यक्ति अपनी पत्नी के पास फिर आ सकता है नहीं!
यदि वह व्यक्ति उस स्त्री के पास लौटेगा तो देश पूरी तरह गन्दा हो जाएगा।
यहूदा, तुमने वेश्या की तरह अनेक प्रेमियों (असत्य देवताओं) के साथ काम किये
और अब तुम मेरे पास लौटना चाहते हो!" यह सन्देश यहोवा का था।
2 "यहूदा, खाली पहाड़ी की चोटी को देखो।
क्या कोई ऐसी जगह है जहाँ तुम्हारा अपने प्रेमियों (असत्य देवताओं) के साथ शारीरिक सम्बन्ध न चला
तुम सड़क के किनारे प्रेमियों की प्रतीक्षा करती बैठी हो।
तुम वहाँ मरुभूमि में प्रतीक्षा करते अरब की तरह बैठी।
तुमने देश को गन्दा किया है!
कैसे तुमने बहुत से बुरे काम किये
और तुम मेरी अभक्त रही।
3 तुमने पाप किये अत: वर्षा नहीं आई!
बसन्त समय की कोई वर्षा नहीं हुई।
किन्तु अभी भी तुम लज्जित होने से इन्कार करती हो।
4 किन्तु अब तुम मुझे बुलाती हो।
'मेरे पिता, तू मेरे बचपन से मेरे प्रिय मित्र रहा है।'
5 तुमने ये भी कहा,
'परमेश्वर सदैव मुझ पर क्रोधित नहीं रहेगा।
परमेश्वर का क्रोध सदैव बना नहीं रहेगा।'

"यहूदा, तुम यह सब कुछ कहती हो,
किन्तु तुम उतने ही पाप करती हो जितने तुम कर सकती हो।"

6 उन दिनों जब योशिय्याह यहूदा राष्ट्र पर शासन कर रहा था।
यहोवा ने मुझसे बातें की। यहोवा ने कहा, “यिर्मयाह, तुमने उन बुरे
कामों को देखा जो इस्राएल ने किये तुमने देखा कि उसने कैसे मेरे
साथ विश्वासघात किया। उसने हर एक पहाड़ी के ऊपर और हर
एक हरे पेड़ के नीच झूठी मूर्तियों की पूजा करके व्यभिचार करने
का पाप किया। 7 मैंने अपने से कहा, ‘इस्राएल मेरे पास तब लौटेगी
जब वह इन बुरे कामों को कर चुकेगी।’ किन्तु वह मेरे पास लौटी
नहीं और इस्राएल की अविश्वासी बहन यहूदा ने देखा कि उसने
क्या किया है 8 इस्राएल विश्वासघातिनी थी और यहूदा जानती थी
कि मैंने उसे क्यों दूर हटाया। यहूदा जानती थी कि मैंने उसको
इसलिए अस्वीकृत किया कि उसने व्यभिचार का पाप किया था।
किन्तु इसने उसकी विश्वासघाती बहन को डराया नहीं। यहूदा डरी
नहीं। यहूदा भी निकल गई और उसने वेश्या की तरह काम किया।
9 यहूदा ने यह ध्यान भी नहीं दिया कि वह वेश्या की तरह काम
कर रही है। अत: उसने अपने देश को ‘गन्दा’ किया। उसने लकड़ी
और पत्थर की बनी देवमूर्तियों की पूजा करके व्यभिचार का पाप
किया। 10 इस्राएल की अविश्वासी बहन (यहूदा) अपने पूरे हृदय से
मेरे पास नहीं लौटी। उसने केवल बहाना बनाया कि वह मेरे पास
लौटी है।” यह सन्देश यहोवा का था।

11 यहोवा ने मुझसे कहा, “इस्राएल मेरी भक्त नहीं रही। किन्तु
उसके पास कपटी यहूदा की अपेक्षा अच्छा बहाना था। 12 यिर्मयाह,
उत्तर की ओर देखो और यह सन्देश बोलो:

“ ‘अविश्वासी इस्राएल के लोगों तुम लौटो।’
यह सन्देश यहोवा का था।
‘मैं तुम पर भौहे चढ़ाना छोड़ दूँगा, मैं दयासागर हूँ।’
यह सन्देश यहोवा का था।
‘मैं सदैव तुम पर क्रोधित नहीं रहूँगा।’

13 तुम्हें केवल इतना करना होगा कि तुम अपने पापों को पहचानो।
तुम यहोवा अपने परमेश्वर के विरुद्ध गए, यह तुम्हारा पाप है।
तुमने अन्य राष्ट्रों के लोगों की देव मूर्तियों को अपना प्रेम दिया।
तुमने देव मूर्तियों की पूजा हर एक हरे पेड़ के नीचे की।
तुमने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया।"
यह सन्देश यहोवा का था।

14 "अभक्त लोगों, मेरे पास लौट आओ।" यह सन्देश यहोवा का
था। "मैं तुम्हारा स्वामी हूँ। मैं हर एक नगर से एक व्यक्ति लूँगा और
हर एक परिवार से दो व्यक्ति और तुम्हें सिय्योन पर लाऊँगा। 15 तब
मैं तुम्हें नये शासक दूँगा। वे शासक मेरे भक्त होंगे। वे तुम्हारे मार्ग
दर्शन ज्ञान और समझ से करेंगे। 16 उन दिनों तुम लोग बड़ी संख्या
में देश में होगे।" यह सन्देश यहोवा का है।
"उस समय लोग फिर यह कभी नहीं कहेंगे, 'मैं उन दिनों को याद करता हूँ जब हम लोगों के पास यहोवा का साक्षीपत्र का सन्दूक था।' वे पवित्र सन्दूक के बारे में फिर कभी सोचेंगे भी नहीं। वे न तो इसे याद करेंगे और न ही उसके लिये अफसोस करेंगे। वे दूसरा
पवित्र सन्दूक कभी नहीं बनाएंगे। 17 उस समय, यरूशलेम नगर
'यहोवा का सिंहासन' कहा जाएगा। सभी राष्ट्र एक साथ यरूशलेम
नगर में यहोवा के नाम को सम्मान देने आएंगे। वे अपने हठी और
बुरे हृदय के अनुसार अब कभी नहीं चलेंगे। 18 उन दिनों यहूदा का
परिवार इस्राएल के परिवार के साथ मिल जायेगा। वे उत्तर में एक देश से एक साथ आएंगे। वे उस देश में आएंगे जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दिया था।"
19-20 मैंने अर्थात् यहोवा ने अपने से कहा,

"मैं तुमसे अपने बच्चों का सा व्यवहार करना चाहता हूँ,
मैं तुम्हें एक सुहावना देश देना चाहता हूँ।

वह देश जो किसी भी राष्ट्र से अधिक सुन्दर होगा।
मैंने सोचा था कि तुम मुझे 'पिता' कहोगे।
मैंने सोचा था कि तुम मेरा सदैव अनुसरण करोगे।
किन्तु तुम उस स्त्री की तरह हुए जो पतिव्रता नहीं रही।
इस्राएल के परिवार, तुम मेरे प्रति विश्वासघाती रहे!"
यह सन्देश यहोवा का था।
21 तुम नंगी पहाड़ियों पर रोना सुन सकते हो।
इस्राएल के लोग कृपा के लिये रो रहे और प्रार्थना कर रहे हैं।
वे बहुत बुरे हो गए थे।
वे अपने परमेश्वर यहोवा को भूल गए थे।

22 यहोवा ने यह भी कहा:
"इस्राएल के अविश्वासी लोगों, तुम मेरे पास लौट आओ।
मेरे पास लौटो, और मैं तुम्हारे अविश्वासी होने के अपराध को क्षमा करूँगा।"

लोगों को कहना चाहिये, "हाँ, हम लोग तेरे पास आएँगे
तू हमारा परमेश्वर यहोवा है।
23 पहाड़ियों पर देवमूर्तियों की पूजा मूर्खता थी।
पर्वतों के सभी गरजने वाले दल केवल थोथे निकले।
निश्चय ही इस्राएल की मुक्ति,
यहोवा अपने परमेश्वर से है।
24 हमारे पूर्वजों की हर एक अपनी चीज बलिरूप में उस घृणित ने खाई है।
यह तब हुआ जब हम लोग बच्चे थे।
उस घृणित ने हमारे पूर्वजों के पशु भेड़, पुत्र, पुत्री लिये।
25 हम अपनी लज्जा में गड़ जायँ, अपनी लज्जा को हम कम्बल की तरह अपने को लपेट लेने दें।
हमने अपने परमेश्वर यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।

बचपन से अब तक हमने और हमारे पूर्वजों ने पाप किये हैं।
हमने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा नहीं मानी है।”

4

1 यह सन्देश यहोवा का है।
“इस्राएल, यदि तुम लौट आना चाहो,
तो मेरे पास आओ।
अपनी देव मूर्तियों को फेंको।
मुझसे दूर न भटको।
2 यदि तुम वे काम करोगे तो प्रतिज्ञा करने के लिये मेरे नाम का उपयोग करने योग्य बनोगे, तुम यह कहने योग्य होगे,
‘जैसा कि यहोवा शाश्वत है।’
तुम इन शब्दों का उपयोग सच्चे, ईमानदारी भरे और सही तरीके से करने योग्य बनोगे।
यदि तुम ऐसा करोगे तो राष्ट्र यहोवा द्वारा वरदान पाएगा
और वे यहोवा द्वारा किये गए कामों को गर्व से बखान करेंगे।”

3 यहूदा राष्ट्र के मनुष्यों और यरूशलेम नगर से, यहोवा जो कहता है, वह यह है:

“तुम्हारे खेतों में हर नहीं चले हैं।
खेतों में हल चलाओ।
काँटो में बीज न बोओ।
4 यहोवा के लोग बनो, अपने हृदय को बदलो।
यहूदा के लोगों और यरूशलेम के निवासियों, यदि तुम नहीं बदले, तो मैं बहुत क्रोधित होऊँगा।
मेरा क्रोध आग की तरह फैलेगा और मेरा क्रोध तुम्हें जला देगा
और कोई व्यक्ति उस आग को बुझा नहीं पाएगा।
यह क्यों होगा क्योंकि तुमने बुरे काम किये हैं।”

उत्तर दिशा से विध्वंस
5 यहूदा के लोगों में इस सन्देश की घोषणा करो:
यरूशलेम नगर के हर एक व्यक्ति से कहो, "सारे देश में तुरही बजाओ।"
जोर से चिल्लाओ और कहो,
"एक साथ आओ,
हम सभी रक्षा के लिये दृढ़ नगरों को भाग निकलें।"
6 सिय्योन की ओर सूचक ध्वज उठाओ, अपने जीवन के लिये भागो, प्रतीक्षा न करो।
यह इसलिये करो कि मैं उत्तर से विध्वंस ला रहा हूँ।
मैं भयंकर विनाश ला रहा हूँ।
7 एक सिंह अपनी गुफा से निकला है, राष्ट्रों का विध्वंसक तेज कदम बढ़ाना आरम्भ कर चुका है।
वह तुम्हारे देश को नष्ट करने के लिये अपना घर छोड़ चुका है।
तुम्हारे नगर ध्वस्त होंगे।
उनमें रहने वाला कोई व्यक्ति नहीं बचेगा।
8 अत: टाट के कपड़े पहनो, रोओ,
क्यों क्योंकि यहोवा हम पर बहुत क्रोधित है।
9 यह सन्देश यहोवा का है, "ऐसे समय यह होता है।
राजा और प्रमुख साहस खो बैंठेंगे,
याजक डरेंगे,
नबियों का दिल दहलेगा।"

10 तब मैंने अर्थात् यिर्मयाह ने कहा, "मेरे स्वामी यहोवा, तूने
सचमुच यहूदा और यरूशलेम के लोगों को धोखे में रखा है। तूने
उनसे कहा, 'तुम शान्तिपूर्वक रहोगे।' किन्तु अब उनके गले तर
तलवार खिंची हुई है।"

11 उस समय एक सन्देश यहूदा और यरूशलेम के लोगों को दिया
जाएगा:
“नंगी पहाड़ियों से गरम आँधी चल रही है।
यह मरुभूमि से मेरे लोगों की ओर आ रही है।
यह वह मन्द हवा नहीं जिसका उपयोग किसान भूसे से अन्न
निकालने के लिये करते हैं।
12 यह उससे अधिक तेज हवा है और मुझसे आ रही है।
अब मैं यहूदा के लोगों के विरुद्ध अपने न्याय की घोषणा
करूँगा।”
13 देखो! शत्रु मेघ की तरह उठ रहा है, उसके रथ चक्रवात के समान
है।
उसके घोड़े उकाब से तेज हैं। यह हम सब के लिये बुरा होगा,
हम बरबाद हो जाएंगे।
14 यरूशलेम के लोगों, अपने हृदय से बुराइयों को धो डालो।
अपने हृदयों को पवित्र करो, जिससे तुम बच सको। बुरी
योजनायें मत बनाते चलो।
15 दान देश के दूत की वाणी, जो वह बोलता है, ध्यान से सुनो।
कोई एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश से बुरी खबर ला रहा है।
16 “इस राष्ट्र को इसका विवरण दो।
यरूशलेम के लोगों में इस खबर को फैलाओ।
शत्रु दूर देश से आ रहे हैं। वे शत्रु यहूदा के नगरों के विरुद्ध युद्ध–
उद्घोष कर रहे हैं।
17 शत्रुओं ने यरूशलेम को ऐसे घेरा है जैसे खेत की रक्षा करने वाले
लोग हो।
यहूदा, तुम मेरे विरुद्ध गए, अत: तुम्हारे विरुद्ध शत्रु आ रहे हैं!”
यह सन्देश यहोवा का है!

18 “जिस प्रकार तुम रहे और तुमने पाप किया उसी से तुम पर यह
विपत्ति आई।

यह तुम्हारे पाप ही हैं जिसने जीवन को इतना कठिन बनाया
है।
यह तुम्हारा पाप ही है जो उस पीड़ा को लाया जो तुम्हारे हृदय को
बेधती है।"

यिर्मयाह का रुंदन

19 आह, मेरा दुःख और मेरी परेशानी मेरे पेट में दर्द कर रही हैं।
मेरा हृदय धड़क रहा है।
हाय, मैं इतना भयभीत हूँ।
मेरा हृदय मेरे भीतर तड़प रहा है।
मैं चुप नहीं बैठ सकता। क्यों क्योंकि मैंने तुरही का बजना सुना है।
तुरही सेना को युद्ध के लिये बुला रही है।
20 ध्वंस के पीछे विध्वंस आता है। पूरा देश नष्ट हो गया है।
अचानक मेरे डेरे नष्ट कर दिये गये हैं, मेरे परदे फाड़ दिये गए
हैं।
21 हे यहोवा, मैं कब तक युद्ध पताकायें देखुँगा युद्ध की तुरही को
कितने समय सुनूँगा

22 परमेश्वर ने कहा, "मेरे लोग मूर्ख हैं। वे मुझे नहीं जानते।
वे बेवकूफ बच्चे हैं।
वे समझते नहीं। वे पाप करने में दक्ष हैं, किन्तु वे अच्छा करना नहीं
जानते।"
विनाश आ रहा है

23 मैंने धरती को देखा।
धरती खाली थी, इस पर कुछ नहीं था।
मैंने गगन को देखा, और इसका प्रकाश चला गया था।
24 मैंने पर्वतों पर नजर डाली और वे काँप रहे थे। सभी पहाड़ियाँ
लड़खड़ा रही थीं।

25 मैंने ध्यान से देखा, किन्तु कोई मनुष्य नहीं था, आकाश के सभी
पक्षी उड़ गए थे।
26 मैंने देखा कि सुहावना प्रदेश मरुभूमि बन गया था।
उस देश के सभी नगर नष्ट कर दिये गये थे। यहोवा ने यह कराया।
यहोवा और उसके प्रचण्ड क्रोध ने यह कराया।

27 यहोवा ये बातें कहता है: "पूरा देश बरबाद हो जाएगा।
(किन्तु मैं देश को पूरी तरह नष्ट नहीं करूँगा।)
28 अत: इस देश के लोग मेरे लोगों के लिये रोयेंगे।
आकाश अँधकारपूर्ण होगा।
मैंने कह दिया है, और बदलूँगा नहीं।
मैंने एक निर्णय किया है, और मैं अपना विचार नहीं बदलूँगा।"

29 यहूदा के लोग घुड़सवारों और धनुर्धारियों का उद्घोष सुनेंगे,
और लोग भाग जायेंगे।
कुछ लोग गुफाओं में छिपेंगे कुछ झाड़ियों में तथा कुछ चट्टानों पर चढ़ जाएंगे।
यहूदा के सभी नगर खाली हैं।
उनमें कोई नहीं रहता।

30 हे यहूदा, तुम नष्ट कर दिये गये हो, तुम क्या कर रहे हो तुम अपने
सुन्दरतम लाल वस्त्र क्यों पहनते हो
तुम अपने सोने के आभूषण क्यों पहने हो तुम अपनी आँखों में अन्जन क्यों लगाते हो।
तुम अपने को सुन्दर बनाते हो, किन्तु यह सब व्यर्थ है।
तुम्हारे प्रेमी तुमसे घृणा करते हैं, वे मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं।

31 मैं एक चीख सुनता हूँ जो उस स्त्री की चीख की तरह है जो बच्चा
जन्म रही हो।
यह चीख उस स्त्री की तरह है जो प्रथम बच्चे को जन्म रही
हो।
यह सिय्योन की पुत्री की चीख है।
वह अपने हाथ प्रार्थना में यह कहते हुए उठा रही है, "आह!
मैं मूर्छित होने वाली हूँ, हत्यारे मेरे चारों ओर हैं!"

5

यहूदा के लोगों के पाप

1 यहोवा कहता है, "यरूशलेम की सड़कों पर ऊपर नीचे जाओ।
चारों ओर देखो और इन चीजों के बारे में सोचो। नगर के सार्वजनिक
चौराहो को खोजो, पता करो कि क्या तुम किसी एक अच्छे व्यक्ति
को पा सकते हो, ऐसे व्यक्ति को जो ईमानदारी से काम करता हो,
ऐसा जो सत्य की खोज करता हो। यदि तुम एक अच्छे व्यक्ति को
ढूँढ निकालोगे तो मैं यरूशलेम को क्षमा कर दूँगा! 2 लोग प्रतिज्ञा
करते हैं और कहते हैं, 'जैसा कि यहोवा शाश्वत है।' किन्तु वे सच्चाई
से यही तात्पर्य नहीं रखते।"

3 हे यहोवा, मैं जानता हूँ कि तू लोगों में सच्चाई देखना चाहता है।
तूने यहूदा के लोगों को चोट पहुँचाई, किन्तु उन्होंने किसी
पीड़ा का अनुभव नहीं किया।
तूने उन्हें नष्ट किया, किन्तु उन्होंने अपना सबक सीखने से इन्करा
कर दिया।
वे बहुत हठी हो गए।
उन्होंने अपने पापों के लिये पछताने से इन्कार कर दिया।
4 किन्तु मैं (यिर्मयाह) ने अपने से कहा,
"वे केवल गरीब लोग ही है जो उतने मूर्ख हैं।

ये वही लोग हैं जो यहोवा के मार्ग को नहीं सीख सके!
गरीब लोग अपने परमेश्वर की शिक्षा को नहीं जानते।
5 इसलिये मैं यहूदा के लोगों के प्रमुखों के पास जाऊँगा।
मैं उनसे बातें करूँगा।
निश्चय ही प्रमुख यहोवा के मार्ग को समझते हैं।
मुझे विश्वास है कि वे अपने परमेश्वर के नियमों को जानते हैं।"
किन्तु सभी प्रमुख यहोवा की सेवा करने से इन्कार करने में एक साथ हो गए।
6 वे परमेश्वर के विरुद्ध हुए, अत: जंगल का एक सिंह उन पर आक्रमण करेगा।
मरुभूमि में एक भेड़िया उन्हें मार डालेगा।
एक तेंदुआ उनके नगरों के पास घात लगाये है।
नगरों के बाहर जाने वाले किसी को भी तेंदुआ टुकड़ों में चीर डालेगा।
यह होगा, क्यैं कि यहूदा के लोगों ने बार—बार पाप किये हैं।
वे कई बार यहोवा से दूर भटक गए हैं।
7 परमेश्वर ने कहा, "यहूदा, मुझे कारण बताओ कि मुझे तुमको क्षमा क्यों कर देना चाहिये तुम्हारी सन्तानों ने मुछे त्याग दिया है।
उन्होंने उन देवमूर्तियों से प्रतिज्ञा की है जो परमेश्वर हैं ही नहीं।
मैंने तुम्हारी सन्तानों को हर एक चीज़ दी जिसकी जरुरत उन्हें थी।
किन्तु फिर भी वे विश्वासघाती रहे!
उन्होंने वेश्यालयों में बहुत समय बिताया।
8 वे उन घोड़ों जैसे रहे जिन्हें बहुत खाने को है, और जो जोड़ा बनाने को हो।
वे उन घोड़ों जैसे रहे जो पड़ोसी कीर् पॅत्नयों पर हिन हिना रहे हैं।

9 क्या मुझे यहूदा के लोगों को ये काम करने के कारण, दण्ड देना चाहिए यह सन्देश यहोवा का है।
हाँ! तुम जानते हो कि मुझे इस प्रकार के राष्ट्र को दण्ड देना चाहिये।
मुझे उन्हें वह दण्ड देना चाहिए जिसके वे पात्र हैं।
10 यहूदा की अंगूर की बेलों की कतारों के सहारे से निकलो।
बेलों को काट डालो। (किन्तु उन्हें पूरी तरह नष्ट न करो।)
उनकी सारी शाखायें छाँट दो क्योंकि ये शाखाये यहोवा की नहीं हैं।
11 इस्राएल और यहूदा के परिवार हर प्रकार से मेरे विश्वासघाती रहे हैं।"
यह सन्देश यहोवा के यहाँ से है।

12 "उन लोगों ने यहोवा के बारे में झूठ कहा है।
उन्होंने कहा है, 'यहोवा हमारा कुछ नहीं करेगा।
हम लोगों का कुछ भी बुरा न होगा।
हम किसी सेना का आक्रमण अपने ऊपर नहीं देखेंगे।
हम कभी भूखों नहीं मरेंगे।'
13 झूठे नबी मरे प्राण हैं।
परमेश्वर का सन्देश उनमें नहीं उतरा है।
विपत्तियाँ उन पर आयेंगी।"

14 सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा ने यह सब कहा, "उन लोगों ने कहा कि मैं उन्हें दण्ड नहीं दूँगा।
अत: यिर्मयाह, जो सन्देश मैं तुझे दे रहा हूँ, वह आग जैसा होगा और वे लोग लकड़ी जैसे होंगे।
आग सारी लकड़ी जला डालेगी।"
15 इस्राएल के परिवार, यह सन्देश यहोवा का है, "तुम पर आक्रमण के लिये मैं एक राष्ट्र को बहुत दूर से जल्दी ही लाऊँगा।

यह एक पुराना राष्ट्र है।
यह एक प्राचीन राष्ट्र है।
उस राष्ट्र के लोग वह भाषा बोलते हैं जिसे तुम नहीं समझते।
तुम नहीं समझ सकते कि वे क्या कहते हैं
16 उनके तरकश खुली कब्र हैं, उनके सभी लोग वीर सैनिक हैं।
17 वे सैनिक तुम्हारी घर लाई फसल को खा जाएंगे।
वे तुम्हारा सारा भोजन खा जाएंगे।
वे तुम्हारे पुत्र—पुत्रियों को खा जाएंगे (नष्ट कर देंगे) वे तुम्हारे रेवड़ और पशु झुण्ड को चट कर जाएंगे।
वे तुम्हारे अंगूर और अंजीर को चाट जाएंगे।
वे तुम्हारे दृढ़ नगरों को अपनी तलवारों से नष्ट कर डालेंगे।
जिन नगरों पर तुम्हारा विश्वास है उन्हें वे नष्ट कर देंगे।”

18 यह सन्देश यहोवा का है:
“किन्तु कब वे भयैंनक दिन आते हैं,
यहूदा मैं तुझे पूरी तरह नष्ट नहीं करूँगा।
19 यहूदा के लोग तुमसे पूछेंगे,
‘यिर्मयाह, हमारे परमेश्वर यहोवा ने हमारा ऐसा बुरा क्यों किया?’
उन्हें यह उत्तर दो,
‘यहूदा के लोगों, तुमने यहोवा को त्याग दिया है,
और तुमने अपने ही देश में विदेशी देव मूर्तियों की पूजा की है।
तुमने वे काम किये,
अत: तुम अब उस देश में जो तुम्हारा नहीं है, विदेशियों की सेवा करोगे।’

20 यहोवा ने कहा, “याकूब के परिवार में, इस सन्देश की घोषणा करो।

इस सन्देश को यहूदा राष्ट्र में सुनाओ।
21 इस सन्देश को सुनो,
तुम मूर्ख लोगों, तुम्हें समझ नहीं हैं:
तुम लोगों की आँखें है, किन्तु तुम देखते नहीं!
तुम लोगों के कान हैं, किन्तु तुम सनते नहीं!
22 निश्चय ही तुम मुझसे भयभीत हो।”
यह सन्देश यहोवा का है।
“मेरे सामने तुम्हें भय से काँपना चाहिये।
मैं ही वह हूँ, जिसने समुद्र तटों को समुद्र की मर्यादा बनाई।
मैंने बालू की ऐसी सीमा बनाई जिसे पानी तोड़ नहीं सकती।
तरंगे तट को कुचल सकती हैं, किन्तु वे इसे नष्ट नहीं करेंगी।
चढ़ती हुई तरंगे गरज सकती हैं, किन्तु वे तट की मर्यादा तोड़ नहीं सकती।
23 किन्तु यहूदा के लोग हठी हैं।
वे हमेशा मेरे विरुद्ध जाने की योजना बनाते हैं।
वे मुझसे मुड़े हैं और मुझसे दूर चले गए हैं।
24 यहूदा के लोग कभी अपने से नहीं कहते, “हमें अपने परमेश्वर यहोवा से डरना
और उसका सम्मान करना चाहिए।
वह हमे ठीक समय पर पतझड़ और बसन्त की वर्षा देता है।
वे यह निश्चित करता है कि हम ठीक समय पर फसल काट सकें।”
25 यहूदा के लोगों, तुमने अपराध किया है। अत: वर्षा और पकी फसल नहीं आई।
तुम्हारे पापों ने तुम्हें यहोवा की उन अच्छी चीज़ों का भोग नहीं करने दिया है।
26 मेरे लोगों के बीच पापी लोग हैं।
वे पापी लोग पक्षियों को फँसाने के लिये जाल बनाने वालों के समान हैं।

वे लोग अपना जाल बिछाते हैं, किन्तु वे पक्षी के बदले मनुष्यों को
फँसाते हैं।
27 इन व्यक्तियों के घर झूठ से वैसे भरे होते हैं, जैसे चिड़ियों से भरे
पिंजरे हों।
उनके झूठ ने उन्हें धनी और शक्तिशाली बनाया है।
28 जिन पापों को उन्होंने किया है उन्ही से वे बड़े और मोटे हुए हैं।
जिन बुरे कामों को वे करते हैं उनका कोई अन्त नहीं।
वे अनाथ बच्चों के मामले के पक्ष में बहस नहीं करेंगे, वे अनाथों की
सहायता नहीं करेंगे।
वे गरीब लोगों को उचित न्याय नहीं पानें देंगे।
29 क्या मुझे इन कामों के करने के कारण यहूदा को दण्ड देना
चाहिये?"
यह सन्देश यहोवा का है।
"तुम जानते हो कि मुझे ऐसे राष्ट्र को दण्ड देना चाहिये।
मुझे उन्हें वह दण्ड देना चाहिए जो उन्हें मिलना चाहिए।

30 यहोवा कहता है, "यहूदा देश में एक भयानक और दिल दहलाने
वाली घटना घट रही है।
जो हुआ है वह यह है कि:
31 नबी झूठ बोलते हैं,
याजक अपने हाथ में शक्ति लेते हैं।
मेरे लोग इसी तरह खुश हैं।
किन्तु लोगों, तुम क्या करोगे
जब दण्ड दिया जायेगा

6

शत्रु द्वारा यरूशलेम का घेराव

1 "बिन्यामीन के लोगों, अपनी जान लेकर भागो,
यरूशलेम नगर से भाग चलो!

युद्ध की तुरही तकोआ नगर में बजाओ!
बेथक्केरेम नगर में खतरे का झण्डा लगाओ!
ये काम करो क्योंकि उत्तर की ओर से विपत्ति आ रही है।
तुम पर भयंकर विनाश आ रहा है।
2 सिय्योन की पुत्री,
तुम एक सुन्दर चरागाह के समान हो।
3 गडेरिये यरूशलेम आते हैं, और वे अपनी रेवड़ लाते हैं।
वे उसके चारों ओर अपने डेरे डालते हैं।
हर एक गडेरिया अपनी रेवड़ की रक्षा करता है।

4 "यरूशलेम नगर के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार हो जाओ!
उठो, हम लोग दोपहर को नगर पर आक्रमण करेंगे, किन्तु पहले ही देर हो चुकी है।
संध्या की छाया लम्बी हो रही है,
5 अत: उठो! हम नगर पर रात में आक्रमण करेंगे!
हम यरूशलेम के दृढ़ रक्षा—साधनों को नष्ट करेंगे।"

6 सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यही है:
"यरूशलेम के चारों ओर के पेड़ों को काट डालो
और यरूशलेम के विरुद्ध घेरा डालने का टीला बनाओ।
इस नगर को दण्ड मिलना चाहिये।"
इस नगर के भीतर दमन करने के अतिरिक्त कुछ नहीं है।
7 जैसे कुँआ अपना पानी स्वच्छ रखता है उसी प्रकार यरूशलेम अपनी दुष्टता को नया बनाये रखता है।
इस नगर में हिंसा और विध्वंस सुना जाता हैं।
मैं सदैव यरूशलेम की बीमारी और चोटों को देख सकता हूँ।
8 यरूशलेम, इस चेतावनी को सुनो।
यदि तुम नहीं सुनोगे तो मैं अपनी पीठ तुम्हारी ओर कर लूँगा।
मैं तुम्हारे प्रदेश को सूनी मरुभूमि कर दूँगा।

कोई भी व्यक्ति वहाँ नहीं रह पायेगा।"
9 सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है:
"उन इस्राएल के लोगों को इकट्ठा करो जो अपने देश में बच गए थे।
उन्हें इस प्रकार इकट्ठे करो, जैसे तुम अंगूर की बेल से आखिरी अंगूर इकट्ठे करते हो।
अंगूर इकट्ठे करने वाले की तरह हर एक बेल की जाँच करो।"
10 मैं किससे बात करूँ?
मैं किसे चेतावनी दे सकता हूँ?
मेरी कौन सुनेगा?
इस्राएल के लोगों ने अपने कानो को बन्द किया है।
अत: वे मेरी चेतावनी सुन नहीं सकते।
लोग यहोवा की शिक्षा पसन्द नहीं करते।
वे यहोवा का सन्देश सुनना नहीं चाहते।
11 किन्तु मैं (यिर्मयाह) यहोवा के क्रोध से भरा हूँ।
मैं इसे रोकते—रोकते थक गया हूँ।
"सड़क पर खेलते बच्चों पर यहोवा का क्रोध उंडेलो।
एक साथ एकत्रित युवकों पर इसे उंडेलो।
पति और उसकी पत्नी दोनों पकड़े जाएंगे।
बूढ़े और अति बूढ़े लोग पकड़े जाएंगे।
12 उनके घर दूसरे लोगों को दे दिए जाएंगे।
उनके खेत और उनकी पत्नियाँ दूसरों को दे दी जाएंगी।
मैं अपने हाथ उठाऊँगा और यहूदा देश के लोगों को दण्ड दूँगा।"
यह सन्देश यहोवा का था।

13 "इस्राएल के सभी लोग धन और अधिक धन चाहते हैं।
छोटे से लेकर बड़े तक सभी लालची हैं।
यहाँ तक कि याजक और नबी झूठ पर जीते हैं।
14 मेरे लोग बहुत बुरी तरह चोट खाये हुये हैं।

नबी और याजक मेरे लोगों के घाव भरने का प्रयत्न ऐसे करते हैं, मानों वे छोटे से घाव हों।
वे कहते हैं, 'यह बहुत ठीक है, यह बिल्कुल ठीक है।'
किन्तु यह सचमुच ठीक नहीं हुआ है।
15 नबियों और याजकों को उस पर लज्जित होना चाहिये, जो बुरा वे करते हैं।
किन्तु वे तनिक भी लज्जित नहीं।
वे तो अपने पाप पर संकोच करना तक भी नहीं जानते।
अत: वे अन्य हर एक के साथ दण्डित होंगे।
जब मैं दण्ड दूँगा, वे जमीन पर फेंक दिये जायेंगे।"
यह सन्देश यहोवा का है।

16 यहोवा यह सब कहता है:
"चौराहों पर खड़े होओ और देखो।
पता करो कि पुरानी सड़क कहाँ थी।
पता करो कि अच्छी सड़क कहाँ है, और उस सड़क पर चलो।
यदि तुम ऐसा करोगे, तुम्हें आराम मिलेगा! किन्तु तुम लोगों ने कहा है,
"हम अच्छी सड़क पर नहीं चलेंगे!"
17 मैंने तुम्हारी चौकसी के लिये चौकीदार चुने!
मैंने उनसे कहा, 'युद्ध—तुरही की आवाज पर कान रखो।'
किन्तु उन्होंने कहा, 'हम नहीं सुनेंगे!'
18 अत: तुम सभी राष्ट्रों, उन देशों के तुम सभी लोगों, सुनो ध्यान दो!
वह सब सुनो जो मैं यहूदा के लोगों के साथ करूँगा।
19 पृथ्वी के लोगों, यह सुनो:
मैं यहूदा के लोगों पर विपत्ति ढाने जा रहा हूँ।
क्यों क्योंकि उन लोगों ने सभी बुरे कामों की योजनायें बनाई।

यह होगा क्योंकि उन्होंने मेरे सन्देशों की ओर ध्यान नहीं दिया है।
उन लोगों ने मेरे नियमों का पालन करने से इन्कार किया है।

20 यहोवा कहता है, "तुम शबा देश से मुझे सुगन्धि की भेंट क्यों लाते हो
तुम भेंट के रूप में दूर देशों से सुगन्धि क्यों लाते हो
तुम्हारी होमबलि मुझे प्रसन्न नहीं करती।
तुम्हारी बलि मुझे खुश नहीं करती।"
21 अत: यहोवा जो कहता है, वह यह है:
"मैं यहूदा के लोगों के सामने समस्यायें रखूँगा।
वे लोगों को गिराने वाले पत्थर से होंगे।
पिता और पुत्र उन पर ठोकर खाकर गिरेंगे।
मित्र और पड़ोसी मरेंगे।"

22 यहोवा जो कहता है, वह यह है:
"उत्तर के देश से एक सेना आ रही है,
पृथ्वी के दूर स्थानों से एक शक्तिशाली राष्ट्र आ रहा है।
23 सैनिकों के हाथ में धनुष और भाले हैं, वे क्रूर हैं।
वे कृपा करना नहीं जानते।
वे बहुत शक्तिशाली हैं।
वे सागर की तरह गरजते हैं, जब वे अपने घोड़ों पर सवार होते हैं।
वह सेना युद्ध के लिये तैयार होकर आ रही है।
हे सिय्योन की पुत्री, सेना तुम पर आक्रमण करने आ रही हैं।"
24 हमने उस सेना के बारे में सूचना पाई है।
हम भय से असहाय हैं।
हम स्वयं को विपत्तियों के जाल में पड़ा अनुभव करते हैं।

हम वैसे ही कष्ट में हैं जैसे एक स्त्री को प्रसव—वेदना होती है।
25 खेतों में मत जाओ, सड़कों पर मत निकलो।
क्यों क्योंकि शत्रु के हाथों में तलवार है,
क्योंकि खतरा चारों ओर है।
26 हे मेरे लोगों, टाट के वस्त्र पहन लो।
राख में लोट लगा लो।
मरे लोगों के लिए फूट—फूट कर रोओ।
तुम एकमात्र पुत्र के खोने पर रोने सा रोओ।
ये सब करो क्योंकि विनाशक अति शीघ्रता से हमारे विरुद्ध आएंगे।

27 "यिर्मयाह, मैंने (यहोवा ने)
तुम्हें प्रजा की कच्ची धातु का पारखी बनाया है।
तुम हमारे लोगों की जाँच करोगे
और उनके व्यवहार की चौकसी रखोगे।
28 मेरे लोग मेरे विरुद्ध हो गए हैं,
और वे बहुत हठी हैं।
वे लोगों के बारे में बुरी बातें कहते घूमते हैं।
वे उस काँसे और लोहे की तरह हैं जो चकमहीन
और जंग खाये हैं।
29 वे उस श्रमिक की तरह हैं जिसने चाँदी को शुद्ध करने की कोशिश की।
उसकी धोकनी तेज चली, आग भी तेज जली,
किन्तु आग से केवल रांगा निकला।
यह समय की बरबादी थी जो शुद्ध चाँदी बनाने का प्रयत्न किया गया।
ठीक इसी प्रकार मेरे लोगों से बुराई दूर नहीं की जा सकी।
30 मेरे लोग 'खोटी चाँदी' कहे जायेंगे।
उनको यह नाम मिलेगा क्योंकि यहोवा ने उन्हें स्वीकार नहीं किया।"

7

यिर्मयाह का मन्दिर उपदेश

1 यह यहोवा का सन्देश यिर्मयाह के लिये है: 2 यिर्मयाह, यहोवा
के मन्दिर के द्वार के सामने खड़े हो। द्वार पर यह सन्देश घोषित
करो:
" 'यहूदा राष्ट्र के सभी लोगों, यहोवा के यहाँ का सन्देश सुनो।
यहोवा की उपासना करने के लिये तुम सभी लोग जो इन द्वारों
से होकर आए हो इस सन्देश को सुनो। 3 इस्राएल के लोगों का
परमेश्वर यहोवा है। सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है,
अपना जीवन बदलो और अच्छे काम करो। यदि तुम ऐसा करोगे
तो मैं तुम्हें इस स्थान पर रहने दूँगा। 4 इस झूठ पर विश्वास न करो
जो कुछ लोग बोलते हैं। वे कहते हैं, "यह यहोवा का मन्दिर है।
यहोवा का मन्दिर है! यहोवा का मन्दिर है!" 5 यदि तुम अपना
जीवन बदलोगे और अच्छा काम करोगे, तो मैं तुम्हें इस स्थान पर
रहने दूँगा। तुम्हें एक दूसरे के प्रति निष्ठावान होना चाहिए। 6 तुम्हें
अजनबियों के साथ भी निष्ठावान होना चाहिये। तुम्हें विधवा और
अनाथ बच्चों के लिये उचित काम करना चाहिये। निरपराध लोगों
को न मारो। अन्य देवताओं का अनुसरण न करो। क्यों क्योंकि वे
तुम्हारे जीवन को नष्ट कर देंगे। 7 यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन
करोगे तो मैं तुम्हें इस स्थान पर रहने दूँगा। मैंने यह प्रदेश तुम्हारे
पूर्वजों को अपने पास सदैव रखने के लिये दिया।

8 " 'किन्तु तुम झूठ में विश्वास कर रहे हो और वह झूठ व्यर्थ है।
9 क्या तुम चोरी और हत्या करोगे क्या तुम व्यभिचार का पाप करोगे
क्या तुम लोगों पर झूठा आरोप लगाओगे क्या तुम असत्य देवता
बाल की पूजा करोगे और अन्य देवताओं का अनुसरण करोगे जिन्हें
तुम नहीं जानते 10 यदि तुम ये पाप करते हो तो क्या तुम समझते हो
कि तुम उस मन्दिर में मेरे सामने खड़े हो सकते हो जिसे मेरे नाम
से पुकारा जाता हो क्या तुम सोचते हो कि तुम मेरे सामने खड़े हो

सकते हो और कह सकते हो, "हम सुरक्षित हैं" सुरक्षित इसलिये
कि जिससे तुम ये घृणित कार्य कर सको। 11 यह मन्दिर मेरे नाम से
पुकारा जाता है। क्या यह मन्दिर तुम्हारे लिये डकैतों के छिपने के
स्थान के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है मैं तुम्हारी चौकसी रख रहा
हूँ।' " यह सन्देश यहोवा का है।

12 " 'यहूदा के लोगों, तुम अब शीलो नगर को जाओ। उस स्थान
पर जाओ जहाँ मैंने प्रथम बार अपने नाम का मन्दिर बनाया। इस्राएल
के लोगों ने भी पाप कर्म किये। जाओ और देखो कि उस स्थान का
मैंने उन पाप कर्मों के लिये क्या किया जो उन्होंने किये। 13 इस्राएल
के लोगों, तुम लोग ये सब पाप कर्म करते रहे। यह सन्देश यहोवा का
था! "मैंने तुमसे बार—बार बातें कीं, किन्तु तुमने मेरी अनसुनी कर
दी। मैंने तुम लोगों को पुकारा पर तुमने उत्तर नहीं दिया। 14 इसलिये
मैं अपने नाम से पुकारे जाने वाले यरूशलेम के इस मन्दिर को नष्ट
करूँगा। मैं उस मन्दिर को वैसे ही नष्ट करूँगा जैसे मैंने शीलो को
नष्ट किया और यरूशलेम में वह मन्दिर जो मेरे नाम पर हैं, वही
मन्दिर है जिसमें तुम विश्वास करते हो। मैंने उस स्थान को तुम्हें
और तुम्हारे पूर्वजों को दिया। 15 मैं तुम्हें अपने पास से वैसे ही दूर
फेंक दूँगा जैसे मैंने तुम्हारे सभी भाईयों को एप्रैम से फेंका।'

16 "यिर्मयाह, जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम यहूदा के इन लोगों
के लिये प्रार्थना मत करो। न उनके लिये याचना करो और न ही
उनके लिये प्रार्थना। उनकी सहायता के लिये मुझसे प्रार्थना मत
करो। उनके लिये तुम्हारी प्रार्थना को मैं नहीं सुनूँगा। 17 मैं जानता
हूँ कि तुम देख रहे हो कि वे यहूदा के नगर में क्या कर रहे हैं तुम
देख सकते हो कि वे यरूशलेम नगर की सड़कों पर क्या कर रहे हैं
18 यहूदा के लोग जो कर रहे हैं वह यह है: "बच्चे लकड़ियाँ इकट्ठी
करते हैं। पिता लोग उस लकड़ी का उपयोग आग जलाने में करते
हैं। स्त्रियाँ आटा गूँधती हैं और स्वर्ग की रानी की भेंट के लिये
रोटियाँ बनाती हैं। यहूदा के वे लोग अन्य देवताओं की पूजा के

लिये पेय भेंट चढ़ाते हैं। वे मुझे क्रोधित करने के लिये यह करते हैं।
19 किन्तु मैं वह नहीं हूँ जिसे यहूदा के लोग सचमुच चोट पहुँचा रहे
हैं।” यह सन्देश यहोवा का है। “वे केवल अपने को ही चोट पहुँचा
रहे हैं। वे अपने को लज्जा का पात्र बना रहे हैं।”
20 अत: यहोवा यह कहता है: “मैं अपना क्रोध इस स्थान के
विरुद्ध प्रकट करूँगा। मैं लोगों तथा जानवरों को दण्ड दूँगा। मैं
खेत में पेड़ों और उस भूमि में उगनेवाली फसलों को दण्ड दूँगा।
मेरा क्रोध प्रचण्ड अग्नि सा होगा और कोई व्यक्ति उसे रोक नहीं
सकेगा।”

यहोवा बलि की अपेक्षा, अपनी आज्ञा का पालन अधिक चाहता है

21 इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है,
“जाओ और जितनी भी होमबलि और बलि चाहो, भेंट करो। उन
बलियों के माँस स्वयं खाओ। 22 मैं तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र से बाहर
लाया। मैंने उनसे बातें कीं, किन्तु उन्हें कोई आदेश होमबलि और
बलि के विषय में नहीं दिया। 23 मैंने उन्हें केवल यह आदेश दिया,
‘मेरी आज्ञा का पालन करो और मैं तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा तथा तुम
मेरे लोग होगे। जो मैं आदेश देता हूँ वह करो, और तुम्हारे लिए सब
अच्छा होगा।’
24 “किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी एक न सुनी। उन्होंने मुझ पर ध्यान
नहीं दिया। वे हठी रहे और उन्होंने उन कामों को किया जो वे करना
चाहते थे। वे अच्छे न बने। वे पहले से भी अधिक बुरे बने, वे पीछे
को गए, आगे नहीं बढ़े। 25 उस दिन से जिस दिन तुम्हारे पूर्वजों ने
मिस्र छोड़ा आज तक मैंने अपने सेवकों को तुम्हारे पास भेजा है।
मेरे सेवक नबी हैं। मैंने उन्हें तुम्हारे पास बारबार भेजा। 26 किन्तु
तुम्हारे पूर्वजों ने मेरी अनसुनी की। उन्होंने मुझ पर ध्यान नहीं दिया।
वे बहुत हठी रहे, और उन्होंने अपने पूर्वजों से भी बढ़कर बुराईयाँ
कीं।

27 “यिर्मयाह, तुम यहूदा के लोगों से ये बातें कहोगे। किन्तु वे
तुम्हारी एक न सुनेंगे। तुम उनसे बातें करोगे किन्तु वे तुम्हें जवाब
भी नहीं देंगे। 28 इसलिये तुम्हें उनसे ये बातें कहनी चाहियें: यह
वह राष्ट्र है जिसने यहोवा अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन नहीं
किया। इन लोगों ने परमेश्वर की शिक्षाओं को अनसुनी किया। ये
लोग सच्ची शिक्षा नहीं जानते।

हत्या—घाटी

29 “यिर्मयाह, अपने बालों को काट डालो और इसे फेंक दो।
पहाड़ी की नंगी चोटी पर चढ़ो और रोओ चिल्लाओ। क्यों क्योंकि
यहोवा ने इस पीढ़ी के लोगों को दुत्कार दिया है। यहोवा ने इन
लोगों से अपनी पीठ मोड़ ली है और वह क्रोध में इन्हें दण्ड देगा।
30 ये करो क्योंकि मैंने यहूदा के लोगों को पाप करते देखा है।” यह
सन्देश यहोवा का है। “उन्होंने अपनी देवमूर्तियाँ स्थापित की हैं
और मैं उन देवमूर्तियों से घृणा करता हूँ। उन्होंने देवमूर्तियों को उस
मन्दिर में स्थापित किया है जो मेरे नाम से है। उन्होंने मेरे मन्दिर को
“गन्दा” कर दिया है। 31 यहूदा के उन लोगों ने बेन—हिन्नोम घाटी
में तोपेत के उच्च स्थान बनाए हैं। उन स्थानों पर लोग अपने पुत्र—
पुत्रियों को मार डालते थे, वे उन्हें बलि के रूप में जला देते थे।
यह ऐसा है जिसके लिये मैंने कभी आदेश नहीं दिया। इस प्रकार
की बात कभी मेरे मन में आई ही नहीं! 32 अत: मैं तुम्हें चेतावनी
देता हूँ। वे दिन आ रहे हैं।” यह सन्देश यहोवा का है, “जब लोग
इस स्थान को तोपेत या बेन—हिन्नोम की घाटी फिर नहीं कहेंगे।
नहीं, वे इसे हत्याघाटी कहेंगे। वे इसे यह नाम इसलिये देंगे कि वे
तोपेत में इतने व्यक्तियों को दफनायेंगे कि उनके लिये किसी अन्य
को दफनाने की जगह नहीं बचेगी। 33 तब लोगों के शव जमीन के
ऊपर पड़े रहेंगे और आकाश के पक्षियों के भोजन होंगे। उन लोगों
के शरीर को जंगली जानवर खायेंगे। वहाँ उन पक्षियों और जानवरों
को भगाने के लिये कोई व्यक्ति जीवित नहीं बचेगा। 34 मैं आनन्द

और प्रसन्नता के कहकहों को यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर समाप्त कर दूँगा। यहूदा और यरूशलेम में दुल्हन और दुल्हे की हँसी—ठिठोली अब से आगे नहीं सुनाई पड़ेगी। पूरा प्रदेश सूनी मरुभूमि बन जाएगा।”

8

1 यह सन्देश यहोवा का है: “उस समय लोग यहूदा के राजाओं
और प्रमुख शासकों की हड्डियों को उनके कब्रों से निकाल लेंगे।
वे याजकों और नबियों की हड्डियों को उनके कब्रों से ले लेंगे। वे
यरूशलेम के सभी लोगों के कब्रों से हड्डियाँ निकाल लेंगे। 2 वे लोग
उन हड्डियों को सूर्य, चन्द्र और तारों की पूजा के लिये नीचे जमीन पर फैलायेंगे। यरूशलेम के लोग सूर्य, चन्द्र और तारों की पूजा से प्रेम करते हैं। कोई भी व्यक्ति उन हड्डियाँ को इकट्ठा नहीं करेगा और न ही उन्हें फिर दफनायेगा। अत: उन लोगों की हड्डियाँ गोबर की तरह जमीन पर पड़ी रहेंगी।

3 “मैं यहूदा के लोगों को अपना घर और प्रदेश छोड़ने पर विवश करूँगा। लोग विदेशों में ले जाए जाएंगे। यहूदा के वे कुछ लोग जो युद्ध में नहीं मारे जा सके, चाहेंगे कि वे मार डाले गए होते।” यह सन्देश यहोवा का है।

पाप और दण्ड

4 यिर्मयाह, यहूदा के लोगों से यह कहो कि यहोवा यह सब कहता है,

“ ‘तुम यह जानते हो कि जो व्यक्ति गिरता है
वह फिर उठता है।
और यदि कोई व्यक्ति गलत राह पर चलता है
तो वह चारों ओर से घूम कर लौट आता है।
5 यहूदा के लोग गलत राह चले गए हैं।

किन्तु यरूशलेम के वे लोग गलत राह चलते ही क्यों जा रहे हैं
वे अपने झूठ में विश्वास रखते हैं।
वे मुड़ने तथा लौटने से इन्कार करते हैं।
6 मैंने उनको ध्यान से सुना है,
किन्तु वे वह नहीं कहते जो सत्य है।
लोग अपने पाप के लिये पछताते नहीं।
लोग उन बुरे कामों पर विचार नहीं करते जिन्हें उन्होंने किये हैं।
परत्येक अपने मार्ग पर वैसे ही चला जा रहा है।
वे युद्ध में दौड़ते हुए घोड़ों के समान हैं।
7 आकाश के पक्षी भी काम करने का ठीक समय जानते हैं।
सारस, कबूतर, खन्जन और मैना भी जानते हैं
कि कब उनको अपने नये घर में उड़ कर जाना है।
किन्तु मेरे लोग नहीं जानते कि
यहोवा उनसे क्या कराना चाहता है।

8 " 'तुम कहते रहते हो, "हमे यहोवा की शिक्षा मिली है।
अत: हम बुद्धिमान हैं!"
किन्तु यह सत्य नहीं! क्योंकि शास्त्रियों ने अपनी लेखनी से झूठ उगला है।
9 उन "चतुर लोगों" ने यहोवा की शिक्षा अनसुनी की है अत:
सचमुच वे वास्तव में बुद्धिमान लोग नहीं हैं।
वे "चतुर लोग" जाल में फँसाये गए।
वे काँप उठे और लज्जित हुए।
10 अत: मैं उनकी पत्नियों को अन्य लोगों को दूँगा।
मैं उनके खेत को नये मालिकों को दे दूँगा।
इस्राएल के सभी लोग अधिक से अधिक धन चाहते हैं।
छोटे से लेकर बड़े से बड़े सभी लोग उसी तरह के हैं।

सभी लोग नबी से लेकर याजक तक सब झूठ बोलते हैं।
11 नबी और याजक हमारे लोगों के घावों को भरने का प्रयत्न ऐसे करते हैं
मानों वे छोटे से घाव हों।
वे कहते हैं, "यह बिल्कुल ठीक है, यह बिल्कुल ठीक है।"
किन्तु यह बिल्कुल ठीक नहीं।
12 उन लोगों को अपने किये बुरे कामों के लिये लज्जित होना चाहिये।
किन्तु वे बिल्कुल लज्जित नहीं।
उन्हें इतना भी ज्ञान नहीं कि उन्हें अपने पापों के लिये ग्लानि हो सके अत:
वे अन्य सभी के साथ दण्ड पायेंगे।
मैं उन्हें दण्ड दूँगा और जमीन पर फेंक दूँगा।' "
ये बातें यहोवा ने कहीं।
13 " 'मैं उनके फल और फसलें ले लूँगा जिससे उनके यहाँ कोई पकी फसल नहीं होगी।
अंगूर की बेलों में कोई अंगूर नहीं होंगे।
अंजीर के पेड़ों पर कोई अंजीर नहीं होगा।
यहाँ तक कि पत्तियाँ सूखेंगी और मर जाएंगी।
मैं उन चीज़ों को ले लूँगा जिन्हें मैंने उन्हें दे दी थी।' "

14 " 'हम यहाँ खाली क्यों बैठे हैं आओ, दृढ़ नगरों को भाग निकलो।
यदि हमारा परमेश्वर यहोवा हमें मारने ही जा रहा है, तो हम वहीं मरें।
हमने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है अत: परमेश्वर ने हमें पीने को जहरीला पानी दिया है।
15 हम शान्ति की आशा करते थे, किन्तु कुछ भी अच्छा न हो सका।
हम ऐसे समय की आशा करते हैं, जब वह क्षमा कर देगा किन्तु केवल विपत्ति ही आ पड़ी है।
16 दान के परिवार समूह के प्रदेश से

हम शत्रु के घोड़ों के नथनों के फड़फड़ाने की आवाज सुनते
हैं,
उनकी टापों से पृथ्वी काँप उठी है,
वे प्रदेश और इसमें की सारी चीज़ों को नष्ट करने आए है।
वे नगर और इसके निवासी सभी लोगों को जो वहाँ रहते हैं,
नष्ट करने आए हैं।' "

17 "यहूदा के लोगों, मैं तुम्हें डसने को विषैले साँप भेज रहा हूँ।
उन साँपों को सम्मोहित नहीं किया जा सकता।
वे ही साँप तुम्हें डसेंगे।"
यह सन्देश यहोवा का है।

18 परमेश्वर, मैं बहुत दु:खी और भयभीत हूँ।
19 मेरे लोगों की सुन।
इस देश में वे चारों ओर सहायता के लिए पुकार रहे हैं।
वे कहते हैं, "क्या यहोवा अब भी सिय्योन में है?
क्या सिय्योन के राजा अब भी वहाँ है?"

किन्तु परमेश्वर कहता है,
"यहूदा के लोग, अपनी देव मूर्तियों की पूजा करके
मुझे क्रोधित क्यों करते हैं,
उन्होंने अपने व्यर्थ विदेशी देव मूर्तियों की पूजा की है।"
20 लोग कहते हैं,
"फसल काटने का समय गया।
बसन्त गया
और हम बचाये न जा सके।"

21 मेरे लोग बीमार है, अत: मैं बीमार हूँ।
मैं इन बीमार लोगों की चिन्ता में दु:खी और निराश हूँ।
22 निश्चय ही, गिलाद प्रदेश में कुछ दवा है।

निश्चय ही गिलाद प्रदेश में वैद्य है।
तो भी मेरे लोगों के घाव क्यों अच्छे नहीं होते?

9

1 यदि मेरा सिर पानी से भरा होता,
और मेरी आँखें आँसू का झरना होतीं तो मैं अपने नष्ट किये गए
लोगों के लिए दिन रात रोता रहता।

2 यदि मुझे मरुभूमि में रहने का स्थान मिल गया होता
जहाँ किसी घर में यात्री रात बिताते, तो मैं अपने लोगों को छोड़ सकता था।
मैं उन लोगों से दूर चला जा सकता था।
क्यों क्योंकि वे सभी परमेश्वर के विश्वासघाती व व्यभिचारी हो गए हैं, वे सभी उसके विरुद्ध हो रहे हैं।

3 "वे लोग अपनी जीभ का उपयोग धनुष जैसा करते हैं,
उनके मुख से झूठ बाण के समान छूटते हैं।
पूरे देश में सत्य नहीं। झूठ प्रबल हो गया है, वे लोग एक पाप से दूसरे पाप करते जाते हैं।
वे मुझे नहीं जानते।" यहोवा ने ये बातें कहीं।

4 "अपने पड़ोसियों से सतर्क रहो, अपने निज भाइयों पर भी विश्वास न करो।
क्यों क्योंकि हर एक भाई ठग हो गया है।
हर पड़ोसी तुम्हारे पीठ पीछे बात करता है।
5 हर एक व्यक्ति अपने पड़ोसी से झूठ बोलता है।
कोई व्यक्ति सत्य नहीं बोलता।
यहूदा के लोगों ने अपनी जीभ को झूठ बोलने की शिक्षा दी है।

उन्होंने तब तक पाप किये जब तक कि वे इतने थके कि लौट न सकें।
6 एक बुराई के बाद दूसरी बुराई आई।
झूठ के बाद झूठ आया।
लोगों ने मुझको जानने से इन्कार कर दिया।"
यहोवा ने ये बातें कहीं।

7 अत: सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है,
"मैं यहूदा के लोगों की परीक्षा वैसे ही करूँगा
जैसे कोई व्यक्ति आग में तपाकर किसी धातु की परीक्षा करता है।
मेरे पास अन्य विकल्प नहीं है।
मेरे लोगों ने पाप किये हैं।
8 यहूदा के लोगों की जीभ तेज बाणों की तरह हैं।
उनके मुँह से झूठ बरसता है।
हर एक व्यक्ति अपने पड़ोसी से अच्छा बोलता है।
किन्तु वह छिपे अपने पड़ोसी पर आक्रमण करने की योजना बनाता है।
9 क्या मुझे यहूदा के लोगों को इन कामों के करने के लिये दण्ड नहीं देना चाहिए"
यह सन्देश यहोवा का है।
"तुम जानते हो कि मुझे इस प्रकार के लोगों को दण्ड देना चाहिए।
मैं उनको वह दण्ड दूँगा जिसके वे पात्र हैं।"
10 मैं (यिर्मयाह) पर्वतों के लिये फूट फूट कर रोऊँगा।
मैं खाली खेतों के लिये शोकगीत गाऊँगा।
क्यों क्योंकि जीवित वस्तुएँ छीन ली गई।
कोई व्यक्ति वहाँ यात्रा नहीं करता।
उन स्थान पर पशु ध्वनि नहीं सुनाई पड़ सकती।
पक्षी उड़ गए हैं और जानवर चले गए हैं।
11 "मैं (यहोवा) यरूशलेम नगर को कूड़े का ढेर बना दूँगा।

यह गीदड़ों की माँदे बनेगा।
मैं यहूदा देश के नगरों को नष्ट करूँगा अत: वहाँ कोई भी नहीं
रहेगा।”

12 क्या कोई व्यक्ति ऐसा बुद्धिमान है जो इन बातों को समझ सके
क्या कोई ऐसा व्यक्ति है जिसे यहोवा से शिक्षा मिली है क्या कोई
यहोवा के सन्देश की व्य़ाख्य़ा कर सकता है देश क्यों नष्ट हुआ
यह एक सूनी मरुभूमि की तरह क्यों कर दिया गया जहाँ कोई भी
नहीं जाता 13 यहोवा ने इन प्रश्नों का उत्तर दिया। उसने कहा, “यह
इसलिये हुआ कि यहूदा के लोगों ने मेरी शिक्षा पर चलना छोड़
दिया। मैंने उन्हें अपनी शिक्षा दी, किन्तु उन्होंने मेरी सुनने से इन्कार
किया। उन्होंने मेरे उपदेशों का अनुसरण नहीं किया। 14 यहूदा के
लोग अपनी राह चले, वे हठी रहे। उन्होंने असत्य देवता बाल का
अनुसरण किया। उनके पूर्वजों ने उन्हें असत्य देवताओं के अनुसरण
करने की शिक्षा दी।”
15 अत: इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है,
“मैं शीघ्र ही यहूदा के लोगों को कड़वा फल चखाऊँगा। मैं उन्हें
जहरीला पानी पिलाऊँगा। 16 मैं यहूदा के लोगों को अन्य राष्ट्रों में
बिखेर दूँगा। वे अजनबी राष्ट्रों में रहेंगे। उन्होंने और उनके पूर्वजों ने
उन देशों को कभी नहीं जाना। मैं तलवार लिये व्यक्तियों को भेजूँगा।
वे लोग यहूदा के लोगों को मार डालेंगे। वे लोगों को तब तक मारते
जाएंगे जब तक वे समाप्त नहीं हो जाएंगे।”

17 सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है:
“अब इन सबके बारे में सोचो।
अन्त्येष्टि के समय भाड़े पर रोने वाली स्त्रियों को बुलाओ।
उन स्त्रियों को बुलाओ जो विलाप करने में चतुर हों।”
18 लोग कहते हैं,
“उन स्त्रियों को जल्दी से आने और हमारे लिये रोने दो,

तब हमारी आँखे आँसू से भरेंगी
और पानी की धारा हमारी आँखों से फूट पड़ेगी।”
19 “जोर से रोने की आवाजें सिय्योन से सुनी जा रही हैं।
‘हम सचमुच बरबाद हो गए। हम सचमुच लज्जित हैं।
हमें अपने देश को छोड़ देना चाहिये,
क्योंकि हमारे घर नष्ट और बरबाद हो गये हैं।
हमारे घर अब केवल पत्थरों के ढेर हो गये हैं।’ ”

20 यहूदा की स्त्रियों, अब यहोवा का सन्देश सुनो।
यहोवा के मुख से निकले शब्दों को सुनने के लिये अपने कान खोल लो।
यहोवा कहता है अपनी पुत्रियों को जोर से रोना सिखाओ।
हर एक स्त्री को इस शोक गीत को सीख लेना चाहिये:
21 “मृत्यु हमारी खिड़कियों से चढ़कर आ गई है।
मृत्यु हमारे महलों में घुस गई है।
सड़क पर खेलने वाले हमारे बच्चों की मृत्यु आ गई है।
सामाजिक स्थानों में मिलने वाले युवकों की मृत्यु हो गई है।”

22 यिर्मयाह कहो, “जो यहोवा कहता है, ‘वह यह है:
मनुष्यों के शव खेतों में गोबर से पड़े रहेंगे।
उनके शव जमीन पर उस फसल से पड़े रहेंगे जिन्हें किसान ने काट डाला है।
किन्तु उनको इकट्ठा करने वाला कोई नहीं होगा।’ ”

23 यहोवा कहता है,
“बुद्धिमान को अपनी बुद्धिमानी की डींग नहीं मारनी चाहिए।
शक्तिशाली को अपने बल का बखान नहीं करना चाहिए।
सम्पत्तिशाली को अपनी सम्पत्ति की हवा नहीं बांधनी चाहिए।

24 किन्तु यदि कोई डींग मारना ही चाहता है तो उसे इन चीज़ों की
डींग मारने दो:
उसे इस बैंत की डींग मारने दो कि वह मुझे समझता और
जानता है।
उसे इस बात की डींग हाँकने दो कि वह यह समझता है कि मैं
यहोवा हूँ।
उसे इस बात की हवा बांधने दो कि मैं कृपालु और न्यायी हूँ।
उसे इस बात का ढींढोरा पीटने दो कि मैं पृथ्वी पर अच्छे काम
करता हूँ।
मुझे इन कामों को करने से प्रेम है।”
यह सन्देश यहोवा का है।

25 वह समय आ रहा है, यह सन्देश यहोवा का है, “जब मैं उन
लोगों को दण्ड दूँगा जो केवल शरीर से खतना कराये हैं। 26 मैं
मिस्र, यहूदा, एदोम, अम्मोन तथा मोआब के राष्ट्रों और उन सभी
लोगों के बारे में बातें कर रहा हूँ जो मरुभूमि में रहते हैं जो दाढ़ी के
किनारों के बालों को काटते हैं। उन सभी देशों के लोगों ने अपने
शरीर का खतना नहीं करवाया है। किन्तु इस्राएल के परिवार के
लोगों ने हृदय से खतना को नहीं ग्रहण किया है, जैसे कि परमेश्वर
के लोगों को करना चाहिए।”

10

यहोवा और देवमूर्तियाँ

1 इस्राएल के परिवार, यहोवा की सुनो। 2 जो यहोवा कहता है,
वह यह है:

“अन्य राष्ट्रों के लोगों की तरह न रहो।
आकाश के विशेष संकेतों से न डरो।
अन्य राष्ट्र उन संकेतों से डरते हैं जिन्हें वे आकाश में देखते हैं।

किन्तु तुम्हें उन चीज़ों से नहीं डरना चाहिये।
3 अन्य लोगों के रीति रिवाज व्यर्थ हैं।
उनकी देव मूर्तियाँ जंगल की लकड़ी के अतिरिक्त कुछ नहीं।
उनकी देव मूर्तियाँ कारीगर की छैनी से बनी हैं।
4 वे अपनी देव मूर्तियों को सोने चाँदी से सुन्दर बनाते हैं।
वे अपनी देव मूर्तियों को हथौड़े और कील से लटकाते हैं
जिससे वे लटके रहें, गिर न पड़े।
5 अन्य देशों की देव मूर्तियों,
ककड़ी के खेत में खड़े फूस के पुतले के समान हैं।
वे न बोल सकती हैं, और न चल सकती हैं।
उन्हें उठा कर ले जाना पड़ता है क्योंकि वे चल नहीं सकते।
उनसे मत डरो। वे न तो तुमको चोट पहुँचा सकती हैं
और न ही कोई लाभ!"

6 यहोवा तुझ जैसा कोई अन्य नहीं है!
तू महान है! तेरा नाम महान और शक्तिपूर्ण है।
7 परमेश्वर, हर एक व्यक्ति को तेरा सम्मान करना चाहिए।
तू सभी राष्ट्रों का राजा है।
तू उनके सम्मान का पात्र है।
राष्ट्रों में अनेक बुद्धिमान व्यक्ति हैं।
किन्तु कोई व्यक्ति तेरे समान बुद्धिमान नहीं है।

8 अन्य राष्ट्रों के सभी लोग शरारती और मूर्ख हैं।
उनकी शिक्षा निरर्थक लकड़ी की मूर्तियों से मिली है।
9 वे अपनी मूर्तियों को तर्शीश नगर की चाँदी
और उफाज नगर के सोने का उपयोग करके बनाते हैं।
वे देवमूर्तियाँ वढइयों और सुनारो द्वारा बनाई जाती हैं।
वे उन देवमूर्तियों को नीले और बैंगनी वस्त्र पहनाते हैं।

निपुण लोग उन्हें “देवता” बनाते हैं।
10 किन्तु केवल यहोवा ही सच्चा परमेश्वर है।
वह एकमात्र परमेश्वर है जो चेतन है।
वह शाश्वत शासक है।
जब परमेश्वर क्रोध करता है तो धरती काँप जाती है।
राष्ट्रों के लोग उसके क्रोध को रोक नहीं सकते।

11 यहोवा कहता है, “उन लोगों को यह सन्देश दो:
‘उन असत्य देवताओं ने पृथ्वी और स्वर्ग नहीं बनाए
और वे असत्य देवता नष्ट कर दिए जाएंगे,
और पृथ्वी और स्वर्ग से लुप्त हो जाएंगे।’ ”

12 वह परमेश्वर एक ही है जिसने अपनी शक्ति से पृथ्वी बनाई।
परमेश्वर ने अपने बुद्धि का उपयोग किया
और संसार की रचना कर डाली।
अपनी समझ के अनुसार परमेश्वर ने पृथ्वी के ऊपर आकाश को फैलाया।
13 परमेश्वर कड़कती बिजली बनाता है
और वह आकाश से बड़े जल की बाढ़ को गिराता है।
वह पृथ्वी के हर एक स्थान पर,
आकाश में मेघों को उठाता है।
वह बिजली को वर्षा के साथ भेजता है।
वह अपने गोदामों से पवन को निकालता है।

14 लोग इतने बेवकूफ हैं!
सुनार उन देवमूर्तियों से मूर्ख बनाए गये हैं
जिन्हें उन्होंने स्वयं बनाया है।
ये मूर्तियाँ झूठ के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं, वे निष्क्रिय हैं।
15 वे देवमूर्तियाँ किसी काम की नहीं।
वे कुछ ऐसी हैं जिनका मजाक उड़ाया जा सके।

न्याय का समय आने पर वे देवमूर्तियाँ नष्ट कर दी जाएंगी।
16 किन्तु याकूब का परमेश्वर उन देवमूर्तियों के समान नहीं है।
परमेश्वर ने सभी वस्तुओं की सृष्टि की,
और इस्राएल वह परिवार है जिसे परमेश्वर ने अपने लोग के रूप में चुना।
परमेश्वर का नाम "सर्वशक्तिमान यहोवा" है।

विनाश आ रहा है

17 अपनी सभी चीज़ें लो और जाने को तैयार हो जाओ।
यहूदा के लोगों, तुम नगर में पकड़ लिये गए हो
और शत्रु ने इसका घेरा डाल लिया है।
18 यहोवा कहता है,
"इस समय मैं यहूदा के लोगों को इस देश से बाहर फेंक दूँगा।
मैं उन्हें पीड़ा और परेशानी दूँगा।
मैं ऐसा करूँगा जिससे वे सबक सीख सकें।"

19 ओह, मैं (यिर्मयाह) बुरी तरह घायल हूँ।
घायल हूँ और मैं अच्छा नहीं हो सकता।
तो भी मैंने स्वयं से कहा, "यह मेरी बीमारी है,
मुझे इससे पीड़ित होना चाहिये।"
20 मेरा डेरा बरबाद हो गया।
डेरे की सारी रस्सियाँ टूट गई हैं।
मेरे बच्चे मुझे छोड़ गये।
वे चले गये।
कोई व्यक्ति मेरा डेरा लगाने को नहीं बचा है।
कोई व्यक्ति मेरे लिये शरण स्थल बनाने को नहीं बचा है।
21 गडेरिये (प्रमुख) मूर्ख हैं।
वे यहोवा को प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं करते।
वे बुद्धिमान नहीं है,
अत: उनकी रेवड़ें (लोग) बिखर गई और नष्ट हो गई हैं।

22 ध्यान से सुनो! एक कोलाहल!
कोलाहल उत्तर से आ रहा है।
यह यहूदा के नगरों को नष्ट कर देगा।
यहूदा एक सूनी मरुभूमि बन जायेगा।
यह गीदड़ों की माँद बन जायेगा।

23 हे यहोवा, मैं जानता हूँ कि व्यक्ति सचमुच अपनी
जिन्दगी का मालिक नहीं है।
लोग सचमुच अपने भविष्य की योजना नहीं बना सकते हैं।
लोग सचमुच नहीं जानते कि कैसे ठीक जीवित रहा जाये।
24 हे यहोवा, हमें सुधार! किन्तु न्यायी बन!
क्रोध में हमे दण्ड न दे! अन्यथा तू हमें नष्ट कर देगा!
25 यदि तू क्रोधित है तो अन्य राष्ट्रों को दण्ड दे।
वे, न तुझको जानते हैं न ही तेरा सम्मान करते हैं।
वे लोग तेरी आराधना नहीं करते।
उन राष्ट्रों ने याकूब के परिवार को नष्ट किया।
उन्होंने इस्राएल को पूरी तरह नष्ट कर दिया।
उन्होंने इस्राएल की जन्मभूमि को नष्ट किया।

11

वाचा टूटी

1 यह वह सन्देश है जो यिर्मयाह को मिला। यहोवा का यह सन्देश
आया: 2 "यिर्मयाह इस वाचा के शब्दों को सुनो। इन बातों के विषय
में यहूदा के लोगों से कहो। ये बातें यरूशलेम में रहने वाले लोगों से
कहो। 3 यह वह है, जो इस्राएल का परमेश्वर यहोवा कहता है, 'जो
व्यक्ति इस वाचा का पालन नहीं करेगा उस पर विपत्ति आएगी।
4 मैं उस वाचा के बारे में कह रहा हूँ जिसे मैंने तुम्हारे पूर्वजों के साथ
की। मैंने वह वाचा उनके साथ तब की जब मैं उन्हें मिस्र से बाहर

लाया। मिस्र अनेक मुसीबतों की जगह थी यह लोहे को पिघला देने वाली गर्म भट्ठी की तरह थी।' मैंने उन लोगों से कहा, 'मेरी आज्ञा मानो और वह सब करो जिसका मैं तुम्हें आदेश दूँ। यदि तुम यह करोगे तो तुम मेरे लोग रहोगे और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा।'

5 "मैंने यह तुम्हारे पूर्वजों को दिये गये वचन को पूरा करने के लिये किया। मैंने उन्हें बहुत उपजाऊ भूमि देने की प्रतिज्ञा की, ऐसी भूमि जिसमें दूध और शहद की नदी बहती हो और आज तुम उस देश में रह रहे हो।"

मैं (यिर्मयाह) ने उत्तर दिया, "यहोवा, आमीन।"

6 यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, इस सन्देश की शिक्षा यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों पर दो। सन्देश यह है, 'इस
वाचा की बातों को सुनो और तब उन नियमों का पालन करो। 7 मैंने
तुम्हारे पूर्वजों को मिस्र देश से बाहर लाने के समय एक चेतावनी दी थी। मैंने बार बार ठीक इसी दिन तक उन्हें चेतावनी दी। मैंने उनसे
अपनी आज्ञा का पालन करने के लिये कहा। 8 किन्तु तुम्हारे पूर्वजों
ने मेरी एक न सुनी। वे हठी थे और वही किया जो उनके अपने बुरे हृदय ने चाहा। वाचा में यह कहा गया है कि यदि वे आज्ञा का पालन नहीं करेंगे तो विपत्तियाँ आएंगे। अत: मैंने उन सभी विपत्तियों को उन पर आने दिया। मैंने उन्हें वाचा को मानने का आदेश दिया, किन्तु उन्होंने नहीं माना।' "

9 यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, मैं जानता हूँ कि यहूदा के
लोगों और यरूशलेम के निवासियों ने गुप्त योजनायें बना रखी हैं।
10 वे लोग वैसे ही पाप कर रहे हैं जिन्हें उनके पूर्वजों ने किया था। उनके पूर्वजों ने मेरे सन्देश को सुनने से इन्कार किया। उन्होंने अन्य देवताओं का अनुसरण किया और उन्हें पूजा। इस्राएल के परिवार और यहूदा के परिवार ने उस वाचा को तोड़ा है जिसे मैंने उनके पूर्वजों के साथ की थी।"

11 अत: यहोवा कहता है: “मैं यहूदा के लोगों पर शीघ्र ही भयंकर
विपत्ति ढाऊँगा। वे बचकर भाग नहीं पाएंगे और वे सहायता के लिये
मुझे पुकारेंगे। किन्तु मैं उनकी एक न सुनूँगा। 12 यहूदा के नगरों के
लोग और यरूशलेम नगर के लोग जाएंगे और अपनी देवमूर्तियों के
प्रार्थना करेंगे। वे लोग उन देवमूर्तियों को सुगन्धि धूप जलाते हैं।
किन्तु वे देवमूर्तियाँ यहूदा के लोगों की सहायता नहीं कर पाएंगी
जब वह भयंकर विपत्ति का समय आयेगा।

13 “यहूदा के लोगों, तुम्हारे पास बहुत सी देवमूर्तियाँ हैं, वहाँ
उतनी देवमूर्तियाँ हैं जितने यहूदा में नगर हैं। तुमने उस घृणित बाल
की पूजा के लिये बहुत सी वेदियाँ बना रखी हैं यरूशलेम में जितनी
सड़के हैं उतनी ही वेदियाँ हैं।

14 “यिर्मयाह, जहाँ तक तुम्हारी बात है, यहूदा के इन लोगों के
लिये प्रार्थना न करो। उनके लिये याचना न करो। उनके लिये
प्रार्थनायें न करो। मैं सुनूँगा नहीं। वे लोग कष्ट उठायेंगे और तब
वे मुझे सहायता के लिये पुकारेंगे। किन्तु मैं सुनूँगा नहीं।

15 “मेरी प्रिया (यहूदा) मेरे घर (मन्दिर)
में क्यों है उसे वहाँ रहने का अधिकार नहीं है।
उसने बहुत से बुरे काम किये हैं,
यहूदा, क्या तुम सोचती हो कि विशेष प्रतिज्ञायें
और पशु बलि तुम्हें नष्ट होने से बचा लेंगी
क्या तुम आशा करती हो कि तुम मुझे बलि भेंट करके दण्ड पाने से बच जाओगी
16 यहोवा ने तुम्हें एक नाम दिया था।
उन्होंने तुम्हें कहा, “हरा भरा जैतून वृक्ष कहा था जिसकी सुन्दरता देखने योग्य है।”
किन्तु एक प्रबल आँधी के गरज के साथ, यहोवा उस वृक्ष में आग लगा देगा

और इसकी शाखायें जल जाएंगी।
17 सर्वशक्तिमान यहोवा ने तुमको रोपा,
और उसने यह घोषणा की है कि तुम पर बरबादी आएगी।
क्यों क्योंकि इस्राएल के परिवार
और यहूदा के परिवार ने बुरे काम किये हैं।
उन्होंने बाल को बलि भेंट करके
मुझको क्रोधित किया है!

यिर्मयाह के विरुद्ध बुरी योजनाएं

18 यहोवा ने मुझे दिखाया कि अनातोत के व्यक्ति मेरे विरुद्ध
षडयन्त्र कर रहे हैं। यहोवा ने मुझे वह सब दिखाया जो वे कर
रहे थे। अत: मैंने जाना कि वे मेरे विरुद्ध थे। 19 जब यहोवा ने मुझे
दिखाया कि लोग मेरे विरुद्ध हैं इसके पहले मैं उस भोले मेमने के
समान था जो काट दिये जाने की प्रतीक्षा में हो। मैं नहीं समझता था
कि वे मेरे विरुद्ध हैं। वे मेरे बारे में यह कह रहे थे: "आओ, हम लोग
पेड़ और उसके फल को नष्ट कर दें। आओ हम उसे मार डालें। तब
लोग उसे भूल जाएंगे।" 20 किन्तु यहोवा तू एक न्यायी न्यायाधीश
है। तू लोगों के हृदय और मन की परीक्षा करना जानता है। मैं अपने
तक्रों को तेरे सामने प्रस्तुत करूँगा और मैं तुझको उन्हें दण्ड देने
को कहूँगा जिसके वे पात्र हैं।

21 अनातोत के लोग यिर्मयाह को मार डालने की योजना बना रहे
थे। उन लोगों ने यिर्मयाह से कहा, "यहोवा के नाम भविष्यवाणी न
करो वरना हम तुम्हें मार डालेंगे।" यहोवा ने अनातोत के उन लोगों
के बारे में एक निर्णय किया। 22 सर्वशक्तिमान यहोवा ने कहा, "मैं
शीघ्र ही अनातोत के उन लोगों को दण्ड दूँगा उनके युवक युद्ध में
मारे जाएंगे। उनके पुत्र और उनकी पुत्रियाँ भूखों मरेंगी। 23 अनातोत
नगर में कोई भी व्यक्ति नहीं बचेगा। कोई व्यक्ति जीवित नहीं रहेगा।
मैं उन्हें दण्ड दूँगा। मैं उनके साथ कुछ बुरा घटित होने दूँगा।"

12

यिर्मयाह परमेश्वर से शिकायत करता है

1 यहोवा यदि मैं तुझसे तर्क करता हूँ,
तू सदा ही सही निकलता है।
किन्तु मैं तुझसे उन सब के बारे में पूछना चाहता हूँ
जो सही नहीं लगतीं।
दुष्ट लोग सफल क्यों हैं जो तुझ पर विश्वास नहीं करते,
उनका उतना जीवन सुखी क्यों है
2 तूने उन दुष्ट लोगों को यहाँ बसाया है।
वे दृढ़ जड़ वाले पौधे जैसे हैं जो बढ़ते तथा फल देते हैं।
अपने मुँह से वे तुझको अपने समीपी और प्रिय कहते हैं।
किन्तु अपने हृदय से वे वास्तव में तुझसे बहुत दूर हैं।
3 किन्तु मेरे यहोवा, तू मेरे हृदय को जानता है।
तू मुझे और मेरे मन को देखता और परखता है,
मेरा हृदय तेरे साथ है।
उन दुष्ट लोगों को मारी जाने वाली भेड़ के समान घसीट।
बलि दिवस के लिये उन्हें चुन।
4 कितने अधिक समय तक भूमि प्यासी पड़ी रहेगी
घास कब तक सूखी और मरी रहेगी
इस भूमि के जानवर और पक्षी मर चुके हैं
और यह दुष्ट लोगों का अपराध है।
फिर भी वे दुष्ट लोग कहते हैं,
"यिर्मयाह हम लोगों पर आने वाली विपत्ति को
देखने को जीवित नहीं रहेगा।"

परमेश्वर का यिर्मयाह को उत्तर

5 "यिर्मयाह, यदि तुम मनुष्यों की पग दौड़ में थक जाते हो
तो तुम घोड़ों के मुकाबले में कैसे दौड़ोगे

यदि तुम सुरक्षित देश में थक जाते हो
तो तुम यरदन नदी के तटों पर उगी भयंकर कंटीली झाड़ियों में पहुँचकर क्या करोगे
6 ये लोग तुम्हारे अपने भाई हैं।
तुम्हारे अपने परिवार के सदस्य तुम्हारे विरुद्ध योजना बना रहे हैं।
तुम्हारे अपने परिवार के लोग तुम पर चीख रहे हैं।
यदि वे मित्र सच भी बोलें, उन पर विश्वास न करो।”

यहोवा अपने लोगों अर्थात् यहूदा को त्यागता है

7 “मैंने (यहोवा) अपना घर छोड़ दिया है।
मैंने अपनी विरासत अस्वीकार कर दी है।
मैंने जिससे (यहूदा) प्यार किया है,
उसे उसके शत्रुओं को दे दिया है।
8 मेरे अपने लोग मेरे लिये जंगली शेर बन गये हैं।
वे मुझ पर गरजते हैं, अत: मैं उनसे घृणा करता हूँ।
9 मेरे अपने लोग गिद्धों से घिरा, मरता हुआ जानवर बन गये हैं।
वे पक्षी उस पर मंडरा रहे हैं। जंगली जानवरों आओ।
आगे बढ़ो, खाने को कुछ पाओ।
10 अनेक गडेरियों (प्रमुखों) ने मेरे अंगूर के खेतों को नष्ट किया है।
उन गडेरियों ने मेरे खेत के पौधों को रोंदा है।
उन गडेरियों ने मेरे सुन्दर खेत को सूनी मरुभूमि में बदला है।
11 उन्होंने मेरे खेत को मरुभूमि में बदल दिया है।
यह सूख गया और मर गया।
कोई भी व्यक्ति वहाँ नहीं रहता।
पूरा देश ही सूनी मरुभूमि है।
उस खेत की देखभाल करने वाला कोई व्यक्ति नहीं बचा है।
12 अनेक सैनिक उन सूनी पहाड़ियों को रौंदते गए हैं।

यहोवा ने उन सेनाओं का उपयोग उस देश को दण्ड देने के
लिये किया।
देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक के लोग दण्डित किये गये हैं।
कोई व्यक्ति सुरक्षित न रहा।
13 लोग गेहूँ बोएंगे, किन्तु वे केवल काँटे ही काटेंगे।
वे अत्याधिक थकने तक काम करेंगे,
किन्तु वे अपने सारे कामों के बदले कुछ भी नहीं पाएंगे।
वे अपनी फसल पर लज्जित होंगे। यहोवा के क्रोध ने यह सब
कुछ किया"

इस्राएल के पड़ोसियों को यहोवा का वचन

14 यहोवा जो कहता है, वह यह है: "मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं
इस्राएल देश के चारों ओर रहने वाले सभी लोगों के लिये क्या
करुँगा। वे लोग बहुत दुष्ट हैं। उन्होंने उस देश को नष्ट किया जिसे
मैंने इस्राएल के लोगों को दिया था। मैं उन दुष्ट लोगों को उखाड़ूँगा
और उनके देश से उन्हें बाहर फेंक दूँगा। मैं उनके साथ यहूदा के
लोगों को भी उखाड़ूँगा। 15 किन्तु उन लोगों को उनके देश से उखाड़
फेंकने के बाद मैं उनके लिये अफसोस करुँगा। मैं हर एक परिवार
को उनकी अपनी सम्पत्ति और अपनी भूमि पर वापस लाऊँगा। 16 मैं
चाहता हूँ कि वे लोग अब मेरे लोगों की तरह रहना सीख लें। बीते
समय में उन लोगों ने हमारे लोगों को शपथ खाने के लिये बाल के
नाम का उपयोग करना सिखाया। अब, मैं चाहता हूँ कि वे लोग
अपना पाठ ठीक वैसे ही अच्छी तरह पढ़ लें। मैं चाहता हूँ कि वे
लोग मेरे नाम का उपयोग करना सीखें। मैं चाहता हूँ कि वे लोग
कहें, 'क्योंकि यहोवा शाश्वत है।' यदि वे लोग वैसा करते हैं तो मैं
उन्हें सफल होने दूँगा और उन्हें अपने लोगों के बीच रहने दूँगा।
17 किन्तु यदि कोई राष्ट्र मेरे सन्देश को अनसुना करता है तो मैं उसे

पूरी तरह नष्ट कर दूँगा। मैं उसे सूखे पौधे की तरह उखाड़ डालूँगा।” यह सन्देश यहोवा का है।

13

अधोवस्त्र

1 जो यहोवा ने मुझसे कहा वह यह है: “यिर्मयाह, जाओ और एक सन (बहुमूल्य सूती वस्त्र) का अधोवस्त्र खरीदो। तब इसे अपनी कमर में लपेटो। अधोवस्त्र को गीला न होने दो।”

2 अत: मैंने एक सन (बहुमूल्य सूती वस्त्र) का अधोवस्त्र खरीदा,
जैसा कि यहोवा ने करने को कहा था और मैंने इसे अपनी कमर में
लपेटा। 3 तब यहोवा का सन्देश मेरे पास दुबारा आया। 4 सन्देश
यह था: “यिर्मयाह, अपने खरीदे गये और पहने गये अधोवस्त्र को लो और परात को जाओ। अधोवस्त्र को चट्टानों की दरार में छिपा दो।”

5 अत: मैं परात गया और जैसा यहोवा ने कहा था, मैंने अधोवस्त्र
को वहाँ छिपा दिया। 6 कई दिनों बाद यहोवा ने मुझसे कहा,
“यिर्मयाह, अब तुम परात जाओ। उस अधोवस्त्र को लो जिसे मैंने छिपाने को कहा था।”

7 अत: मैं परात को गया और मैंने खोदकर अधोवस्त्र को निकाला, मैंने उसे चट्टानों की दरार से निकाला जहाँ मैंने उसे छिपा रखा था। किन्तु अब मैं अधोवस्त्र को पहन नहीं सकता था क्योंकि वह गल चुका था, वह किसी भी काम का नहीं रह गया था।

8 तब यहोवा का सन्देश मुझे मिला। 9 यहोवा ने जो कहा, वह
यह है: “अधोवस्त्र गल चुका है और किसी भी काम का नहीं रह
गया है। इसा प्रकार मैं यहूदा और यरूशलेम के घमंडी लोगों को
बरबाद करुँगा। 10 मैं उन घमंडी और दुष्ट यहूदा के लोगों को नष्ट
करूँगा। उन्होंने मेरे सन्देशों को अनसुना किया है। वे हठी हैं और वे केवल वह करते हैं जो वे करना चाहते हैं। वे अन्य देवताओं का अनुसरण और उनकी पूजा करते हैं। वे यहूदा के लोग इन सन

के अधोवस्त्र की तरह हो जाएंगे। वे बरबाद होंगे और किसी काम
के नहीं रहेंगे। 11 अधोवस्त्र व्यक्ति के कमर से कस कर लपेटा
जाता है। उसी प्रकार मैंने पूरे इस्राएल और यहूदा के परिवारों को
अपने चारों ओर लपेटा।" यह सन्देश यहोवा के यहाँ से है। "मैंने
वैसा इसलिये किया कि वे लोग मेरे लोग होंगे। तब मेरे लोग मुझे
यश, प्रशंसा और प्रतिष्ठा प्रदान करेंगे। किन्तु मेरे लोगों ने मेरी एक
न सुनी।"

यहूदा को चेतावनियाँ

12 "यिर्मयाह, यहूदा के लोगों से कहो: 'इस्राएल का परमेश्वर
यहोवा जो कहता है, वह यह है: हर एक दाखमधु की मशक
दाखमधु से भरी जानी चाहिये।' वे लोग हँसेंगे और तुमसे कहेंगे,
'निश्चय ही हम जानते हैं कि हर एक दाखमधु की मशक दाखमधु
से भरी जानी चाहिये।' 13 तब तुम उनसे कहोगे, 'यहोवा जो कहता
है वह यह है: मैं इस देश के हर एक रहने वाले को मदमत्त सा
असहाय करुँगा। मैं उन राजाओं के बारे में कह रहा हूँ जो दाऊद
के सिंहासन पर बैठते हैं। मैं यरूशलेम के निवासी याजकों, नबियों
और सभी लोगों के बारे में कह रहा हूँ। 14 मैं यहूदा के लोगों को
ठोकर खाने और एक दूसरे पर गिरने दूँगा। पिता और पुत्र एक दूसरे
पर गिरेंगे।' यह सन्देश यहोवा का है। 'मैं उनके लिए अफसोस नहीं
करूँगा और न उन पर दया। मैं करुणा को, यहूदा के लोगों को नष्ट
करने से रोकने नहीं दूँगा।' "

15 सुनो और ध्यान दो।
    यहोवा ने तुम्हें सन्देश दिया है।
    घमण्डी मत बनो।
16 अपने परमेश्वर यहोवा का सम्मान करो,
उसकी स्तुति करो नहीं तो वह अंधकार लाएगा।
अंधेरी पहाड़ियों पर लड़खड़ाने

और गिरने से पहले उसकी स्तुति करो।
यहूदा के लोगों, तुम प्रकाश की आशा करते हो।
किन्तु यहोवा प्रकाश को घोर अंधकार में बदलेगा।
यहोवा प्रकाश को अति गहन अंधकार से बदल देगा।
17 यहूदा के लोगों, यदि तुम यहोवा की अनसुनी करते हो
तो मैं छिप जाऊँगा और रोऊँगा।
तुम्हारा घमण्ड मुझे रूलायेगा।
मैं फूट—फूट कर रोऊँगा।
मेरा आँखें आँसुओं से भर जाएंगी।
क्यों क्योंकि यहोवा की रेवड़ पकड़ी जाएगी।
18 ये बातें राजा और उसकी पत्नी से कहो,
“अपने सिंहासनों से उतरो।
तुम्हारे सुन्दर मुकुट तुम्हारे सिरों से गिर चुके हैं।”
19 नेगव मरुभूमि के नगरों में ताला पड़ चुका है,
उन्हें कोई खोल नहीं सकता।
यहूदा के लोगों को देश निकाला दिया जा चुका है।
उन सभी को बन्दी के रूप में ले जाया गया है।
20 यरूशलेम, ध्यान से देखो!
शत्रुओं को उत्तर से आते देखो।
तुम्हारी रेवड़ कहाँ है परमेश्वर ने तुम्हें सुन्दर रेवड़ दी थी।
तुमसे उस रेवड़ की देखभाल की आशा थी।
21 जब यहोवा उस रेवड़ का हिसाब तुमसे माँगेगा
तो तुम उसे क्या उत्तर दोगे तुमसे आशा थी कि
तुम परमेश्वर के बारे में लोगों को शिक्षा दोगे।
तुम्हारे नेताओं से लोगों का नेतृत्व करने की आशा थी।
लेकिन उन्होंने यह कार्य नहीं किये।
अत: तुम्हें अत्यन्त दुःख व पीड़ा भुगतनी होगी।
22 तुम अपने से पूछ सकते हो,
“यह बुरी विपत्ति मुझ पर क्यों आई”

ये विपत्तियाँ तुम्हारे अनेक पापों के कारण आई।
तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें निर्वस्त्र किया गया
और जूते ले लिये गए।
उन्होंने यह तुम्हें लज्जित करने को किया।
23 एक काला आदमी अपनी चमड़ी का रंग बदल नहीं सकता।
और कोई चीता अपने धब्बे नहीं बदल सकता।
ओ यरूशलेम, उसी तरह तुम भी बदल नहीं सकते,
अच्छा काम नहीं कर सकते।
तुम सदैव बुरा काम करते हो।

24 "मैं तुम्हें अपना घर छोड़ने को विवश करूँगा,
जब तुम भागोगे तब हर दिशा में दौड़ोगे।
तुम उस भूसे की तरह होगे
जिसे मरुभूमि की हवा उड़ा ले जाती है।
25 ये वे सब चीज़ें हैं जो तुम्हारे साथ होंगी,
यह मेरी योजना का तुम्हारा हिस्सा है।"
यह सन्देश यहोवा का है।
"यह क्यों होगा क्योंकि तुम मुझे भूल गए,
तुमने असत्य देवताओं पर विश्वास किया।
26 यरूशलेम, मैं तुम्हारे वस्त्र उतारूँगा
लोग तुम्हारी नग्नता देखेंगे
और तुम लज्जा से गड़ जाओगे।
27 मैंने उन भयंकर कामों को देखा जो तुमने किये।
मैंने तुम्हें हँसते और अपने प्रेमियों के साथ शारीरिक सम्बन्ध
करते देखा।
मै जानता हूँ कि तुमने वेश्या की तरह दुष्कर्म किया है।
मैंने तुम्हें पहाड़ियों और खेतों में देखा है।
यरूशलेम, यह तुम्हारे लिये बहुत बुरा होगा।

मुझे बताओ कि तुम कब तक अपने गंदे पापों को करते रहोगे”

14

सूखा पड़ना और झूठे नबी

1 यह यिर्मयाह को सूखे के बारे में यहोवा का सन्देश है:

2 “यहूदा राष्ट्र उन लोगों के लिये रो रहा है जो मर गये हैं।
यहूदा के नगर के लोग दुर्बल, और दुर्बल होते जा रहे हैं।
वे लोग भूमि पर लेट कर शोक मनाते हैं।
यरूशलेम नगर से एक चीख परमेश्वर के पास पहुँच रही है।
3 लोगों के प्रमुख अपने सेवकों को पानी लाने के लिये भेजते हैं।
सेवक कण्डों पर जाते हैं।
किन्तु वे कछ भी पानी नहीं पैंते।
सेवक खाली बर्तन लेकर लौटते हैं। अत:
वे लज्जित और परेशान हैं।
वे अपने सिर को लज्जा से ढक लेते हैं।
4 कोई भी फसल के लिए भूमि तैयार नहीं करता।
भूमि पर वर्षा नहीं होती, किसान हताश हैं।
अत: वे अपना सिर लज्जा से ढकते हैं।
5 यहाँ तक कि हिरनी भी अपने नये जन्मे बच्चे को
खेत में अकेला छोड़ देती है।
वह वैसा करती है क्योंकि वहाँ घास नहीं है।
6 जंगली गधे नंगी पहाड़ी पर खड़े होते हैं।
वे गीदड़ की तरह हवा सूंघते हैं।
किन्तु उनकी आँखों को कोई चरने की चीज़ नहीं दिखाई पड़ती।
क्योंकि चरने योग्य वहाँ कोई पौधे नहीं हैं।

7 “हम जानते हैं कि यह सब कुछ हमारे अपराध के कारण है।

हम अब अपने पापों के कारण कष्ट उठा रहे हैं।
हे यहोवा, अपने अच्छे नाम के लिये हमारी कुछ मदद कर।
हम स्वीकार करते हैं कि हम लोगों ने तुझको कई बार छोड़ा है।
हम लोगों ने तेरे विरुद्ध पाप किये हैं।
8 परमेश्वर, तू इस्राएल की आशा है।
विपत्ति के दिनों में तूने इस्राएल को बचाया।
किन्तु अब ऐसा लगता है कि तू इस देश में अजनबी है।
ऐसा प्रतीत होता है कि तू वह यात्री है जो एक रात यहाँ ठहरा हो।
9 तू उस व्यक्ति के समान लगता है जिस पर अचानक हमला किया गया हो।
तू उस सैनिक सा लगता है जिसके पास किसी को बचाने की शक्ति न हो।
किन्तु हे यहोवा, तू हमारे साथ है।
हम तेरे नाम से पुकारे जाते हैं, अत: हमें असहाय न छोड़।"

10 यहूदा के लोगों के बारे में यहोवा जो कहता है, वह यह है: "यहूदा के लोग सचमुच मुझे छोड़ने में प्रसन्न हैं। वे लोग मुझे छोड़ना अब भी बन्द नहीं करते। अत: अब यहोवा उन्हें नहीं अपनायेगा। अब यहोवा उनके बुरे कामों को याद रखेगा जिन्हें वे करते हैं। यहोवा उन्हें उनके पापों के लिये दण्ड देगा।"

11 तब यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, यहूदा के लोगों के लिये
कुछ अच्छा हो, इसकी प्रार्थना न करो।"
12 यहूदा के लोग उपवास कर सकते हैं और मुझसे प्रार्थना कर सकते हैं। किन्तु मैं उनकी प्रार्थनायें नहीं सुनूँगा। यहाँ तक कि यदि ये लोग होमबलि और अन्न भेंट चढ़ायेंगे तो भी मैं उन लोगों को नहीं अपनाऊँगा। मैं यहूदा के

लोगों को युद्ध में नष्ट करुँगा। मैं उनका भोजन छीन लूँगा और यहूदा
के लोग भूखों मरेंगे और मैं उन्हें भयंकर बीमारियों से नष्ट करुँगा।
13 किन्तु मैंने यहोवा से कहा, “हमारे स्वामी यहोवा! नबी लोगों
से कुछ और ही कह रहे थे। वे यहूदा के लोगों से कह रहे थे, ‘तुम
लोग शत्रु की तलवार से दुःख नहीं उठाओगे। तुम लोगों को कभी
भूख से कष्ट नहीं होगा। यहोवा तुम्हें इस देश में शान्ति देगा।’ ”
14 तब यहोवा ने मुझसे कहा, “यिर्मयाह, वे नबी मेरे नाम पर झूठा
उपदेश दे रहे हैं। मैंने उन नबियों को नहीं भेजा मैंने उन्हें कोई आदेश
या कोई बात नहीं की वे नबी असत्य कल्पनायें, व्यर्थ जादू और
अपने झूठे दर्शन का उपदेश कर रहे हैं। 15 इसलिये उन नबियों के
विषय में जो मेरे नाम पर उपदेश दे रहे हैं, मेरा कहना यह है। मैंने उन
नबियों को नहीं भेजा। उन नबियों ने कहा, ‘कोई भी शत्रु तलवार
से इस देश पर आक्रमण नहीं करेगा। इस देश में कभी भुखमरी
नहीं होगी।’ वे नबी भूखों मरेंगे और शत्रु की तलवार के घाट उतारे
जाएंगे 16 और जिन लोगों से वे नबी बातें करते हैं सड़कों पर फेंक
दिये जाएंगे। वे लोग भूखों मरेंगे और शत्रु की तलवार के घाट उतारे
जाएंगे। कोई व्यक्ति उनको या उनकी पत्नियों या उनके पुत्रों अथवा
उनकी पुत्रियों को दफनाने को नहीं रहेगा। मैं उन्हें दण्ड दूँगा।

17 “यिर्मयाह, यह सन्देश यहूदा के लोगों को दो:
‘मेरी आँखें आँसुओं से भरी हैं।
मैं बिना रूके रात—दिन रोऊँगा।
मैं अपनी कुमारी पुत्री के लिये रोऊँगा।
मैं अपने लोगों के लिए रोऊँगा।
क्यों क्योंकि किसी ने उन पर प्रहार किया
और उन्हें कुचल डाला।
वे बुरी तरह घायल किये गए हैं।
18 यदि मैं देश में जाता हूँ तो मैं उन लोगों को देखता हूँ

जो तलवार के घाट उतारे गए हैं।
यदि मैं नगर में जाता हूँ,
मैं बहुत सी बीमारियाँ देखता हूँ,
क्योंकि लोगों के पास भोजन नहीं है।
याजक और नबी विदेश पहुँचा दिये गये हैं।' "

19 हे यहोवा, क्या तूने पूरी तरह यहूदा राष्ट्र को त्याग दिया है यहोवा,
क्या तू सिय्योन से घृणा करता है
तूने इसे बुरी तरह से चोट की है
कि हम फिर से अच्छे नहीं बनाए जा सकते।
तूने वैसा क्यों किया हम शान्ति की आशा रखते थे,
किन्तु कुछ भी अच्छा नहीं हुआ।
हम लोग घाव भरने के समय की प्रतीक्षा कर रहे थे,
किन्तु केवल त्रास आया।
20 हे यहोवा, हम जानते हैं कि हम बहुत बुरे लोग हैं,
हम जानते हैं कि हमारे पूर्वजों ने बुरे काम किये।
हाँ, हमने तेरे विरुद्ध पाप किये।
21 हे यहोवा, अपने नाम की अच्छाई के लिये
तू हमें धक्का देकर दूर न कर।
अपने सम्मानीय सिंहासन के गौरव को न हटा।
हमारे साथ की गई वाचा को याद रख और इसे न तोड़।
22 विदेशी देवमूर्तियों में वर्षा लाने की शक्ति नहीं हैं,
आकाश में पानी बरसाने की शक्ति नहीं है।
केवल तू ही हमारी आशा है, एकमात्र तू ही है
जिसने यह सब कुछ बनाया है।

15

1 यहोवा ने मुझसे कहा, “यिर्मयाह, यदि मूसा और शमूएल भी
यहूदा के लोगों के लिये प्रार्थना करने वाले होते, तो भी मैं इन लोगों
के लिये अफसोस नहीं करता। यहूदा के लोगों को मुझसे दूर भेजो।
उनसे जाने को कहो। 2 वे लोग तुमसे पूछ सकते हैं, ‘हम लोग कहाँ
जाएंगे’ तुम उनसे यह कहो, यहोवा जो कहता है, वह यह है:

“ ‘मैंने कुछ लोगों को मरने के लिये निश्चित किया है।
वे लोग मरेंगे।
मैंने कुछ लोगों को तलवार के घाट उतारना निश्चित किया है,
वे लोग तलवार के घाट उतारे जाएंगे।
मैंने कुछ को भूख से मरने के लिये निश्चित किया है।
वे लोग भूख से मरेंगे। मैंने कुछ लोगों का बन्दी होना
और विदेश ले जाया जाना निश्चित किया है।
वे लोग उन विदेशों में बन्दी रहेंगे।
3 यहोवा कहता है कि मैं चार प्रकार की विनाशकारी शक्तियाँ उनके
विरुद्ध भेजूँगा।”
यह सन्देश यहोवा का है।
‘मैं शत्रु को तलवार के साथ मारने के लिए भेजूँगा।
मैं कुत्तों को उनका शव घसीट ले जाने को भेजूँगा।
मैं हवा में उड़ते पक्षियों और जंगली जानवरों को
उनके शवों को खाने और नष्ट करने को भेजूँगा।
4 मैं यहूदा के लोगों को ऐसा दण्ड दूँगा
कि धरती के लोग इसे देख कर काँप जायेंगे।
मैं यहूदा के लोगों के साथ यह,
मनश्शे ने यरूशलेम में जो कुछ किया, उसके कारण करुँगा।
मनश्शे, राजा हिलकिय्याह का पुत्र था।
मनश्शे यहूदा राष्ट्र का एक राजा था।’

5 “यरूशलेम नगर, तुम्हारे लिये कोई अफसोस नहीं करेगा।
कोई व्यक्ति तुम्हारे लिए न दु:खी होगा, न ही रोएगा।
कौन तुम्हारा कुशल क्षेम पूछने तुम्हारे पास आयेगा!
6 यरूशलेम, तुमने मुझे छोड़ा।”
यह सन्देश यहोवा का है।
“तुमने मुझे बार बार त्यागा।
अत: मैं दण्ड दूँगा और तुझे नष्ट करुँगा
मैं तुम पर दया करते हुए थक गया हूँ।
7 मैं अपने सूप से यहूदा के लोगों को फटक दूँगा।
मैं देश के नगर द्वार पर उन्हें बिखेर दूँगा।
मेरे लोग बदले नहीं हैं।
अत: मैं उन्हें नष्ट करूँगा।
मैं उनके बच्चों को ले लूँगा।
8 अनेक स्त्रियाँ अपने पतियों को खो देंगी।
सागर के बालू से भी अधिक वहाँ विधवायें होंगी।
मैं एक विनाशक को दोपहरी में लाऊँगा।
विनाशक यहूदा के युवकों की माताओं पर आक्रमण करेगा।
मैं यहूदा के लोगों को पीड़ा और भय दूँगा।
मैं इसे अतिशीघ्रता से घटित कराऊँगा।
9 शत्रु तलवार से आक्रमण करेगा और लोगों को मारेगा।
वे यहूदा के बचे लोगों को मार डालेंगे।
एक स्त्री के सात पुत्र हो सकते हैं, किन्तु वे सभी मरेंगे।
वह रोती, और रोती रहेगी, जब तक वह दुर्बल नहीं हो जाती
और वह साँस लेने योग्य भी नहीं रहेगी।
वह लज्जा और अनिश्चयता में होगी,
उसके उजले दिन दु:ख से काले होंगे।”

यिर्मयाह फिर परमेश्वर से शिकायत करता है

10 हाय माता, तूने मुझे जन्म क्यों दिया

मैं (यिर्मयाह) वह व्यक्ति हूँ
जो पूरे देश को दोषी कहे और आलोचना करे।
मैंने न कुछ उधार दिया है और न ही लिया है।
किन्तु हर एक व्यक्ति मुझे अभिशाप देता है।
11 यहोवा सच ही, मैंने तेरी ठीक सेवा की है।
विपत्ति के समय में मैंने अपने शत्रुओं के बारे में तुझसे प्रार्थना की।

परमेश्वर यिर्मयाह को उत्तर देता है

12 "यिर्मयाह, तुम जानते हो कि कोई व्यक्ति लोहे के
टुकड़े को चकनाचूर नहीं कर सकता।
मेरा तात्पर्य उस लोहे से है जो उत्तर का है
और कोई व्यक्ति काँसे के टुकड़े को भी चकनाचूर नहीं कर सकता।
13 यहूदा के लोगों के पास सम्पत्ति और खजाने हैं।
मैं उस सम्पत्ति को अन्य लोगों को दूँगा।
उन अन्य लोगों को वह सम्पत्ति खरीदनी नहीं पड़ेगी।
मैं उन्हें वह सम्पत्ति दूँगा।
क्यों क्योंकि यहूदा ने बहुत पाप किये हैं।
यहूदा ने देश के हर एक भाग में पाप किया है।
14 यहूदा के लोगों, मैं तुम्हें तुम्हारे शत्रुओं का दास बनाऊँगा।
तुम उस देश में दास होगे जिसे तुमने कभी जाना नहीं।
मैं बहुत क्रोधित हुआ हूँ। मेरा क्रोध तप्त अग्नि सा है
और तुम जला दिये जाओगे।"

15 हे यहोवा, तू मुझे समझता है।
मुझे याद रख और मेरी देखभाल कर।
लोग मुझे चोट पहुँचाते हैं।
उन लोगों को वह दण्ड दे जिसके वह पात्र हैं।

तू उन लोगों के प्रति सहनशील है।
किन्तु उनके प्रति सहनशील रहते समय मुझे नष्ट न कर दे।
मेरे बारे में सोच।
यहोवा उस पीड़ा को सोच जो मैं तेरे लिये सहता हूँ।
16 तेरा सन्देश मुझे मिला और मैं उसे निगल गया।
तेरे सन्देश ने मुझे बहुत प्रसन्न कर दिया।
मैं प्रसन्न था कि मुझे तेरे नाम से पुकारा जाता है।
तेरा नाम यहोवा सर्वशक्तिमान है।
17 मैं कभी भीड़ में नहीं बैठा क्योंकि उन्होंने हँसी उड़ाई और मजा लिया।
अपने ऊपर तेरे प्रभाव के कारण मैं अकेला बैठा।
तूने मेरे चारों ओर की बुराइयों पर मुझे क्रोध से भर दिया।
18 मैं नहीं समझ पाता कि मैं क्यों अब तक घायल हूँ
मैं नहीं समझ पाता कि मेरा घाव अच्छा क्यों नहीं होता
और भरता क्यों नहीं हे यहोवा,
मैं समझता हूँ कि तू बदल गया है।
तू सोते के उस पानी की तरह है जो सूख गया हो।
तू उस सोते की तरह है जिसका पानी सूख गया हो।

19 तब यहोवा ने कहा, “यिर्मयाह, यदि तुम बदल जाते हो
और मेरे पास आते हो, तो मैं तुम्हें दण्ड नहीं दूँगा।
यदि तुम बदल जाते हो और मेरे पास आते हो तो
तुम मेरी सेवा कर सकते हो।
यदि तुम महत्वपूर्ण बात कहते हो
और उन बेकार बातों को नहीं कहते, तो तुम मेरे लिये कह सकते हो।
यिर्मयाह, यहूदा के लोगों को बदलना चाहिये
और तुम्हारे पास उन्हें आना चाहिये।

किन्तु तुम मत बदलो और उनकी तरह न बनो।
20 मैं तुम्हें शक्तिशाली बनाऊँगा।
वे लोग सोचेंगे कि तुम काँसे की बनी दीवार
जैसे शक्तिशाली हो यहूदा के लोग तुम्हारे विरुद्ध लड़ेंगे,
किन्तु वे तुम्हें हरायेंगे नहीं।
वे तुमको नहीं हरायेंगे।
क्यों क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ।
मैं तुम्हारी सहायता करुँगा, तुम्हारा उद्धार करुँगा।"
यह सन्देश यहोवा को है।
21 "मैं तुम्हारा उद्धार उन बुरे लोगों से करूँगा।
वे लोग तुम्हें डराते हैं। किन्तु मैं तुम्हें उन लोगों से बचाऊँगा।"

16

विनाश का दिन

1 यहोवा का सन्देश मुझे मिला। 2 "यिर्मयाह, तुम्हें विवाह नहीं
करना चाहिये। तुम्हें इस स्थान पर पुत्र या पुत्री पैदा नहीं करना
चाहिये।"
3 यहूदा देश में जन्म लेने वाले पुत्र—पुत्रियों के बारे में यहोवा
यह कहता है, और उन बच्चों के माता—पिता के बारे में जो यहोवा
कहता है, वह यह है: 4 "वे लोग भयंकर मृत्यु के शिकार होंगे। उन
लोगों के लिये कोई रोएगा नहीं। कोई भी व्यक्ति उन्हें दफनायेगा
नहीं। उनके शव जमीन पर गोबर की तरह पड़े रहेंगे। वे लोग शत्रु
की तलवार के घाट उतरेंगे या भूखों मरेंगे। उनके शव आकाश के
पक्षियों और भूमि के जंगली जानवरों का भोजन बनेंगे।"
5 अत: यहोवा कहता है, "यिर्मयाह, उन घरों में न जाओ जहाँ लोग
अन्तिम क्रिया की दावत खा रहे हैं। वहाँ मरे के लिये रोने या अपना
शोक प्रकट करने न जाओ। ये सब काम न करो। क्यों क्योंकि मैंने
अपना आशीर्वाद वापस ले लिया है। मैं यहूदा के इन लोगों पर दया

नहीं करूँगा। मैं उनके लिये अफसोस नहीं करूँगा।" यह सन्देश
यहोवा का है।
6 "यहूदा देश में महत्वपूर्ण लोग और साधारण लोग मरेंगे। कोई
व्यक्ति उन लोगों को न दफनायेगा न ही उनके लिये रोएगा। इन
लोगों के लिये शोक प्रकट करने को न तो कोई अपने को काटेगा
और न ही अपने सिर के बाल साफ करायेगा। 7 कोई व्यक्ति उन
लोगों के लिये भोजन नहीं लाएगा जो मरे के लिए रो रहे होंगे।
जिनके माता पिता मर गए होंगे उन लोगों को कोई व्यक्ति समझाये
बुझायेगा नहीं। जो मरे के लिये रो रहे होंगे उन्हें शान्त करने के लिये
कोई व्यक्ति दाखमधु नहीं पिलायेगा।"

8 "यिर्मयाह, उस घर में न जाओ जहाँ लोग दावत खा रहे हो।
उस घर में न जाओ और उनके साथ बैठकर न खाओ न दाखमधु
पीओ। 9 इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिशाली यहोवा यह कहता
है: 'मजा उड़ाने वाले लोगों के शोर को शीघ्र ही मैं बन्द कर दूँगा।
विवाह की दावत में लोगों के हँसी मजाक की किलकारियों को मैं
बन्द कर दूँगा। यह तुम्हारे जीवनकाल में होगा। मैं ये काम शीघ्रता
से करूँगा।'
10 "यिर्मयाह, तुम यहूदा के लोगों को ये बातें बताओगे और लोग
तुमसे पूछेंगे, 'यहोवा ने हम लोगों के लिये इतनी भयंकर बातें क्यों
कही हैं हमने क्या गलत काम किया है हम लोगों ने यहोवा अपने
परमेश्वर के विरुद्ध कौन सा पाप किया है?' 11 तुम्हें उन लोगों से यह
कहना चाहिये, 'तुम लोगों के साथ भयंकर घटनायें घटेंगी क्योंकि
तुम्हारे पूर्वजों ने मेरा अनुसरण करना छोड़ा और अन्य देवताओं का
अनुसरण करना तथा सेवा करना आरम्भ किया। उन्होंने उन अन्य
देवताओं की पूजा की। तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे छोड़ा और मेरे नियमों
का पालन करना त्यागा। 12 किन्तु तुम लोगों ने अपने पूर्वजों से भी
अधिक बुरे पाप किये हैं। तुम लोग बहुत हठी हो और तुम केवल
वही करते हो जिसे तुम करना चाहते हो। तुम मेरी आज्ञा का पालन
नहीं कर रहे हो। 13 अत: मैं तुम्हें इस देश से बाहर निकाल फेंकूँगा।

मैं तुम्हें विदेश में जाने को विवश करूँगा। तुम ऐसे देश में जाओगे जिसे तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने कभी नहीं जाना। उस देश में तुम उन सभी असत्य देवताओं की पूजा कर सकते हो जिन्हें तुम चाहते हो। मैं न तो तुम्हारी सहायता करूँगा और न ही तुम्हारे प्रति कोई सहानुभूति दिखाऊँगा।' यह सन्देश यहोवा का है।

14 "लोग प्रतिज्ञा करते हैं और कहते हैं, 'यहोवा निश्चय ही शाश्वत है। केवल वही है जो इस्राएल के लोगों को मिस्र देश से बाहर लाया' किन्तु समय आ रहा है," जब लोग ऐसा नहीं कहेंगे। यह
सन्देश यहोवा का है। 15 लोग कुछ नया कहेंगे। वे कहेंगे, 'निश्चय ही यहोवा शाश्वत है। वह ही केवल ऐसा है जो इस्राएल के लोगों को उत्तरी देश से ले आया। वह उन्हें उन सभी देशों से लाया जिनमें उसने उन्हें भेजा था।' लोग ये बातें क्यों कहेंगे क्योंकि मैं इस्राएल के लोगों को उस देश में वापस लाऊँगा जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दिया था।

16 "मैं शीघ्र ही अनेकों मछुवारों को इस देश में आने के लिये बुलाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "वे मछुवारे यहूदा के लोगों को पकड़ लेंगे। यह होने के बाद मैं बहुत से शिकारियों को इस देश में आने के लिये बुलाऊँगा। वे शिकारी यहूदा के लोगों का शिकार
हर एक पहाड़, पहाड़ी और चट्टानों की दरारों में करेंगे। 17 मैं वह सब
जो वे करते हैं, देखता हूँ। यहूदा के लोग उन कामों को मुझसे छिपा
नहीं सकते जिन्हें वे करते हैं। उनके पाप मुझसे छिपे नहीं हैं। 18 मैं
यहूदा के लोगों ने जो बुरे काम किये हैं, उसका बदला चुकाऊँगा। मैं हर एक पाप के लिये दो बार उनको दण्ड दूँगा। मैं यह करूँगा क्योंकि उन्होंने मेरे देश को 'गन्दा' बनाया है। उन्होंने मेरे देश को भयंकर मूर्तियों से गन्दा किया है। मैं उन देवमूर्तियों से घृणा करता हूँ। किन्तु उन्होंने मेरे देश को अपनी देवमूर्तियों से भर दिया है।"

19 हे यहोवा, तू मेरी शक्ति और गढ़ है।

विपत्ति के समय भाग कर बचने की तू सुरक्षित शरण है।
सारे संसार से राष्ट्र तेरे पास आएंगे।
वे कहेंगे, "हमारे पिता असत्य देवता रखते थे।
उन्होंने उन व्यर्थ देवमूर्तियों की पूजा की,
किन्तु उन देवमूर्तियों ने उनकी कोई सहायता नहीं की।
20 क्या लोग अपने लिये सच्चे देवता बना सकते हैं नहीं,
वे मूर्तियाँ बना सकते हैं, किन्तु वे मूर्तियाँ सचमुच देवता नहीं है।"

21 "अत: मैं उन लोगों को सबक सिखाऊँगा,
जो देवमूर्तियों को देवता बनाते हैं।
अब मैं सीधे अपनी शक्ति और प्रभुता के बारे में शिक्षा दूँगा।
तब वे समझेंगे कि मैं परमेश्वर हूँ। वे जानेंगे कि मेरा नाम यहोवा है।

17

हृदय पर लिखा अपराध

1 "यहूदा के लोगों का पाप वहाँ लिखा है जहाँ से उसे मिटाया नहीं जा सकता।
वे पाप लोहे की कलम से पत्थरों पर लिखे गये थे।
उनके पाप हीरे की नोकवाली कलम से लिखे गए थे,और वह पत्थर उनका हृदय है।
वे पाप उनकी वेदी के सींगों के बीच काटे गए थे।
2 उनके बच्चे असत्य देवताओं को अर्पित की गई वेदी को याद रखते हैं।
वे अशेरा को अर्पित किये गए लकड़ी के खंभे को याद रखते हैं।
वे उन चीज़ों को हरे पेड़ों के नीचे
और पहाड़ियों पर याद करते हैं।

3 वे उन चीजों को खुले स्थान के पहाड़ों पर याद करते हैं।
यहूदा के लोगों के पास सम्पत्ति और खजाने हैं।
मैं उन चीज़ों को दूसरे लोगों को दूँगा।
मैं तुम्हारे देश के सभी उच्च स्थानों को नष्ट करुँगा।
तुमने उन स्थानों पर पूजा करके पाप किया है।
4 तुम उस भूमि को खोओगे जिसे मैंने तुम्हें दी।
मैं तुम्हारे शत्रुओं को तुम्हें उनके दास की तरह
उस भूमि में ले जाने दूँगा जिसके बारे में तुम नहीं जानते।
क्यों क्योंकि मैं बहुत क्रोधित हूँ।
मेरा क्रोध तप्त अग्नि सा है,
और तुम सदैव के लिये जल जाओगे।"

जनता में विश्वास एवं परमेश्वर में विश्वास

5 यहोवा यह सब कहता है,
"जो लोग केवल दूसरे लोगों में विश्वास करते हैं
उनका बुरा होगा।
जो शक्ति के लिये केवल दूसरों के सहारे रहते हैं
उनका बुरा होगा।
क्यों क्योंकि उन लोगों ने यहोवा पर विश्वास करना छोड़ दिया है।
6 वे लोग मरुभूमि की झाड़ी की तरह हैं।
वह झाड़ी उस भूमि पर है जहाँ कोई नहीं रहता।
वह झाड़ी गर्म और सूखी भूमि में है।
वह झाड़ी खराब मिट्टी में है।
वह झाड़ी उन अच्छी चीज़ों को नहीं जानती जिन्हें परमेश्वर दे सकता हैं।

7 "किन्तु जो व्यक्ति यहोवा में विश्वास करता है,
आशीर्वाद पाएगा।
क्यों क्योंकि यहोवा उसको ऐसा दिखायेगा कि

उन पर विश्वास किया जा सके।
8 वह व्यक्ति उस पेड़ की तरह शक्तिशाली होगा
जो पानी के पास लगाया गया हो।
उस पेड़ की लम्बी जड़ें होती हैं जो पानी पाती हैं।
वह पेड़ गर्मी के दिनों से नहीं डरता
इसकी पत्तियाँ सदा हरी रहती हैं।
यह वर्ष के उन दिनों में परेशान नहीं होता जब वर्षा नहीं होती।
उस पेड़ में सदा फल आते हैं।

9 "व्यक्ति का दिमाग बड़ा कपटी होता है।
दिमाग बहुत बीमार भी हो सकता है
और कोई भी व्यक्ति दिमाग को ठीक ठीक नहीं समझता।
10 किन्तु मैं यहोवा हूँ और मैं व्यक्ति के हृदय को जान सकता हूँ।
मैं व्यक्ति के दिमाग की जाँच कर सकता हूँ।
अत: मैं निर्णय कर सकता हूँ कि हर एक व्यक्ति को क्या मिलना चाहिये
मैं हर एक व्यक्ति को उसके लिये ठीक भुगतान कर सकता हूँ जो वह करता है।

11 कभी कभी एक चिड़िया उस अंडे से बच्चा निकालती है
जिसे उसने नहीं दिया।
वह व्यक्ति जो धन के लिये ठगता है,
उस चिड़िया के समान है।
जब उस व्यक्ति की आधी आयु समाप्त होगी
तो वह उस धन को खो देगा।
अपने जीवन के अन्त में यह स्पष्ट हो जाएगा कि
वह एक मूर्ख व्यक्ति था।"

12 आरम्भ ही से हमारा मन्दिर परमेश्वर के लिये
एक गौरवशाली सिंहासन था।

यह एक बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है।
13 हे यहोवा, तू इस्राएल की आशा है।
हे यहोवा, तू अमृत जल के सोते के समान है।
यदि कोई तेरा अनुसरण करना छोड़ेगा
तो उसका जीवन बहुत घट जाएगा।

यिर्मयाह की तीसरी शिकायत

14 हे यहोवा, यदि तू मुझे स्वस्थ करता है,
मैं सचमुच स्वस्थ हो जाऊँगा।
मेरी रक्षा कर, और मेरी सचमुच रक्षा हो जायेगी।
हे यहोवा, मैं तेरी स्तुति करता हूँ!
15 यहूदा के लोग मुझसे प्रश्न करते रहते हैं।
वे पूछते रहते हैं, "यिर्मयाह, यहोवा के यहाँ का सन्देश कहाँ है?
हम लोग देखें कि सन्देश सत्य प्रमाणित होता है"

16 हे यहोवा, मैं तुझसे दूर नहीं भागा,
मैंने तेरा अनुसरण किया है।
तूने जैसा चाहा वैसा गडेरिया मैं बना।
मैं नहीं चाहता कि भयंकर दिन आएं।
यहोवा तू जानता है जो कुछ मैंने कहा।
जो हो रहा है, तू सब देखता है।
17 हे यहोवा, तू मुझे नष्ट न कर।
मैं विपत्ति के दिनों में तेरा आश्रित हूँ।
18 लोग मुझे चोट पहुँचा रहे हैं।
उन लोगों को लज्जित कर।
किन्तु मुझे निराश न कर।
उन लोगों को भयभीत होने दो।
किन्तु मुझे भयभीत न कर।

मेरे शत्रुओं पर भयंकर विनाश का दिन ला उन्हें तोड़ और
उन्हें फिर तोड़।

सब्त दिवस को पवित्र रखना

19 यहोवा ने मुझसे ये बातें कहीं, "यिर्मयाह, जाओ और यरूशलेम
के जन—द्वार पर खड़े हो जाओ, जहाँ से यहूदा के राजा अन्दर आते
और बाहर जाते हैं। मेरे लोगों को मेरा सन्देश दो और तब यरूशलेम
के अन्य सभी द्वारों पर जाओ और यही काम करो।"
20 उन लोगों से कहो: "यहोवा के सन्देश को सुनो। यहूदा के
राजाओं, सुनो। यहूदा के तुम सभी लोगों, सुनो। इस द्वार से यरूशलेम
में आने वाले सभी लोगों, मेरी बात सुनो। 21 यहोवा यह बात कहता
है: इस बात में सावधान रहो कि सब्त के दिन सिर पर बोझ लेकर
न चलो और सब्त के दिन यरूशलेम के द्वारों से बोझ न लाओ।
22 सब्त के दिन अपने घरों से बोझ बाहर न ले जाओ। उस दिन
कोई काम न करो। मैंने यही आदेश तुम्हारे पूर्वजों को दिया था।
23 किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने मेरे इस आदेश का पालन नहीं किया।
उन्होंने मेरी ओर ध्यान नहीं दिया। तुम्हारे पूर्वज बहुत हठी थे।
मैंने उन्हें दण्ड दिया किन्तु इसका कोई अच्छा फल नहीं निकला।
उन्होंने मेरी एक न सुनी। 24 किन्तु तुम्हें मेरी आज्ञा का पालन करने
में सावधान रहना चाहिये।" यह सन्देश यहोवा का है। "तुम्हें सब्त
के दिन यरूशलेम के द्वारों से बोझ नहीं लाना चाहिये। तुम्हें सब्त
के दिन को पवित्र दिन बनाना चाहिये। तुम, उस दिन कोई भी काम
नहीं करोगे।
25 " 'यदि तुम इस आदेश का पालन करोगे तो राजा जो दाऊद के
सिंहासन पर बैठेंगे, यरूशलेम के द्वारों से आएंगे। वे राजा अपने रथों
और घोड़ों पर सवार होकर आएंगे। यहूदा और इस्राएल के लोगों
के प्रमुख उन राजाओं के साथ होंगे। यरूशलेम नगर में सदैव रहने
वाले लोग यहाँ होंगे। 26 यहूदा के नगरों से लोग यरूशलेम आएंगे।
लोग यरूशलेम को उन छोटे गाँवों से आएंगे जो इसके चारों ओर हैं।

लोग उस प्रदेश से आएंगे जहाँ बिन्यामीन का परिवार समूह रहता
है। लोग पश्चिमी पहाड़ की तराइयों तथा पहाड़ी प्रदेशों से आएंगे
और लोग नेगव से आएंगे। वे सभी लोग होमबलि, बलि, अन्नबलि,
सुगन्धि और धन्यवाद भेंट लेकर आएंगे। वे उन भेंटों और बलियों
को यहोवा के मन्दिर को लाएंगे।
27 " 'किन्तु यदि तुम मेरी बात नहीं सुनते और मेरे आदेश को
नहीं मानते तो बुरी घटनायें होंगी। यदि तुम सब्त के दिन यरूशलेम
के द्वार से बोझ ले जाते हो तब तुम उसे पवित्र दिन नहीं रखते। इस
दशा में मैं ऐसे आग लगाऊँगा जो बुझाई नहीं जा सकती। वह आग
यरूशलेम के द्वारों से आरम्भ होगी और महलों को भी जला देगी।"

18

कुम्हार और मिट्टी

1 यह यहोवा का वह सन्देश है जो यिर्मयाह को मिला: 2 "यिर्मयाह,
कुम्हार के घर जाओ। मैं अपना सन्देश तुम्हें कुम्हार के घर पर
दूँगा।"

3 अत: मैं कुम्हार के घर गया। मैंने कुम्हार को चाक पर मिट्टी से
बर्तन बनाते देखा। 4 वह एक बर्तन मिट्टी से बना रहा था। किन्तु
बर्तन में कुछ दोष था। इसलिये कुम्हार ने उस मिट्टी का उपयोग
फिर किया और उसने दूसरा बर्तन बनाया। उसने अपने हाथों का
उपयोग बर्तन को वह रूप देने के लिये किया जो रूप वह देना
चाहता था।

5 तब यहोवा से सन्देश मेरे पास आया, 6 "इस्राएल के परिवार,
तुम जानते हो कि मैं (परमेश्वर) वैसा ही तुम्हारे साथ कर सकता
हूँ। तुम कुम्हार के हाथ की मिट्टी के समान हो और मैं कुम्हार की
तरह हूँ।" 7 "ऐसा समय आ सकता है, जब मैं एक राष्ट्र या राज्य
के बारे में बाते करूँ। मैं यह कह सकता हूँ कि मैं उस राष्ट्र को
उखाड़ फेंकूँगा या यह भी हो सकता है कि मैं यह कहूँ कि मैं उस

राष्ट्र को उखाड़ गिराऊँगा और उस राष्ट्र या राज्य को नष्ट कर
दूँगा। 8 किन्तु उस राष्ट्र के लोग अपने हृदय और जीवन को बदल
सकते हैं। उस राष्ट्र के लोग बुरे काम करना छोड़ सकते हैं। तब
मैं अपने इरादे को बदल दूँगा। मैं उस राष्ट्र पर विपत्ति ढाने की
अपनी योजना का अनुसरण करना छोड़ सकता हूँ। 9 कभी ऐसा
अन्य समय आ सकता है जब मैं किसी राष्ट्र के बारे में बातें करुँ।
मैं यह कह सकता हूँ कि मैं उस राष्ट्र का निर्माण करुँगा और उसे
स्थिर करुँगा। 10 किन्तु मैं यह देख सकता हूँ कि मेरी आज्ञा का
पालन न करके वह राष्ट्र बुरा काम कर रहा है। तब मैं उस अच्छाई
के बारे में फिर सोचूँगा जिसे देने की योजना मैंने उस राष्ट्र के लिये
बना रखी है।

11 "अत: यिर्मयाह, यहूदा के लोगों और यरूशलेम में जो लोग
रहते हैं उनसे कहो, "यहोवा जो कहता है वह यह है: अब मैं सीधे
तुम लोगों के लिये विपत्ति का निर्माण कर रहा हूँ। मैं तुम लोगों के
विरुद्ध योजना बना रहा हूँ। अत: उन बुरे कामों को करना बन्द करो
जो तुम कर रहे हो। हर एक व्यक्ति को बदलना चाहिये और अच्छा
काम करना आरम्भ करना चाहिये।" 12 किन्तु यहूदा के लोग उत्तर
देंगे, "एसी कोशिश करने से कुछ नहीं होगा। हम वही करते रहेंगे
जो हम करना चाहते हैं। हम लोगों में हर एक वही करेगा जो हठी
और बुरा हृदय करना चाहता है।"

13 उन बातों को सुनो जो यहोवा कहता है,

"दूसरे राष्ट्र के लोगों से यह प्रश्न करो:
'क्या तुमने कभी किसी की वे बुराई करते हुये सुना है जो
इस्राएल ने किया है।'
अन्य के बारे में इस्राएल द्वारा की गई बुराई का करना सुना है
इस्राएल परमेश्वर की दुल्हन के समान विशेष है।

14 तुम जानते हो कि चट्टानों कभी स्वत:
मैदान नहीं छोड़तीं।
तुम जानते हो कि लबानोन के पहाड़ों के ऊपर की
बर्फ कभी नहीं पिघलती।
तुम जानते हो कि शीतल बहने वाले झरने कभी नहीं सूखते।
15 किन्तु हमारे लोग हमें भूल चुके हैं,
वे व्यर्थ देवमूर्तियों की बलि चढ़ाते हैं।
मेरे लोग जो कुछ करते हैं उनसे ठोकर खाकर गिरते हैं।
वे अपने पूर्वजों की पुरानी राहों में ठोकर खाकर गिरते फिरते हैं।
मेरे लोगों को ऊबड़ खाबड़ सड़कों और तुच्छ
राजमार्गों पर चलना शायद अधिक पसन्द है,
इसकी अपेक्षा कि वे मेरा अनुसरण अच्छी सड़क पर करें।
16 अत: यहूदा देश एक सूनी मरुभूमि बनेगा।
इसके पास से गुजरते लोग हर बार सीटी बजाएंगे
और सिर हिलायेंगे।
इस बात से चकित होगें कि देश कैसे बरबाद किया गया।
17 मैं यहूदा के लोगों को उनके शत्रुओं के सामने बिखेरुँगा।
प्रबल पूर्वी आँधी जैसे चीज़ों के चारों ओर उड़ती है वैसे ही मैं उनको बिखेरुँगा।
मैं उन लोगों को नष्ट करूँगा।
उस समय वे मुझे अपनी सहायता के लिये आता नहीं देखेंगे।
नहीं, वे मुझे अपने को छोड़ता देखेंगे।”

यिर्मयाह की चौथी शिकायत

18 तब यिर्मयाह के शत्रुओं ने कहा, “आओ, हम यिर्मयाह के
विरुद्ध षडयन्त्र रचे। निश्चय ही, याजक द्वारा दी गई व्यवस्था की
शिक्षा मिटेगी नहीं और बुद्धिमान लोगों की सलाह अब भी हम लोगों
को मिलेगी। हम लोगों को नबियों के सन्देश भी मिलेंगे। अत: हम

लोग उसके बारे में झूठ बोलें। उससे वह बरबाद होगा। वह जो कुछ कहता है, हम किसी पर ध्यान नहीं देंगे।”

19 हे यहोवा, मेरी सुन और मेरे विरोधियों की सुन,
तब तय कर कि कौन ठीक है
20 मैंने यहूदा के लोगों के लिये अच्छा किया है।
किन्तु अब वे उल्टे बदले में बुराई दे रहे हैं।
वे मुझे फँसा रहे हैं।
वे मुझे धोखा देकर फँसाने और मार डालने का प्रयत्न कर रहे हैं।
21 अत: अब उनके बच्चों को अकाल में भूखों मरने दें।
उनके शत्रुओं को उन्हें तलवार से हरा डालने दें।
उनकी पत्नियों को शिशु रहित होने दें।
यहूदा के लोगों को मृत्यु के घाट उतारे जाने दें।
उनकी पत्नियों को विधवा होने दें।
यहूदा के लोगों को मत्यु के घाट उतारे जाने दें।
युवकों को युद्ध में तलवार के घाट उतार दिये जाने दे।
22 उनके घरों में रूदन मचनें दे। उन्हें तब रोने दे
जब तू अचानक उनके विरुद्ध शत्रु को लाए।
इसे होने दे क्योंकि हमारे शत्रुओं ने मुझे धोखा दे कर फँसाने की कोशिश की है।
उन्होंने मेरे फँसने के लिये गुप्त जाल डाला है।
23 हे यहोवा, मुझे मार डालने की उनकी योजना को तू जानता है।
उनके अपराधों को तू क्षमा न कर।
उनके पापों को मत धों। मेरे शत्रुओं को नष्ट कर।
क्रोधित रहते समय ही उन लोगों को दण्ड दे।

19

टूटी सुराही

1 यहोवा ने मुझसे कहा: "यिर्मयाह, जाओ और किसी कुम्हार से
एक मिट्टी का सुराही खरीदो। 2 ठीकरा—द्वार के सामने के पास बेन
हिन्नोम घाटी को जाओ। अपने साथ लोगों के अग्रजों (प्रमुखों) और
कुछ याजकों को लो। उस स्थान पर उनसे वह कहो जो मैं तुमसे
कहता हूँ। 3 अपने साथ के लोगों से कहो, 'यहूदा के राजाओं और
इस्राएल के लोगों, यहोवा के यहाँ से यह सन्देश सुनो। इस्राएल के
लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है:
मैं इस स्थान पर शीघ्र ही एक भयंकर घटना घटित कराऊँगा। हर
एक व्यक्ति जो इसे सुनेगा, चकित और भयभीत होगा। 4 मैं ये काम
करुँगा क्योंकि यहूदा के लोगों ने मेरा अनुसरण करना छोड़ दिया
है। उन्होंने इसे विदेशी देवताओं का स्थान बना दिया है। यहूदा के
लोगों ने इस स्थान पर अन्य देवताओं के लिये बलियाँ जलाई हैं।
बहुत पहले लोग उन देवताओं को नहीं पूजते थे। उनके पूर्वज उन
देवताओं को नहीं पूजते थे। ये अन्य देशों के नये देवता हैं। यहूदा
के राजाओं ने भोले बच्चों के खून से इस स्थान को रंगा है। 5 यहूदा
के राजाओं ने बाल देवता के लिये उच्च स्थान बनाए हैं। उन्होंने उन
स्थानों का उपयोग अपने पुत्रों को आग में जलाने के लिये किया।
उन्होंने अपने पुत्रों को बाल के लिये होमबलि के रूप में जलाया।
मैंने उन्हें यह करने को नहीं कहा। मैंने तुमसे यह नहीं माँगा कि तुम
अपने पुत्रों को बलि के रूप में भेंट करो। मैंने कभी इस सम्बन्ध में
सोचा भी नहीं। 6 अब लोग उस स्थान का हिन्नोम की घाटी तोपेत
कहते हैं। किन्तु मैं तुम्हें यह चेतावनी देता हूँ, वे दिन आ रहे हैं। यह
सन्देश यहोवा का है: जब लोग इस स्थान को वध की घाटी कहेंगे।
7 इस स्थान पर मैं यहूदा और यरूशलेम के लोगों की योजनाओं को
नष्ट करूँगा। शत्रु इन लोगों का पीछा करेगा और मैं इस स्थान पर

यहूदा के लोगों को तलवार के घाट उतर जाने दूँगा और मैं उनके
शवों को पक्षियों और जंगली जानवरों का भोजन बनाऊँगा। 8 मैं इस
नगर को पूरी तरह नष्ट करुँगा। जब लोग यरूशलेम से गुजरेंगे तो
सीटी बजाएंगे और सिर हिलायेंगे। उन्हें विस्मय होगा जब वे देखेंगे
कि नगर किस प्रकार ध्वस्त किया गया है। 9 शत्रु अपनी सेना को
नगर के चारों ओर लाएगा। वह सेना लोगों को भोजन लेने बाहर
नहीं आने देगी। अत: नगर में लोग भूखों मरने लगेंगे। वे इतने भूखे
हो जाएंगे कि अपने पुत्र और पुत्रियों के शरीर को खाने लगेंगे और
तब वे एक दूसरे को खाने लगेंगे।'

10 "यिर्मयाह, तुम ये बातें लोगों से कहोगे और जब वे देख रहे
हों तभी तुम उस सुराही को तोड़ना। 11 उस समय, तुम यह कहना,
सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'यहुदा राष्ट्र और यरूशलेम नगर को
वैसे ही तोड़ूँगा जैसे कोई मिट्टी का सुराही तोड़ता है। यह सुराही फिर
जोड़कर बनाया नहीं जा सकता। यहूदा राष्ट्र के लिये भी यही सब
होगा। मरे लोग इस तोपेत में तब तक दफनाए जाएंगे जब तक यहाँ
जगह नहीं रह जाएगी। 12 मैं यह इन लोगों और इस स्थान के साथ
ऐसा करूँगा। मैं इस नगर को तोपेत की तरह कर दूँगा।' ह सन्देश
यहोवा का है। 13 'यरूशलेम के घर तथा राजा के महल इतने गन्दे
होंगे जितना यह स्थान तोपेत है। राजा के महल इस स्थान तोपेत
की तरह बरबाद होंगे। क्यों क्योंकि लोगों ने उन घरों की छत पर
असत्य देवताओं की पूजा की। उन्होंने ग्रह—नक्षत्रों की पूजा की
और उनके सम्मान में बलि जलाई। उन्होंने असत्य देवताओं को
पेय भेंट दी।' "

14 तब यिर्मयाह ने तोपेत को छोड़ा जहाँ यहोवा ने उपदेश देने को
कहा था। यिर्मयाह यहोवा के मन्दिर को गया और उसके आँगन में
खड़ा हुआ। यिर्मयाह ने सभी लोगों से कहा, 15 "इस्राएल का परमेश्वर
सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'मैंने कहा है कि मैं यरूशलेम
और उसके चारों ओर के गाँवों पर अनेक विपत्तियाँ ढाऊँगा। मैं
इन्हें शीघ्र घटित कराऊँगा। क्यों क्योंकि लोग बहुत हठी हैं वे मेरी

सुनने और मेरी आज्ञा का पालन करने से इन्कार करते हैं।' "

20

यिर्मयाह और पशहूर

1 पशहूर नामक एक व्यक्ति याजक था। वह यहोवा के मन्दिर
में उच्चतम अधिकारी था। पशहूर इम्मेर नामक व्यक्ति का पुत्र था।
पशहूर ने यिर्मयाह को मन्दिर के आँगन में उन बातों का उपदेश
करते सुना। 2 इसलिये उसने यिर्मयाह नबी को पिटवा दिया और
उसने यिर्मयाह के हाथ और पैरों को विशाल काष्ठ के लट्ठों के बीच
बन्द कर दिया। यह मन्दिर के ऊपरी बिन्यामीन द्वार पर था। 3 अगले
दिन पशहूर ने यिर्मयाह को काष्ठ के लट्ठों के बीच से निकाला। तब
यिर्मयाह ने पशहूर से कहा, "यहोवा का दिया तुम्हारा नाम पशहूर
नहीं है। अब यहोवा की ओर से तुम्हारा नाम सर्वत्र आतंक है। 4 यही
तुम्हारा नाम है, क्योंकि यहोवा कहता है, 'मैं शीघ्र ही तुमको अपने
आपके लिये आतंक बनाऊँगा। मैं शीघ्र ही तुम्हें तुम्हारे सभी मित्रों
के लिये आतंक बनाऊँगा। तुम शत्रुओं द्वारा अपने मित्रों को तलवार
के घाट उतारते देखोगे। मैं यहूदा के सभी लोगों को बाबुल के राजा
को दे दूँगा। वह यहूदा के लोगों को बाबुल देश को ले जाएगा और
उसकी सेना यहूदा के लोगों को अपनी तलवार के घाट उतारेगी।
5 यहूदा के लोगों ने चीज़ों को बनाने में कठिन परिश्रम किया और
धनी हो गए। किन्तु मैं वे सारी चीज़ें उनके शत्रुओं को दे दूँगा।
यरूशलेम के राजा के पास बहुत से धन भण्डार हैं। किन्तु मैं उन
सभी धन भण्डारों को शत्रु को दें दूँगा। शत्रु उन चीज़ों को लेगा और
उन्हें बाबुल देश को ले जाएगा। 6 और पशहूर तुम और तुम्हारे घर में
रहने वाले सभी लोग यहाँ से ले जाए जाओगे। तुमको जाने को और
बाबुल देश में रहने को विवश किया जायेगा। तुम बाबुल में मरोगे

और तुम उस विदेश में दफनाए जाओगे। तुमने अपने मित्रों को झूठा उपदेश दिया। तुमने कहा कि ये घटनायें नहीं घटेंगीं। किन्तु तुम्हारे सभी मित्र भी मरेंगे और बाबुल में दफनाए जायेंगे।' "

यिर्मयाह की पाँचवीं शिकायत

7 हे यहोवा, तूने मुझे धोखा दिया
और मैं निश्चय ही मूर्ख बनाया गया।
तू मुझसे अधिक शक्तिशाली है अत: तू विजयी हुआ।
मैं मजाक बन कर रह गया हूँ।
लोग मुझ पर हँसते हैं
और सारा दिन मेरा मजाक उड़ाते हैं।
8 जब भी मैं बोलता हूँ, चीख पड़ता हूँ।
मैं लगातार हिंसा और तबाही के बारे में चिल्ला रहा हूँ।
मैं लोगों को उस सन्देश के बारे में बताता हूँ
जिसे मैंने यहोवा से प्राप्त किया।
किन्तु लोग केवल मेरा अपमान करते हैं
और मेरा मजाक उड़ाते हैं।
9 कभी—कभी मैं अपने से कहता हूँ:
"मैं यहोवा के बारे में भूल जाऊँगा।
मैं अब आगे यहोवा के नाम पर नहीं बोलूँगा।"
किन्तु यदि मैं ऐसा कहता हूँ तो यहोवा का सन्देश
मेरे भीतर भड़कती ज्वाला सी हो जाती है।
मुझे ऐसा लगता है कि यह अन्दर तक मेरी हड्डियों को जला रही है।
मैं अपने भीतर यहोवा के सन्देश को रोकने के प्रयत्न में थक जाता हूँ
और अन्तत: मैं इसे अपने भीतर रोकने में समर्थ नहीं हो पाता।

10 मैं अनेक लोगों को दबी जुबान अपने विरुद्ध बातें करता सुनता हूँ।
सर्वत्र मैं वह सब सुनता हूँ जो मुझे भयभीत करते हैं।
यहाँ तक कि मेरे मित्र भी मेरे विरुद्ध बातें करते हैं।
चलो हम अधिकारियों को इसके बारे में सूचित करें।
लोग केवल इस प्रतीक्षा में हैं कि मैं कोई गलती करूँ।
वे कह रहे हैं, "आओ हम झूठ बोलें
और कहें कि उसने कुछ बुरे काम किए हैं।
सम्भव है हम यिर्मयाह को धोखा दे सकें।
तब वह हमारे साथ होगा। अन्तत: हम उससे छुटकारा पायेंगे।
तब हम उसे दबोच लेंगे और उससे अपना बदला ले लेंगे।"
11 किन्तु यहोवा मेरे साथ है।
यहोवा एक दृढ़ सैनिक सा है।
अत: जो लोग मेरा पीछा करते हैं, मुँह की खायेंगे।
वे लोग मुझे पराजित नहीं कर सकेंगे।
वे लोग असफल होंगे। वे निराश होंगे।
वे लोग लज्जित होंगे और लोग उस लज्जा को कभी नहीं भूलेंगे।
12 सर्वशक्तिमान यहोवा तू अच्छे लोगों की परीक्षा लेता है।
तू व्यक्ति के दिल और दिमाग को गहराई से देखता है।
मैंने उन व्यक्तियों के विरुद्ध तूझे अनेकों तर्क दिये हैं।
अत: मुझे यह देखना है कि तू उन्हें वह दण्ड देता है
कि नहीं जिनके वे पात्र हैं।
13 यहोवा के लिये गाओ!
यहोवा की स्तुति करो!
यहोवा दीनों के जीवन की रक्षा करता है!
वह उन्हें दुष्ट लोगों की शक्ति से बचाता है!

यिर्मयाह की छठी शिकायत

14 उस दिन को धिक्कार है जिस दिन मेरा जन्म हुआ।
उस दिन को बधाई न दो जिस दिन मैं माँ की कोख में आया।
15 उस व्यक्ति को अभिशाप दो जिसने मेरे पिता को यह सूचना दी
कि मेरा जन्म हुआ है।
उसने कहा था, "तुम्हारा लड़का हुआ है, वह एक लड़का है।"
उसने मेरे पिता को बहुत प्रसन्न किया था जब उसने उनसे यह
कहा था।
16 उस व्यक्ति को वैसा ही होने दो जैसे वे नगर जिन्हें यहोवा ने नष्ट
किया।
यहोवा ने उन नगरों पर कुछ भी दया नहीं की।
उस व्यक्ति को सवेरे युद्ध का उद्घोष सुनने दो,
और दोपहर को युद्ध की चीख सुनने दो।
17 तूने मुझे माँ के पेट में ही, क्यों न मार डाला
तब मेरी माँ की कोख कब्र बन जाती,
और मैं कभी जन्म नहीं ले सका होता।
18 मुझे माँ के पेट से बाहर क्यों आना पड़ा
जो कुछ मैंने पाया है वह परेशानी और दु:ख है
और मेरे जीवन का अन्त लज्जाजनक होगा।

21

राजा सिदकिय्याह के निवेदन को परमेश्वर अस्वीकार करता है

1 यह यहोवा का वह सन्देश है जो यिर्मयाह को मिला। यह सन्देश
तब आया जब यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने पशहूर नामक एक
व्यक्ति तथा सपन्याह नामक एक याजक को यिर्मयाह के पास भेजा।
पशहूर मल्किय्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था। सपन्याह मासेयाह
नामक व्यक्ति का पुत्र था। पशहूर और सपन्याह यिर्मयाह के लिये
एक सन्देश लेकर आए। 2 पशहूर और सपन्याह ने यिर्मयाह से कहा,
"यहोवा से हम लोगों के लिए प्रार्थना करो। यहोवा से पूछो कि क्या

होगा हम जानना चाहते हैं क्योंकि बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर हम लोगों पर आक्रमण कर रहा है। सम्भव है यहोवा हम लोगों के लिये वैसे ही महान कार्य करे जैसा उसने बीते समय में किया। सम्भव है कि यहोवा नबूकदनेस्सर को आक्रमण करने से रोक दे या उसे चले जाने दे।"

3 तब यिर्मयाह ने पशहूर और सपन्याह को उत्तर दिया। उसने
कहा, "राजा सिदकिय्याह से कहो, 4 'इस्राएल का परमेश्वर यहोवा
जो कहता है, यह वह है: तुम्हारे हाथों में युद्ध के अस्त्र शस्त्र हैं। तुम उन अस्त्र शस्त्रों का उपयोग अपनी सुरक्षा के लिये बाबुल के राजा और कसदियों के विरुद्ध कर रहे हो। किन्तु मैं उन अस्त्रों को व्यर्थ कर दूँगा।

" 'बाबुल की सेना नगर के चारों ओर दीवार के बाहर है। वह सेना नगर के चारों ओर है। शीघ्र ही मैं उस सेना को यरूशलेम
में ले आऊँगा। 5 मैं स्वयं यहूदा तुम लोगों के विरुद्ध लड़ूँगा। मैं
अपने शक्तिशाली हाथों से तुम्हारे विरुद्ध लड़ूँगा। मैं तुम पर बहुत अधिक क्रोधित हूँ, अत: मैं अपनी शक्तिशाली भुजाओं से तुम्हारे विरुद्ध लड़ूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध घोर युद्ध करुँगा और दिखाऊँगा
कि मैं कितना क्रोधित हूँ। 6 मैं यरूशलेम में रहने वाले लोगों को
मार डालूँगा। मैं लोगों और जानवरों को मार डालूँगा। वे उस
भयंकर बीमारी से मरेंगे जो पूरे नगर में फैल जाएगी। 7 जब यह
हो जायेगा तब उसके बाद,' " यह सन्देश यहोवा का है, " 'मैं यहूदा के राजा सिदकिय्याह को बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को दूँगा। मैं सिदकिय्याह के अधिकारियों को भी नबूकदनेस्सर को दूँगा। यरूशलेम के कुछ लोग भयंकर बीमारी से नहीं मरेंगे। कुछ लोग तलवार के घाट नहीं उतारे जाएंगे। उनमें से कुछ भूखों नहीं मरेंगे किन्तु मैं उन लोगों को नबूकदनेस्सर को दूँगा। मैं यहूदा के शत्रु को विजयी बनाऊँगा। नबूकदनेस्सर की सेना यहूदा के लोगों को मार

डालना चाहती है। इसलिये यहूदा और यरूशलेम के लोग तलवार के घाट उतार दिए जाएंगे। नबूकदनेस्सर कोई दया नहीं दिखायेगा। वह उन लोगों के लिए अफसोस नहीं करेगा।'

8 "यरूशलेम के लोगों से ये बातें भी कहो। यहोवा ये बातें कहता है, 'समझ लो कि मैं तुम्हें जीने और मरने में से एक को चुनने दूँगा।
9 कोई भी व्यक्ति जो यरूशलेम में ठहरेगा, मरेगा। वह व्यक्ति तलवार, भूख या भयंकर बीमारी से मरेगा किन्तु जो व्यक्ति यरूशलेम के बाहर जायेगा और बाबुल की सेना को आत्म समर्पण करेगा, जीवित रहेगा। उस सेना ने नगर को घेर लिया है। अत: कोई व्यक्ति नगर में भोजन नहीं ला सकता। किन्तु जो कोई नगर को छोड़ देगा, वह अपने जीवन को बचा लेगा।
10 मैंने यरूशलेम नगर पर विपत्ति ढाने का निश्चय कर लिया है। मैं नगर की सहायता नहीं करुँगा। यह सन्देश यहोवा का है। मैं यरूशलेम के नगर को बाबुल के राजा को दूँगा। वह इसे आग से जलायेगा।' "

11 "यहूदा के राज परिवार से यह कहो, 'यहोवा के सन्देश को सुनो।
12 दाऊद के परिवार यहोवा यह कहता है:

" 'तुम्हें प्रतिदिन लोगों का निष्पक्ष न्याय करना चाहिए।
अपराधियों से उनके शिकारों की रक्षा करो।
यदि तुम ऐसा नहीं करते तो मैं बहुत क्रोधित होऊँगा।
मेरा क्रोध ऐसे आग की तरह होगा जिसे कोई व्यक्ति बुझा नहीं सकता।
यह घटित होगा क्योंकि तुमने बुरे काम किये हैं।'

13 "यरूशलेम, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ।
तुम पर्वत की चोटी पर बैठी हो।
तुम इस घाटी के ऊपर एक रानी की तरह बैठी हो।
यरूशलेम के लोगों, तुम कहते हो,

‘कोई भी हम पर आक्रमण नहीं कर सकता।
कोई भी हमारे दृढ़ नगर में घुस नहीं सकता।’ ”
किन्तु यहोवा के यहाँ से उस सन्देश को सुनो:

14 “तुम वह दण्ड पाओगे जिसके पात्र तुम हो।
मैं तुम्हारे वनों में आग लगाऊँगा।
वह आग तुम्हारे चारों ओर की हर एक चीज़ जला देगी।”

22

बुरे राजाओं के विरुद्ध न्याय

1 यहोवा ने कहा, “यिर्मयाह राजा के महल को जाओ। यहूदा
के राजा के पास जाओ और वहाँ उसे इस सन्देश का उपदेश दो।
2 ‘यहूदा के राजा, यहोवा के यहाँ से सन्देश सुनो। तुम दाऊद के
सिंहासन से शासन करते हो, अत: सुनो। राजा, तुम्हें और तुम्हारे
अधिकारियों को यह अच्छी तरह सुनना चाहिये। यरूशलेम के द्वारों
से आने वाले सभी लोगों को यहोवा का सन्देश को सुनना चाहिये।
3 यहोवा कहता है: वे काम करो जो अच्छे और न्यायपूर्ण हों। उस
व्यक्ति की रक्षा जिसकी चोरी की गई हो उस व्यक्ति से करो जिसने
चोरी की है। विदेशी अनाथ बच्चों और विधवाओं को मत मारो।
4 यदि तुम इन आदेशों का पालन करते हो तो जो घटित होगा वह
यह है: जो राजा दाऊद के सिंहासन पर बैठेंगे, वे यरूशलेम नगर में
नगर द्वारों से आते रहेंगे। वे राजा नगर द्वारों से अपने अधिकारियों
सहित आएंगे। वे राजा, उनके उत्तराधिकारी और उनके लोग रथों
और घोड़ों पर चढ़कर आएंगे। 5 किन्तु यदि तुम इन आदेशों का
पालन नहीं करोगे तो यहोवा यह कहता है: मैं अर्थात् यहोवा प्रतिज्ञा
करता हूँ कि राजा का महल ध्वस्त कर दिया जायेगा यह चट्टानों
का एक ढेर रह जायेगा।’ ”

6 यहोवा उन महलों के बारे में यह कहता है जिनमें यहूदा के राजा
रहते हैं:

“गिलाद वन की तरह यह महल ऊँचा है।
यह लबानोन पर्वत के समान ऊँचा है।
किन्तु मैं इसे सचमुच मरुभूमि सा बनाऊँगा।
यह महल उस नगर की तरह सूना होगा जिसमें कोई व्यक्ति न रहता हो।
7 मैं लोगों को महल को नष्ट करने भेजूँगा।
हर एक व्यक्ति के पास वे औजार होंगे जिनसे वह इस महल को नष्ट करेगा।
वे लोग तुम्हारी देवदार की मजबूत और सुन्दर कड़ियों को काट डालेंगे।
वे लोग उन कड़ियों को आग में फेंक देंगे।”

8 “अनेक राष्ट्रों से लोग इस नगर से गुजरेंगे। वे एक दूसरे से
पूछेंगे, ‘यहोवा ने यरूशलेम के साथ ऐसा भयंकर काम क्यों किया
यरूशलेम कितना महान नगर था।’ 9 उस प्रश्न का उत्तर यह होगा,
‘परमेश्वर ने यरूशलेम को नष्ट किया, क्योंकि यहूदा के लोगों ने
यहोवा अपने परमेश्वर के साथ की गई वाचा को मानना छोड़ दिया।
उन लोगों ने अन्य देवताओं की पूजा और सेवाएँ की।’ ”

राजा यहोशाहाज (शल्लूम) के विरुद्ध न्याय

10 उस राजा के लिये मत रोओ जो मर गया।
उसके लिये मत रोओ।
किन्तु उस राजा के लिये फूट—फूट कर रोओ
जो यहाँ से जा रहा है।
उसके लिये रोओ, क्योंकि वह फिर कभी वापस नहीं आएगा।
शल्लूम (यहोशाहाज) अपनी जन्मभूमि को फिर कभी नहीं देखेगा।

11 यहोवा योशिय्याह के पुत्र शल्लूम (यहोशाहाज) के बारे में जो
कहता है, वह यह है (शल्लूम अपने पिता योशिय्याह की मृत्यु के
बाद यहूदा का राजा हुआ।) "शल्लूम (यहोशाहाज) यरूशलेम से दूर
चला गया। वह फिर यरूशलेम को वापस नहीं लौटेगा। 12 शल्लूम
(यहोशाहाज) वहीं मरेगा जहाँ उसे मिस्री ले जाएँगे। वह इस भूमि
को फिर नहीं देखेगा।"

राजा यहोयाकीम के विरुद्ध न्याय

13 राजा यहोयाकीम के लिये यह बहुत बुरा होगा।
वह बुरे कर्म कर रहा है अत: वह अपना महल बना लेगा।
वह लोगों को ठग रहा है, अत: वह ऊपर कमरे बना सकता है।
वह अपने लोगों से बेगार ले रहा है।
वह उनके काम की मजदूरी नहीं दे रहा है।

14 यहोयाकीम कहता है, "मैं अपने लिये एक विशाल महल बनाऊँगा।
मैं दूसरी मंजिल पर विशाल कमरे बनाऊँगा।"
अत: वह विशाल खिड़कियों वाला महल बना रहा है।
वह देवदार के फलकों को दीवारों पर मढ़ रहा है और इन पर लाल रंग चढ़ा रहा है।

15 "यहोयाकीम, अपने घर में देवदार की अधिक लकड़ी का उपयोग तुम्हें महान सम्राट नहीं बनाता।
तुम्हारा पिता योशिय्याह भोजन पान पाकर ही सन्तुष्ट था।
उसने वह किया जो ठीक और न्यायपूर्ण था।
योशिय्याह ने वह किया,
अत: उसके लिये सब कुछ अच्छा हुआ।
16 योशिय्याह ने दीन–हीन लोगों को सहायता दी।
योशिय्याह ने वह किया, अत: उसके लिये सब कुछ अच्छा हुआ।

यहोयाकीम “परमेश्वर को जानने” का अर्थ क्या होता है मुझको जानने का अर्थ,
ठीक रहना और न्यायपूर्ण होना है।”
यह सन्देश यहोवा का है।

17 “यहोयाकीम, तुम्हारी आँखें केवल तुम्हारे अपने लाभ को देखती हैं,
तुम सदैव अपने लिये अधिक से अधिक पाने की सोचते हो।
तुम निरपराध लोगों को मारने के लिये इच्छुक रहते हो।
तुम अन्य लोगों की चीज़ों की चोरी करने के इच्छुक रहते हो।”
18 अत: योशिय्याह के पुत्र यहोयाकीम से यहोवा जो कहता है, वह यह है:
“यहूदा के लोग यहोयाकीम के लिये रोएंगे नहीं।
वे आपस में यह नहीं कहेंगे,
‘हे मेरे भाई, मैं यहोयाकीम के बारे में इतना दु:खी हूँ।
हे मेरी बहन, मैं यहोयाकीम के लिए रोएंगे नहीं।’
वे उसके बारे में नहीं कहेंगे,
‘हे स्वामी, हम इतने दु:खी हैं।
हे राजा, हम इतने दु:खी हैं।’
19 यरूशलेम के लोग यहोयाकीम को एक मरे गधे की तरह दफनायेंगे।
वे उसके शव को केवल दूर घसीट ले जाएंगे और वे उसके शव को यरूशलेम के द्वार के बाहर फेंक देंगे।

20 “यहूदा, लबानोन के पर्वतों पर जाओ और चिल्लाओ।
बाशान के पर्वतों में अपना रोना सुनाई पड़ने दो।
अबारीम के पर्वतों में जाकर चिल्लाओ।
क्यों क्योंकि तुम्हारे सभी “प्रेमी” नष्ट कर दिये जाएंगे।

21 “हे यहूदा, तुमने अपने को सुरक्षित समझा,
किन्तु मैंने तुम्हें चेतावनी दी।
मैंने तुम्हें चेतावनी दी,
परन्तु तुमने सुनने से इन्कार किया
तुमने यह तब से किया जब तुम युवती थी
और यहूदा जब से तुम युवती थी,
तुमने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया।
22 हे यहूदा, मेरा दण्ड आँधी की तरह आएगा
और यह तुम्हारे सभी गडेरियों (प्रमुखों) को उड़ा ले जाएगा।
तुमने सोचा था कि अन्य कुछ राष्ट्र तुम्हारी सहायता करेंगे।
किन्तु वे राष्ट्र भी पराजित होंगे।
तब तुम सचमुच निराश होओगी।
तुमने जो सब बुरे काम किये, उनके लिये लज्जित होओगी।

23 “हे राजा, तुम देवदार से बने अपने महल में ऊँचे पर्वत पर रहते हो।
तुम उसी तरह रह रहे हो, जैसा कि पहले लबानोन में रहे हो,
जहाँ से यह लकड़ी लाई गई हैं।
तुम समझते हो कि उँचे पर्वत पर अपने विशाल महल में तुम सुरक्षित हो।
किन्तु तुम सचमुच तब कराह उठोगे जब तुम्हें तुम्हारा दण्ड मिलेगा।
तुम प्रसव करती स्त्री की तरह पीड़ित होगे।”

राजा कोन्याह के विरुद्ध न्याय

24 यह सन्देश यहोवा का है, “मैं निश्चय ही शाश्वत हूँ अत:
यहोयाकीम के पुत्र यहूदा के राजा कोन्याह मैं तुम्हारे साथ ऐसा
करुँगा। चाहे तुम मेरे दायें हाथ की राजमुद्रा ही क्यों न हो, मैं तुम्हें
तब भी बाहर फेकूँगा। 25 कोन्याह मैं तुम्हें बाबुल और कसदियों के

राजा नबूकदनेस्सर को दूँगा। वे ही लोग ऐसे हैं जिनसे तुम डरते
हो। वे लोग तुम्हें मार डालना चाहते हैं। 26 मैं तुम्हें और तुम्हारी माँ
को ऐसे देश में फेकूँगा कि जहाँ तुम दोनों में से कोई भी पैदा नहीं
हुआ था। तुम और तुम्हारी माँ दोनों उसी देश में मरेंगे। 27 कोन्याह
तुम अपने देश में लौटना चाहोगे, किन्तु तुम्हें कभी भी लौटने नहीं
दिया जाएगा।"

28 कोन्याह उस टूटे बर्तन की तरह है जिसे किसी ने फेंक दिया हो।
वह ऐसे बर्तन की तरह है जिसे कोई व्यक्ति नहीं चाहता।
कोन्याह और उसकी सन्तानें क्यों बाहर फेंक दी जायेगी?
वे किसी विदेश में क्यों फेंकें जाएंगे?
29 भूमि, भूमि, यहूदा की भूमि!
यहोवा का सन्देश सुनो!
30 यहोवा कहता है, "कोन्याह के बारे में यह लिख लो:
'वह ऐसा व्यक्ति है जिसके भविष्य में अब बच्चे नहीं होंगे।
कोन्याह अपने जीवन में सफल नहीं होगा।
उसकी सन्तान में से कोई भी
यहूदा पर शासन नहीं करेगा।' "

23

1 "यहूदा के गडरियों (प्रमुखों) के लिये यह बहुत बुरा होगा। वे
गडेरिये भेड़ों को नष्ट कर रहें हैं। वे भेड़ों को मेरी चरागाह से चारों
ओर भगा रहे हैं।" यह सन्देश यहोवा का है।
2 वे गडेरिये (प्रमुख) मेरे लोगों के लिये उत्तरदायी हैं, और
इस्राएल का परमेश्वर यहोवा उन गडेरियों से यह कहता है, "गडेरियों
(प्रमुखों), तुमने मेरी भेड़ों को चारों ओर भगाया है। तुमने उन्हें चले
जाने को विवश किया है। तुमने उनकी देखभाल नहीं रखी है। किन्तु
मैं तुम लोगों को देखूँगा, मैं तुम्हें उन बुरे कामों के लिये दण्ड दूँगा

जो तुमने किये हैं।" यह सन्देश यहोवा के यहाँ से है। 3 "मैंने अपनी
भेड़ों (लोगों) को विभिन्न देशों में भेजा। किन्तु मैं अपनी उन भेड़ों
(लोगों) को एक साथ इकट्ठी करुँगा जो बची रह गई हैं और मैं
उन्हें उनकी चरागाह (देश) में लाऊँगा। जब मेरी भेड़ें (लोग) अपनी
चरागाह (देश) में वापस आएंगी तो उनके बहुत बच्चे होंगे और उनकी
संख्या बढ़ जाएगी। 4 मैं अपनी भेड़ों के लिये नये गडेरिये (प्रमुख)
रखूँगा वे गडेरिये (प्रमुख) मेरी भेड़ों (लोगों) की देखभाल करेंगे और
मेरी भेड़ें (लोग) भयभीत या डरेंगी नहीं। मेरी भेड़ों (लोगों) में से कोई
खोएगी नहीं।" यह सन्देश यहोवा का है।

सच्चा "अंकुर"

5 यह सन्देश यहोवा का है:
"समय आ रहा है
जब मैं दाऊद के कुल में एक सच्चा 'अंकुर' उगाऊँगा।
वह ऐसा राजा होगा जो बुद्धिमत्ता से शासन करेगा
और वह वही करेगा जो देश में उचित और न्यायपूर्ण होगा।
6 उस सच्चे अंकुर के समय में
यहूदा के लोग सुरक्षित रहेंगे और इस्राएल सुरक्षित रहेगा।
उसका नाम यह होगा
यहोवा हमारी सच्चाई हैं।

7 यह सन्देश यहोवा का है, "अत: समय आ रहा है, "जब लोग
भविष्य में यहोवा के नाम पर पुरानी प्रतिज्ञा फिर नहीं करेंगे। पुरानी
प्रतिज्ञा यह है: 'यहोवा जीवित है, यहोवा ही वह है जो इस्राएल के
लोगों को मिस्र देश से बाहर लाया था।' 8 किन्तु अब लोग कुछ नया
कहेंगे, 'यहोवा जीवित है, यहोवा ही वह है जो इस्राएल के लोगों
को उत्तर के देश से बाहर लाया। वह उन्हें उन सभी देशों से बाहर
लाया जिनमें उसने उन्हें भेजा था।' तब इस्राएल के लोग अपने देश
में रहेंगे।"

झूठे नबियों के विरुद्ध न्याय

9 नबियों के लिये सन्देश है:
“मैं बहुत दु:खी हूँ, मेरा हृदय विदीर्ण हो गया है।
मेरी सारी हड्डियाँ काँप रही हैं।
मैं (यिर्मयाह) मतवाले के समान हूँ।
क्यों यहोवा और उसके पवित्र सन्देश के कारण।
10 यहूदा देश ऐसे लोगों से भरा है
जो व्यभिचार का पाप करते हैं।
वे अनेक प्रकार से अभक्त हैं।
यहोवा ने भूमि को अभिशाप दिया और वह बहुत सूख गई।
पौधे चरगाहों में सूख रहे हैं और मर रहे हैं।
खेत मरुभूमि से हो गए हैं।
नबी पापी हैं, वे नबी अपने प्रभाव
और अपनी शक्ति का उपयोग गलत ढंग से करते हैं।
11 “नबी और याजक तक भी पापी हैं।
मैंने उन्हें अपने मन्दिर में पाप करते देखा है।”
यह सन्देश यहोवा का है।
12 अत: मैं उन्हें अपना सन्देश देना बन्द करुँगा।
यह ऐसा होगा मानो वे अन्धकार में चलने को विवश किये गए हों।
यह ऐसा होगा मानो नबियों और याजकों के लिये फिसलन वाली सड़क हो।
उस अंधेरी जगह में वे नबी और याजक गिरेंगे। मैं उन पर आपत्तियाँ ढाऊँगा।
उस समय मैं उन नबियों और याजकों को दण्ड दूँगा।”
यह सन्देश यहोवा का है।

13 “मैंने शोमरोन के नबियों को कुछ बुरा करते देखा।
मैंने उन नबियों को झूठे बाल देवता के नाम भविष्यवाणी करते देखा।

उन नबियों ने इस्राएल के लोगों को यहोवा से दूर भटकाया।
14 मैंने यहूदा के नबियों को यरूशलेम में बहुत भयानक कर्म करते देखा।
इन नबियों ने व्यभिचार करने का पाप किया।
उन्होंने झूठी शिक्षाओं पर विश्वास किया, और उन झूठे उपदेशों को स्वीकार किया।
उन्होंने दुष्ट लोगों को पाप करते रहने के लिये उत्साहित किया।
अत: लोगों ने पाप करना नहीं छोड़ा।
वे सभी लोग सदोम नगर की तरह हैं।
यरूशलेम के लोग मेरे लिये अमोरा नगर के समान हैं।"

15 अत: सर्वशक्तिमान यहोवा नबियों के बारे में ये बातें कहता है,
"मैं उन नबियों को दण्ड दूँगा।
वह दण्ड विषैला भोजन पानी खाने पीने जैसा होगा।
नबियों ने आध्यात्मिक बीमारी उत्पन्न की और वह बीमारी पूरे देश में फैल गई।
अत: मैं उन नबियों को दण्ड दूँगा।
वह बीमारी यरूशलेम में नबियों से आई।"

16 सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है:
"वे नबी तुमसे जो कहें उसकी अनसुनी करो।
वे तुम्हें मूर्ख बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।
वे नबी अन्तर्दर्शन करने की बात करते हैं।
किन्तु वे अपना अन्तर्दर्शन मुझसे नहीं पाते।
उनका अन्तर्दर्शन उनके मन की उपज है।
17 कुछ लोग यहोवा के सच्चे सन्देश से घृणा करते हैं।
अत: वे नबी उन लोगों से भिन्न भिन्न कहते हैं।
वे कहते हैं, 'तुम शान्ति से रहोगे।
कुछ लोग बहुत हठी हैं।

वे वही करते हैं जो वे करना चाहते हैं।'
अत: वे नबी कहते हैं, 'तुम्हारा कुछ भी बुरा नहीं होगा।'
18 किन्तु इन नबियों में से कोई भी स्वर्गीय परिषद में सम्मिलित नहीं हुआ है।
उनमें से किसी ने भी यहोवा के सन्देश को न देखा है न ही सुना है।
उनमें से किसी ने भी यहोवा के सन्देश पर गम्भीरता से ध्यान नहीं दिया है।
19 अब यहोवा के यहाँ से दण्ड आँधी की तरह आएगा।
यहोवा का क्रोध बवंडर की तरह होगा।
यह उन दुष्ट लोगों के सिरों को कुचलता हुआ आएगा।
20 यहोवा का क्रोध तब तक नहीं रूकेगा जब तक वे जो करना चाहते हैं, पूरा न कर लें।
जब वह दिन चला जाएगा तब तुम इसे ठीक ठीक समझोगे।
21 मैंने उन नबियों को नहीं भेजा।
किन्तु वे अपने सन्देश देने दौड़ पड़े।
मैंने उनसे बातें नहीं की।
किन्तु उन्होंने मेरे नाम के उपदेश दिये।
22 यदि वे मेरी स्वर्गीय परिषद में सम्मिलित हुए होते तो उन्होंने यहूदा के लोगों को मेरा सन्देश दिया होता।
उन्होंने लोगों को बुरे कर्म करने से रोक दिया होता।
उन्होंने लोगों को पाप कर्म करने से रोक दिया होता।"

23 यह सन्देश यहोवा का है।
"मैं परमेश्वर हूँ, यहाँ वहाँ और सर्वत्र।
मैं बहुत दूर नहीं हूँ।
24 कोई व्यक्ति किसी छिपने के स्थान में अपने को मुझसे छिपाने का प्रयत्न कर सकता है।
किन्तु उसे देख लेना मेरे लिये सरल है।

क्यों क्योंकि मैं स्वर्ग और धरती दोनों पर सर्वत्र हूँ!"

यहोवा ने ये बातें कहीं। 25 "ऐसे नबी हैं जो मेरे नाम पर झूठा
उपदेश देते हैं। वे कहते हैं, 'मैंने एक स्वप्न देखा है! मैंने एक स्वप्न
देखा है!' मैंने उन्हें वे बातें करते सुना है। 26 यह कब तक चलता
रहेगा वे नबी झूठ ही का चिन्तन करते हैं और तब वे उस झूठ का
उपदेश लोगों को देते हैं। 27 ये नबी प्रयत्न करते हैं कि यहूदा के
लोग मेरा नाम भूल जायें। वे इस काम को, आपस में एक दूसरे से
कल्पित स्वप्न कहकर कर रहे हैं। ये लोग मेरे लोगों से मेरा नाम
वैसे ही भुलवा देने का प्रयत्न कर रहे हैं जैसे उनके पूर्वज मुझे भूल
गए थे। उनके पूर्वज मुझे भूल गए और उन्होंने असत्य देवता बाल
की पूजा की। 28 मूसा वह नहीं है जो गेहूँ है। ठीक उसी प्रकार उन
नबियों के स्वप्न मेरे सन्देश नहीं हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने स्वप्नों
को कहना चाहता है तो उसे कहने दो। किन्तु उस व्यक्ति को मेरे
सन्देश को सच्चाई से कहने दो जो मेरे सन्देश को सुनता है। 29 मेरा
सन्देश ज्वाला की तरह है। यह उस हथौड़े की तरह है जो चट्टान
को चूर्ण करता है। यह सन्देश यहोवा का है।"

30 "इसलिए मैं झूठे नबियों के विरुद्ध हूँ। क्योंकि वे मेरे सन्देश
को एक दूसरे से चुराने में लगे रहते हैं।" यह सन्देश यहोवा का
है। 31 "वे अपनी बात कहते हैं और दिखावा यह करते हैं कि वह
यहोवा का सन्देश है। 32 मैं उन झूठे नबियों के विरुद्ध हूँ जो झूठे
स्वप्न का उपदेश देते हैं।" यह सन्देश यहोवा का है। "वे अपने झूठ
और झूठे उपदेशों से मेरे लोगों को भटकाते हैं। मैंने उन नबियों को
लोगों को उपदेश देने के लिये नहीं भेजा। मैंने उन्हें अपने लिये कुछ
करने का आदेश कभी नहीं दिया। वे यहूदा के लोगों की सहायता
बिल्कुल नहीं कर सकते।" यह सन्देश यहोवा का है।

यहोवा से दुःखपूर्ण सन्देश

33 “यहूदा के लोग, नबी अथवा याजक तुमसे पूछ सकते हैं,
‘यिर्मयाह, यहोवा की घोषणा क्या है?’ तुम उन्हें उत्तर दोगे और
कहोगे, ‘तुम यहोवा के लिये दुर्वह भार हो और मैं यहोवा उस दुर्वह
भार को नीचे पटक दूँगा।’ यह सन्देश यहोवा का है।

34 “कोई नबी या कोई याजक अथवा संभवत: लोगों में से कोई
कह सकता है, ‘यह यहोवा से घोषणा है।’ उस व्यक्ति ने यह झूठ
कहा, अत: मैं उस व्यक्ति और उसके पूरे परिवार को दण्ड दूँगा।
35 जो तुम आपस में एक दूसरे से कहोगे वह यह है: ‘यहोवा ने
क्या उत्तर दिया?’ या ‘यहोवा ने क्या कहा?’ 36 किन्तु तुम पुन: इस
भाव को कभी नहीं दुहराओगे। यहोवा की घोषणा (दुर्वह भार)। यह
इसलिये कि यहोवा का सन्देश किसी के लिये दुर्वह भार नहीं होना
चाहिये। किन्तु तुमने हमारे परमेश्वर के शब्द को बदल दिया। वह
सजीव परमेश्वर है अर्थात् सर्वशक्तिमान यहोवा।

37 “यदि तुम परमेश्वर के सन्देश के बारे में जानना चाहते हो तब
किसी नबी से पूछो, ‘यहोवा ने तुम्हें क्या उत्तर दिया?’ या ‘यहोवा
ने क्या कहा?’ 38 किन्तु यह न कहो, ‘यहोवा के यहाँ से घोषणा
(दुर्वह भार) क्या है?’ यदि तुम इन शब्दों का उपयोग करोगे तो
यहोवा तुमसे यह सब कहेगा, ‘तुम्हें मेरे सन्देश को “यहोवा के यहाँ
से घोषणा” (दुर्वह भार) नहीं कहना चाहिये था। मैंने तुमसे उन शब्दों
का उपयोग न करने को कहा था। 39 किन्तु तुमने मेरे सन्देश को
दुर्वह भार कहा, “अत: मैं तुम्हें एक दुर्वह भार की तरह उठाऊँगा
और अपने से दूर पटक दूँगा। मैंने तुम्हारे पूर्वजों को यरूशलेम नगर
दिया था। किन्तु अब मैं तुम्हें और उस नगर को अपने से दूर फेंक
दूँगा। 40 मैं सदैव के लिए तुम्हें कलंकित बना दूँगा। तुम कभी अपनी
लज्जा को नहीं भूलोगे।’ ”

24

अच्छे अंजीर और बुरे अंजीर

1 यहोवा ने मुझे ये चीज़ें दिखाई: यहोवा के मन्दिर के सामने मैंने
सजी दो अंजीर की टोकरियाँ देखीं। (मैंने इस अन्तर्दर्शन को बाबुल
के राजा नबूकदनेस्सर द्वारा यकोन्याह को बन्दी बना लिये जाने
के बाद देखा। यकोन्याह राजा यहोयाकीम का पुत्र था। यकोन्याह
और उसके बड़े अधिकारी यरूशलेम से दूर पहुँचा दिये गए थे। वे
बाबुल पहुँचाये गए थे। नबूकदनेस्सर यहूदा के सभी बढ़इयों और
धातुकारों को ले गया था।) 2 एक टोकरी में बहुत अच्छे अंजीर थे।
वे उन अंजीरों की तरह थे जो मौसम के आरम्भ में पकते हैं। किन्तु
दूसरी टोकरी में सड़े गले अंजीर थे। वे इतने अधिक सड़े गले थे
कि उन्हें खाया नहीं जा सकता था।
3 यहोवा ने मुझसे कहा, "यिर्मयाह, तुम क्या देखते हो"

मैंने उत्तर दिया, "मैं अंजीर देखता हूँ। अच्छे अंजीर बहुत अच्छे हैं। और सड़े गले अंजीर बहुत ही सड़े गले हैं। वे इतने सड़े गले हैं कि खाये नहीं जा सकते।"

4 तब यहोवा का सन्देश मुझे मिला। 5 इस्राएल के परमेश्वर यहोवा,
ने कहा, "यहूदा के लोग अपने देश से ले जाए गए। उनका शत्रु उन्हें
बाबुल ले गया। वे लोग इन अच्छे अंजीरों की तरह होंगे। मैं उन
लोगों पर दया करुँगा। 6 मैं उनकी रक्षा करूँगा। मैं उन्हें यहूदा देश में
वापस लाऊँगा। मैं उन्हें चीर कर फेंकूँगा नहीं, मैं फिर उनका निर्माण
करुँगा। मैं उन्हें उखाड़ूँगा नहीं अपितु रोपूँगा जिससे वे बढ़े। 7 मैं
उन्हें अपने को समझने की इच्छा रखने वाला बनाऊँगा। वे समझेंगे
कि मैं यहोवा हूँ। वे मेरे लोग होंगे और मैं उनका परमेश्वर। मैं यह
करूँगा क्योंकि वे बाबुल के बन्दी पूरे हृदय से मेरी शरण में आएंगे।
8 "किन्तु यहूदा का राजा सिदकिय्याह उन अंजीरों की तरह है जो
इतने सड़े गले हैं कि खाये नहीं जा सकते। सिदकिय्याह उसके बड़े

अधिकारी, वे सभी लोग जो यरूशलेम में बच गए है, और यहूदा के
वे लोग जो मिस्र में रह रहें हैं उन सड़े गले अंजीरों की तरह होंगे।
9 “मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा। वह दण्ड पृथ्वी के सभी लोगों
का हृदय दहला देगा। लोग यहूदा के लोगों का मजाक उड़ायेंगे।
लोग उनके विषय में हँसी उड़ाएंगे। लोग उन्हें उन सभी स्थानों पर
अभिशाप देंगे जहाँ उन्हें मैं बिखेरुँगा। 10 मैं उनके विरुद्ध तलवारें,
भूखमरी और बीमारियाँ भेजूँगा। मैं उन पर तब तक आक्रमण करुँगा
जब तक कि वे सभी मर नहीं जाते। तब मे भविष्य में उस भूमि पर
नहीं रहेंगे जिसे मैंने इनको तथा इनके पूर्वजों को दिया था।”

25

यिर्मयाह के उपदेश का सार

1 यह वह सन्देश है, जो यहूदा के सभी लोगों से सम्बन्धित,
यिर्मयाह को मिला। यह सन्देश यहोयाकीम के यहूदा में राज्यकाल
के चौथे वर्ष में आया। यहोयाकीम योशिय्याह का पुत्र था। राजा
के रूप में उसके राज्यकाल का चौथा वर्ष वही था जो बाबुल में
नबूकदनेस्सर का पहला वर्ष था। 2 यह वही सन्देश है जिसे यिर्मयाह
नबी ने यहूदा के लोगों और यरूशलेम के लोगों को दिया।

3 मैंने इन गत तेईस वर्षों में यहोवा के सन्देशों को तुम्हें बार—बार
दिया है। मैं यहूदा के राजा आमोन के पुत्र योशिय्याह के राज्यकाल
के तेरहवें वर्ष से नबी हूँ। मैंने उस समय से आज तक यहोवा के
यहाँ से सन्देशों को तुम्हें दिया है। किन्तु तुमने उसे अनसुना किया
है। 4 यहोवा ने अपने सेवक नबियों को तुम्हारे पास बार—बार भेजा
है। किन्तु तुमने उन्हें अनसुना किया है। तुमने उनकी ओर तनिक
भी ध्यान नहीं दिया है।

5 उन नबियों ने कहा, “अपने जीवन को बदलो। उन बुरे कामों को
करना छोड़ो। यदि तुम बदल जाओगे, तो तुम उस भूमि पर वापस
लौट और रह सकोगे जिसे यहोवा ने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को

बहुत पहले दी थी। उसने यह भूमि तुम्हें सदैव रहने को दी। 6 अन्य
देवताओं का अनुसरण न करो। उनकी सेवा या उनकी पूजा न
करो। उन मूर्तियों की पूजा न करो जिन्हें कुछ लोगों ने बनाया है।
वह मुझे तुम पर केवल क्रोधित करता है। यह करना तुम्हें केवल
चोट पहुँचाता है।"

7 "किन्तु तुमने मेरी अनसुनी की।" यह सन्देश यहोवा का है।
"तुमने उन मूर्तियों की पूजा की जिन्हें कुछ लोगों ने बनाया और
उसने मुझे क्रोधित किया और उसने तुम्हें केवल चोट पहुँचाई।"

8 अत: सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, "तुमने मेरे सन्देश को
अनसुना किया है। 9 अत: मैं उत्तर के सभी परिवार समूहों को शीघ्र
बुलाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं शीघ्र ही बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर को भेजूँगा। वह मेरा सेवक है। मैं उन लोगों को यहूदा
देश और यहूदा के लोगों के विरुद्ध बुलाऊँगा। मैं उन्हें तुम्हारे चारों
ओर के पड़ोसी राष्ट्रों के विरुद्ध भी लाऊँगा। मैं उन सभी देशों को
नष्ट करुँगा। मैं उन देशों को सदैव के लिये सूनी मरुभूमि बना दूँगा।
लोग उन देशों को देखेंगे और जिस बुरी तरह से वे नष्ट हुए हैं उस पर
सीटी बजाएंगे। 10 मैं उन स्थानों पर सुख और आनन्द की किलोलों
को बन्द कर दूँगा। वहाँ भविष्य में दुल्हा—दुल्हनों की उमंग भरी
हँसी ठिठोली न होगी। मैं चक्की चलाने लोगों के गीतों को दूर कर
दूँगा। मैं दीपकों का उजाला खत्म करूँगा। 11 वह सारा क्षेत्र ही सूनी
मरुभूमि होगा। वे सारे लोग बाबुल के राजा के सत्तर वर्ष तक दास
होंगे।

12 "किन्तु जब सत्तर वर्ष बीत जाएंगे तो मैं बाबुल के राजा को
दण्ड दूँगा। मैं बाबुल राष्ट्र को दण्ड दूँगा।" यह सन्देश यहोवा का
है। "मैं कसदियों के देश को उनके पाप के लिये दण्ड दूँगा। मैं उस
देश को सदैव के लिये मरुभूमि बनाऊँगा। 13 मैंने कहा है कि बाबुल
पर अनेक विपत्तियाँ आएंगी। वे सभी चीज़ें घटित होंगी। यिर्मयाह ने

उन विदेशी राज्यों के बारे में उपदेश दिया और वे सभी चेतावनियाँ
इस पुस्तक में लिखी हैं। 14 हाँ बाबुल के लोगों को कई राष्ट्रों और
कई बड़े राजाओं की सेवा करनी पड़ेगी। मैं उन्हें उसके लिए उनको
उचित दण्ड दूँगा जो सब वे करेंगे।"

विश्व के राष्ट्रों के साथ न्याय

15 इस्राएल के परमेशवर यहोवा ने यह सब मुझसे कहा,
"यिर्मयाह, यह दाखमधु का प्याला मेरे हाथों से लो। यह मेरे क्रोध
का दाखमधु है। मैं तुम्हें विभिन्न राष्ट्रों में भेज रहा हूँ। उन सभी राष्ट्रों
को इस प्याले से पिलाओं। 16 वे इस दाखमधु को पीएंगे। तब वे
उलटी करेंगे और पागलों सा व्यवहार करेंगे। वे यह उन तलवारों
के कारण ऐसा करेंगे जिन्हें मैं उनके विरुद्ध शीघ्र भेजूँगा।"

17 अत: मैंने यहोवा के हाथ से प्याला लिया। मैं उन राष्ट्रों में
गया और उन लोगों को उस प्याले से पिलाया। 18 मैंने इस दाखमधु
को यरूशलेम और यहूदा के लोगों के लिये ढाला। मैंने यहूदा के
राजाओं और प्रमुखों को इस प्याले से पिलाया। मैंने यह इसलिये
किया कि वे सूनी मरूभूमि बन जायें। मैंने यह इसलिये किया कि
यह स्थान इतनी बुरी तरह से नष्ट हो जाये कि लोग इसके बारे में
सीटी बजाएं और इस स्थान को अभिशाप दें और यह हुआ, यहूदा
अब उसी तरह का है।

19 मैंने मिस्र के राजा फिरौन को भी प्याले से पिलाया। मैंने उसके
अधिकारियों, उसके बड़े प्रमुखों और उसके सभी लोगों को यहोवा
के क्रोध के प्याले से पिलाया।

20 मैंने सभी अरबों और उस देश के सभी राजाओं को उस प्याले
से पिलाया।

मैंने पलिश्ती देश के सभी राजाओं को उस प्याले से पिलाया।
ये अश्कलोन, अज्जा, एक्रोन नगरों और अशदोद नगर के बचे भाग
के राजा थे।

21 तब मैंने एदोम, मोआब और अम्मोन के लोगों को उस प्याले
से पियाला।

22 मैंने सोर और सीदोन के राजाओं को उस प्याले से पिलाया।
मैंने बहुत दूर से देशों के राजाओं को भी उस प्याले से पिलाया।
23 मैंने ददान, तेमा और बूज के लोगों को उस प्याले से पिलाया।
मैंने उन सबको उस प्याले से पिलाया जो अपने गाल के बालों को
काटते हैं। 24 मैंने अरब के सभी राजाओं को उस प्याले से पिलाया।
ये राजा मरुभूमि में रहते हैं। 25 मैंने जिम्री, एलाम और मादै के सभी
राजाओं को उस प्याले से पिलाया। 26 मैंने उत्तर के सभी समीप और
दूर के राजाओं को उस प्याले से पिलाया। मैंने एक के बाद दूसरे
को पिलाया। मैंने पृथ्वी पर के सभी राज्यों को यहोवा के क्रोध के
उस प्याले से पिलाया। किन्तु बाबुल का राजा इन सभी अन्य राष्ट्रों
के बाद इस प्याले से पीएगा।

27 "यिर्मयाह, उन राष्ट्रों से कहो कि इस्राएल के लोगों का परमेश्वर
सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'मेरे क्रोध के इस
प्याले को पीओ। उसे पीकर मत्त हो जाओ और उलटियाँ करो। गिर
पड़ो और उठो नहीं, क्योंकि तुम्हें मार डालने के लिये मैं तलवार
भेज रहा हूँ।'

28 "वे लोग तुम्हारे हाथ से प्याला लेने से इन्कार करेंगे। वे इसे
पीने से इन्कार करेंगे। किन्तु तुम उनसे यह कहोगे, 'सर्वशक्तिमान
यहोवा यह बातें बताता है: तुम निश्चय ही इस प्याले से पियोगे।
29 मैं अपने नाम पर पुकारे जाने वाले यरूशलेम नगर पर पहले ही
बुरी विपत्तियाँ ढाने जा रहा हूँ। सम्भव है कि तुम लोग सोचो कि
तुम्हें दण्ड नहीं मिलेगा। किन्तु तुम गलत सोच रहे हो। तुम्हें दण्ड
मिलेगा। मैं पृथ्वी के सभी लोगों पर आक्रमण करने के लिये तलवार
मंगाने जा रहा हूँ।' " यह सन्देश यहोवा का है।

30 "यिर्मयाह, तुम उन्हें यह सन्देश दोगे:

'यहोवा ऊँचे और पवित्र मन्दिर से गर्जना कर रहा है!
यहोवा अपनी चरागाह (लोग) के विरुद्ध चिल्लाकर कह रहा है!

उसकी चिल्लाहट वैसी ही ऊँची है,
जैसे उन लोगों की, जो अंगूरों को दाखमधु बनाने के लिये पैरों से कुचलते हैं।
31 वह चिल्लाहट पृथ्वी के सभी लोगों तक जाती है।
यह चिल्लाहट किस बात के लिये है
यहोवा सभी राष्ट्रों के लोगों को दण्ड दे रहा है।
यहोवा ने अपने तर्कपूर्ण निर्णय लोगों के विरुद्ध दिये।
उसने लोगों के साथ न्याय किया
और वह बुरे लोगों को तलवार के घाट उतार रहा है।' "
यह सन्देश यहोवा का है।

32 सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है:
"एक देश से दूसरे देश तक
शीघ्र ही बरबादी आएगी!
वह शक्तिशाली आँधी की तरह
पृथ्वी के सभी अति दूर के देशों में आएगी!"

33 उन लोगों के शव देश के एक सिरे से दूसरे सिरे को पहुँचेंगे।
कोई भी उन मरों के लिये नहीं रोएगा। कोई भी यहोवा द्वारा मारे गये उनके शवों को इकट्ठा नहीं करेगा और दफनायेगा नहीं। वे गोबर की तरह जमीन पर पड़े छोड़ दिये जाएंगे।

34 गडरियों (प्रमुखों), तुम्हें भेड़ों (लोगों) को राह दिखानी चाहिये।
बड़े प्रमुखों, तुम जोर से चिल्लाना आरम्भ करो।
भेड़ों (लोगों) के प्रमुखों, पीड़ा से तड़पते हुए जमीन पर लेटो।
क्यों क्योंकि अब तुम्हारे मृत्यु के घाट उतारे जाने का समय आ गया है।
मैं तुम्हारी भेड़ें को बिखेरुँगा।
वे टूटे घड़े के ठीकरों की तरह चारों ओर बिखेरेंगे।

35 गडेरियों (प्रमुखों) के छिपने के लिये कोई स्थान नहीं होगा।
वे प्रमुख बचकर नहीं निकल पाएंगे।
36 मैं गडेरियों (प्रमुखों) का शोर मचाना सुन रहा हूँ।
मैं भेड़ों (लोगों) के प्रमुखों का रोना सुन रहा हूँ।
यहोवा उनकी चरागाह (देश) को नष्ट कर रहा है।
37 वे शान्त चरागाहें सूनी मरूभूमि सी हैं।
यह हुआ, क्योंकि यहोवा बहुत क्रोधित है।
38 यहोवा अपनी माद छोड़ते हुए सिंह की तरह खतरनाक है।
यहोवा क्रोधित है!
यहोवा का क्रोध उन लोगों को चोट पहुँचाएगा।
उनका देश सूनी मरुभूमि बन जाएगा।

26

मन्दिर पर यिर्मयाह की शिक्षा

1 यहोयाकीम के यहूदा में राज्य करने के प्रथम वर्ष यहोवा का यह
सन्देश मिला। यहोयाकीम राजा योशिय्याह का पुत्र था। 2 यहोवा ने
कहा, "यिर्मयाह, यहोवा के मन्दिर के आँगन में खड़े होओ। यहूदा
के उन सभी लोगों को यह सन्देश दो जो यहोवा के मन्दिर में पूजा
करने आ रहे हैं। तुम उनसे वह सब कुछ कहो जो मैं तुमसे कहने को
कह रहा हूँ। मेरे सन्देश के किसी भाग को मत छोड़ो। 3 संभव है वे
मेरे सन्देश को सुनें और उसके अनुसार चलें। संभव है वे ऐसी बुरी
जिन्दगी बिताना छोड़ दें। यदि वे बदल जायें तो मैं उनको दण्ड देने
की योजना के विषय में, अपने निर्णय को बदल सकता हूँ। मैं उनको
वह दण्ड देने की योजना बना रहा हूँ क्योंकि उन्होंने अनेक बुरे काम
किये हैं। 4 तुम उनसे कहोगे, 'यहोवा जो कहता है, वह यह है: मैंने
अपने उपदेश तुम्हें दिये। तुम्हें मेरी आज्ञा का पालन करना चाहिये
और मेरे उपदेशों पर चलना चाहिये। 5 तुम्हें मेरे सेवकों की वे बातें

सुननी चाहिये जो वे तुमसे कहें। (नबी मेरे सेवक हैं) मैंने नबियों को
बार—बार तुम्हारे पास भेजा है किन्तु तुमने उनकी अनसुनी की है।
6 यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करते तो मैं अपने यरूशलेम
के मन्दिर को शीलो के पवित्र तम्बू की तरह कर दूँगा। सारे विश्व
के लोग अन्य नगरों के लिये विपत्ति माँगने के समय यरूशलेम के
बारे में सोचेंगे।' "

7 याजकों, नबियों और सभी लोगों ने यहोवा के मन्दिर में यिर्मयाह
को यह सब कहते सुना। 8 यिर्मयाह ने वह सब कुछ कहना पूरा
किया जिसे यहोवा ने लोगों से कहने का आदेश दिया था। तब
याजकों, नबियों और लोगों ने यिर्मयाह को पकड़ लिया। उन्होंने
कहा, "ऐसी भयंकर बात करने के कारण तुम मरोगे। 9 यहोवा के
नाम पर ऐसी बातें करने का साहस तुम कैसे करते हो तुम यह कैसे
कहने का साहस करते हो कि यह मन्दिर शीलो के मन्दिर की तरह
नष्ट होगा तुम यह कहने का साहस कैसे करते हो कि यरूशलेम
बिना किसी निवासी के मरुभूमि बनेगा!" सभी लोग यिर्मयाह के
चारों ओर यहोवा के मन्दिर में इकट्ठे हो गए।

10 इस प्रकार यहूदा के शासकों ने उन सारी घटनाओं को सुना
जो घटित हो रही थीं। अत: वे राजा के महल से बाहर आए। वे
यहोवा के मन्दिर को गए। वहाँ वे नये फाटक के प्रवेश के स्थान
पर बैठ गए। नया फाटक वह फाटक है जहाँ से यहोवा के मन्दिर
को जाते हैं। 11 तब याजकों और नबियों ने शासकों और सभी लोगों
से बातें कीं। उन्होंने कहा, "यिर्मयाह मार डाला जाना चाहिये। इसने
यरूशलेम के बारे में बुरा कहा है। तुमने उसे वे बातें कहते सुना।"

12 तब यिर्मयाह ने यहूदा के सभी शासकों और अन्य सभी लोगों
से बात की। उसने कहा, "यहोवा ने मुझे इस मन्दिर और इस नगर के
बारे में बातें कहने के लिये भेजा। जो सब तुमने सुना है वह यहोवा
के यहाँ से है। 13 तुम लोगों को अपना जीवन बदलना चाहिये!
तुम्हें अच्छे काम करना आरम्भ करना चाहिये। तुम्हें अपने यहोवा
परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिये। यदि तुम ऐसा करोगे तो यहोवा

अपना इरादा बदल देगा। यहोवा वे बुरी विपत्तियाँ नहीं लायेगा,
जिनके घटित होने के बारे में उसने कहा। 14 जहाँ तक मेरी बात है,
मैं तुम्हारे वश में हूँ। मेरे साथ वह करो जिसे तुम अच्छा और ठीक
समझते हो। 15 किन्तु यदि तुम मुझे मार डालोगे तो एक बात निश्चित
समझो। तुम एक निरपराध व्यक्ति को मारने के अपराधी होगे। तुम
इस नगर और इसमें जो भी रहते हैं उन्हें भी अपराधी बनाओगे।
सच में, यहोवा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। जो सन्देश तुमने सुना है
वह, सच में, यहोवा का है।"

16 तब शासक और सभी लोग बोल पड़े। उन लोगों ने याजकों
और नबियों से कहा, "यिर्मयाह, नहीं मारा जाना चाहिये। यिर्मयाह
ने जो कुछ कहा है वह हमारे यहोवा परमेश्वर की ही वाणी है।"

17 तब अग्रजों (प्रमुखों) में से कुछ खड़े हुए और उन्होंने सब लोगों
से बातें कीं। 18 उन्होंने कहा, "मीकायाह नबी मोरसेती नगर का था।
मीकायाह उन दिनों नबी था जिन दिनों हिजकिय्याह यहूदा का राजा
था। मीकायाह ने यहूदा के सभी लोगों से यह कहा: सर्वशक्तिमान
यहोवा यह कहता है:

"सिय्योन एक जुता हुआ खेत बनेगा।
    यरूशलेम चट्टानों की ढेर होगा।
जिस पहाड़ी पर मन्दिर बना है
    उस पर पेड़ उगेंगे।" मीका *3:12*

19 "हिजकिय्याह यहूदा का राजा था और हिजकिय्याह ने
मीकायाह को नहीं मारा। यहूदा के किसी व्यक्ति ने मीकायाह को
नहीं मारा। तुम जानते हो हिजकिय्याह यहोवा का सम्मान करता
था। वह यहोवा को प्रसन्न करना चाहता था। यहोवा कह चुका
था कि वह यहूदा का बुरा करेगा। किन्तु हिजकिय्याह ने यहोवा
से प्रार्थना की और यहोवा ने अपना इरादा बदल दिया। यहोवा ने
वे बुरी विपत्तियाँ नहीं आने दीं। यदि हम लोग यिर्मयाह को चोट

पहुँचायेंगे तो हम लोग अपने ऊपर अनेक विपत्तियाँ बुलाएंगे और
वे विपत्तियाँ हम लोगों के अपने दोष के कारण होंगी।”
20 अतीत काल में एक दूसरा व्यक्ति था जो यहोवा के सन्देश
का उपदेश देता था। उसका नाम ऊरिय्याह था। वह शमाय्याह
नामक व्यक्ति का पुत्र था। ऊरिय्याह, किर्यत्यारीम नगर का था।
ऊरिय्याह ने इस नगर और देश के विरुद्ध वही उपदेश दिया जो
यिर्मयाह ने दिया है। 21 राजा यहोयाकीम उसके सेना—अधिकारी
और यहूदा के प्रमुखों ने ऊरिय्याह का उपदेश सुना। वे क्रोधित
हुए। राजा यहोयाकीम ऊरिय्याह को मार डालना चाहता था। किन्तु
ऊरिय्याह को पता लगा कि यहोयाकीम उसे मार डालना चाहता है।
ऊरिय्याह डर गया और वह मिस्र देश को भाग निकला। 22 किन्तु
यहोयाकीम ने एलनातान नामक एक व्यक्ति तथा कुछ अन्य लोगों
को मिस्र भेजा। एलनातान अकबोर नामक व्यक्ति का पुत्र था। 23 वे
लोग ऊरिय्याह को मिस्र से वापस ले आये। तब वे लोग ऊरिय्याह
को राजा यहोयाकीम के पास ले गए। यहोयाकीम ने ऊरिय्याह को
तलवार के घाट उतार देने का आदेश दिया। ऊरिय्याह का शव उस
कब्रिस्तान में फेंक दिया गया जहाँ गरीब लोग दफनाये जाते थे।
24 शापान का पुत्र अहीकाम ने यिर्मयाह का समर्थन किया। अत:
अहीकाम ने लोगों द्वारा मार डाले जाने से यिर्मयाह को बचा लिया।

27

यहोवा ने नबूकदनेस्सर को शासक बनाया है

1 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यहूदा के राजा
सिदकिय्याह के राज्यकाल के चौथे वर्ष यह आया। सिदकिय्याह
राजा योशिय्याह का पुत्र था। 2 यहोवा ने मुझसे जो कहा, वह यह
है: “यिर्मयाह, छड़ और चमड़े की पट्टियों से जुवा बनाओ। उस
जुवा को अपनी गर्दन के पीछे की ओर रखो। 3 तब एदोम, मोआब,
अम्मोन, सोर और सीदोन के राजाओं को सन्देश भेजो। ये सन्देश
इन राजाओं के राजदूतों द्वारा भेजो जो यहूदा के राजा सिदकिय्याह

से मिलने यरूशलेम आए हैं। 4 उन राजदूतों से कहो कि वे सन्देश
अपने स्वामियों को दें। उनसे यह कहो कि इस्राएल का परमेश्वर
सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'अपने स्वामियों से कहो कि
5 मैंने पृथ्वी और इस पर रहने वाले सभी लोगों को बनाया। मैंने
पृथ्वी के सभी जानवरों को बनाया। मैंने यह अपनी बड़ी शक्ति और
शक्तिशाली भुजा से किया। मैं यह पृथ्वी किसी को भी जिसे चाहूँ
दे सकता हूँ। 6 इस समय मैंने बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को
तुम्हारे देश दे दिये है। वह मेरा सेवक है। मैं जंगली जानवरों को
भी उसका आज्ञाकारी बनाऊँगा। 7 सभी राष्ट्र नबूकदनेस्सर उसके
पुत्र और उसके पौत्र की सेवा करेंगे। तब बाबुल की पराजय का
समय आएगा। कई राष्ट्र और बड़े सम्राट बाबुल को अपना सेवक
बनाएंगे।

8 " 'किन्तु इस समय कुछ राष्ट्र या राज्य बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर की सेवा करने से इन्कार कर सकते हैं। वे उसके
जवे को अपनी गर्दन पर रखने से इन्कार कर सकते हैं। यदि ऐसा
होता है तो जो मैं करूँगा वह यह है: मैं उस राष्ट्र को तलवार, भूख
और भयंकर बीमारी का दण्ड दूँगा। यह सन्देश यहोवा का है। "मैं
वह तब तक करूँगा जब तक मैं उस राष्ट्र को नष्ट न कर दूँ। मैं
नबूकदनेस्सर का उपयोग उस राष्ट्र को नष्ट करने के लिये करूँगा
जो उसके विरुद्ध करता है। 9 अत: अपने नबियों की एक न सुनो।
उन व्यक्तियों की एक न सुनो जो भविष्य की घटनाओं को जानने
के लिये जादू का उपयोग करते हैं। उन लोगों की एक न सुनो जो
यह कहते हैं कि हम स्वप्न का फल बता सकते हैं। उन व्यक्तियों
की एक न सुनो जो मरों से बात करते हैं या वे लोग जो जादूगर हैं।
वे सभी तुमसे कहते हैं, "तुम बाबुल के राजा के दास नहीं बनोगे।"
10 नकिन्तु वे लोग तुमसे झूठ बोलते हैं। मैं तुम्हें तुम्हारी जन्म भूमि
से बहुत दूर जाने पर विवश करूँगा और तुम दूसरे देश में मरोगे।

11 " 'किन्तु वे राष्ट्र, जो बाबुल के राजा के जुवे को अपने कंधे

पर रखेंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे, जीवित रहेंगे। मैं उन राष्ट्रों को उनके अपने देश में रहने दूँगा और बाबुल के राजा की सेवा करने दूँगा।' यह सन्देश यहोवा का है। 'उन राष्ट्रों के लोग अपनी भूमि पर रहेंगे और उस पर खेती करेंगे।' "

12 मैंने यहूदा के राजा सिदकिय्याह को भी यही सन्देश दिया। मैंने
कहा, "सिदकिय्याह, तुम्हें बाबुल के राजा के जुवे के नीचे अपनी
गर्दन देनी चाहिये और उसकी आज्ञा माननी चाहिये। यदि तुम बाबुल
के राजा और उसके लोगों की सेवा करोगे तो तुम रह सकोगे।
13 यदि तुम बाबुल के राजा की सेवा करना स्वीकार नहीं करते तो
तुम और तुम्हारे लोग शत्रु की तलवार के घाट उतारे जाएंगे, तथा
भूख और भयंकर बीमारी से मरेंगे। यहोवा ने कहा कि ये घटनायें
होंगी। 14 किन्तु झूठे नबी कह रहे हैं: 'तुम बाबुल के राजा के दास
कभी नहीं होगे।'

"उन नबियों की एक न सुनो। क्योंकि वे तुम्हें झूठा उपदेश दे रहे
हैं। 15 'मैंने उन नबियों को नहीं भेजा है। यह सन्देश यहोवा का है।
वे झूठा उपदेश दे रहे हैं और कह रहे हैं कि वह सन्देश मेरे यहाँ से है। अत: यहूदा के लोगों, मैं तुम्हें दूर भेजूँगा। तुम मरोगे और वे नबी भी जो उपदेश दे रहे हैं मरेंगे।' "

16 तब मैंने (यिर्मयाह) याजक और उन सभी लोगों से कहा,
"यहोवा कहता है: 'वे झूठे नबी कह रहे हैं: कसदियों ने बहुत सी
चीज़ें यहोवा के मन्दिर से ली। वे चीज़ें शीघ्र ही वापस लाई जाएंगी।'
उन नबियों की एक न सुनो क्योंकि वे तुम्हें झूठा उपदेश दे रहे हैं।
17 उन नबियों की एक न सुनो। बाबुल के राजा की सेवा करो और
तुम जीवित रहोगे। तुम्हारे लिये कोई कारण नहीं कि तुम यरूशलेम
नगर को नष्ट करवाओ। 18 यदि वे लोग नबी हैं और उनके पास
यहोवा का सन्देश है तो उन्हें प्रार्थना करने दो। उन चीज़ों के बारे में
उन्हें प्रार्थना करने दो जो अभी तक राजा के महल में हैं और उन्हें
उन चीज़ों के बारे में प्रार्थना करने दो जो अब तक यरूशलेम में हैं।

उन नबियों को प्रार्थना करने दो ताकि वे सभी चीज़ें बाबुल नहीं ले जायी जायें।”

19 “सर्वशक्तिमान यहोवा उन सब चीज़ों के बारे में यह कहता है जो अभी तक यरूशलेम में बची रह गई हैं। मन्दिर में स्तम्भ, काँसे का बना सागर, हटाने योग्य आधार और अन्य चीज़ें हैं। बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने उन चीज़ों को यरूशलेम में छोड़ दिया।
20 नबूकदनेस्सर जब यहूदा के राजा यकोन्याह को बन्दी बनाकर ले गया तब उन चीज़ों को नहीं ले गया। यकोन्याह राजा यहोयाकीम का पुत्र था। नबूकदनेस्सर यहूदा और यरूशलेम के अन्य बड़े लोगों को
भी ले गया। 21 इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा मन्दिर में बची, राजमहल में बची और यरूशलेम में बची चीज़ों के
बारे में यह कहता है: ‘वे सभी चीज़ें भी बाबुल ले जाई जाएंगी। 22 ‘वे चीज़ें बाबुल में तब तक रहेंगी जब तक वह समय आएगा कि मैं उन्हें लेने जाऊँगा।’ यह सन्देश यहोवा का है। ‘तब मैं उन चीज़ों को वापस लाऊँगा। मैं इन चीज़ों को इस स्थान पर वापस रखूँगा।’ ”

28

झूठा नबी हनन्याह

1 यहूदा में सिदकिय्याह के राज्यकाल के चौथे वर्ष के पाँचवें महीने में हनन्याह नबी ने मुझसे बात की। हनन्याह अज्जूर नामक व्यक्ति का पुत्र था। हनन्याह गिबोन नगर का रहने वाला था। हनन्याह ने जब मुझसे बातें की, तब वह यहोवा के मन्दिर में था। याजक और सभी लोग भी वहाँ थे। हनन्याह ने जो कहा वह यह है:
2 “इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, ‘मैं उस जुवे को तोड़ डालूँगा जिसे बाबुल के राजा ने यहूदा के
लोगों पर रखा है। 3 दो वर्ष पूरे होने के पहले मैं उन चीज़ों को वापस ले आऊँगा जिन्हें बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर यहोवा के मन्दिर से ले गया है। नबूकदनेस्सर उन चीज़ों को बाबुल ले गया है। किन्तु
मैं उन्हें यरूशलेम वापस ले आऊँगा। 4 मैं यहूदा के राजा यकोन्याह

को भी वापस यहाँ ले आऊँगा। यकोन्याह, यहोयाकीम का पुत्र है मैं उन सभी यहूदा के लोगों को वापस लाऊँगा जिन्हें नबूकदनेस्सर ने अपना घर छोड़ने और बाबुल जाने को विवश किया।' यह सन्देश यहोवा का है। 'अत: मैं उस जुवे को तोड़ दूँगा जिसे बाबुल के राजा ने यहूदा के लोगों पर रखा हैं!' "

5 तब यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से यह कहा: वे यहोवा के
मन्दिर में खड़े थे। याजक और वहाँ के सभी लोग यिर्मयाह का कहा
हुआ सुन सकते थे। 6 यिर्मयाह ने हनन्याह से कहा, "आमीन! मुझे
आशा है कि यहोवा निश्चय ही ऐसा करेगा! मुझे आशा है कि यहोवा
उस सन्देश को सच घटित करेगा जो तुम देते हो। मुझे आशा है कि
यहोवा अपने मन्दिर की चीज़ों को बाबुल से इस स्थान पर वापस
लायेगा और मुझे आशा है कि यहोवा उन सभी लोगों को इस स्थान
पर वापस लाएगा जो अपने घरों को छोड़ने को विवश किये गए
थे।

7 "किन्तु हनन्याह वह सुनो जो मुझे कहना चाहिये। वह सुनो जो
मैं सभी लोगों से कहता हूँ। 8 हनन्याह हमारे और तुम्हारे नबी होने
के बहुत पहले भी नबी थे। उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि युद्ध,
भूखमरी और भयंकर बीमारियाँ अनेक देशों और राज्यों में आयेंगी।
9 किन्तु उस नबी की जाँच यह जानने के लिये होनी चाहिये कि उसे
यहोवा ने सचमुच भेजा है जो यह कहता है कि हम लोग शान्तिपूर्वक
रहेंगे। यदि उस नबी का सन्देश सच घटित होता है तो लोग समझ
सकते हैं कि सत्य ही वह यहोवा द्वारा भेजा गया है।"

10 यिर्मयाह अपने गर्दन पर एक जुवा रखे थे। तब हनन्याह नबी ने
उस जुवे को यिर्मयाह की गर्दन से उतार लिया। हनन्याह ने उस जुवे
को तोड़ डाला। 11 तब हनन्याह सभी लोग के सामने बोला। उसने
कहा, "यहोवा कहता है, 'इसी तरह मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर
के जुवे को तोड़ दूँगा। उसने उस जुवे को विश्व के सभी राष्ट्रों पर

रखा है। किन्तु मैं उस जुवे को दो वर्ष बीतने से पहले ही तोड़ दूँगा।' "

हनन्याह के वह कहने के बाद यिर्मयाह मन्दिर को छोड़कर चला गया।

12 तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह तब हुआ जब
हनन्याह ने यिर्मयाह की गर्दन से जुवे को उतार लिया था और उसे
तोड़ डाला था। 13 यहोवा ने यिर्मयाह से कहा, "जाओ और हनन्याह
से कहो, 'यहोवा जो कहता है, वह यह है: तुमने एक काठ का जुवा
तोड़ा है। किन्तु मैं काठ की जगह एक लोहे का जुवा बनाऊँगा।'
14 इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'मैं इन सभी
राष्ट्रों की गर्दन पर लोहे का जुवा रखूँगा। मैं यह बाबुल के राजा
नबूकदनेस्सर की उनसे सेवा कराने के लिये करूँगा और वे उसके
दास होंगे। मैं नबूकदनेस्सर को जंगली जानवरों पर भी शासन का
अधिकार दूँगा।' "

15 तब यिर्मयाह नबी ने हनन्याह नबी से कहा, "हनन्याह, सुनो!
यहोवा ने तुझे नहीं भेजा। यहोवा ने तुम्हें नहीं भेजा किन्तु तुमने
यहूदा के लोगों को झूठ में विश्वास कराया है। 16 अत: यहोवा जो
कहता है, वह यह है, 'हनन्याह मैं तुम्हें शीघ्र ही इस संसार से उठा
लूँगा। तुम इस वर्ष मरोगे। क्यों क्योंकि तुमने लोगों को यहोवा के
विरुद्ध जाने की शिक्षा दी है।' "

17 हनन्याह उसी वर्ष के सातवें महीने मर गया।

29

बाबुल में यहूदी बन्दियों के लिये एक पत्र

1 यिर्मयाह ने बाबुल में बन्दी यहूदियों को एक पत्र भेजा। उसने
इसे अग्रजों (प्रमुखों), याजकों, नबियों और बाबुल में रहने वाले सभी
लोगों को भेजा। ये वे लोग थे जिन्हें नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम में
पकड़ा था और बाबुल ले गया था। 2 (यह पत्र, राजा यकोन्याह,

राजमाता, अधिकारी, यहूदा और यरूशलेम के प्रमुख, बढ़ई और ठठेरों के यरूशलेम से ले जाए जाने के बाद भेजा गया था।)
3 सिदकिय्याह ने एलासा और गमर्याह को राजा नबूकदनेस्सर के पास भेजा। सिदकिय्याह यहूदा का राजा था। एलासा शापान का पुत्र था और गमर्याह हिल्किय्याह का पुत्र था। यिर्मयाह उस पत्र को उन लोगों को बाबुल ले जाने के लिये दिया। पत्र में जो लिखा था वह यह है:

4 इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा ये बातें उन सभी लोगों से कहता है जिन्हें बन्दी के रुप में उसने यरूशलेम
से बाबुल भेजा था: 5 "घर बनाओ और उनमें रहो। उस देश में बस जाओ। पौधे लगाओ और अपनी उगाई हुई फसल से भोजन
प्राप्त करो। 6 विवाह करो तथा पुत्र—पुत्रियाँ पैदा करो। अपने पुत्रों के लिए पत्नियाँ खोजो और अपनी पुत्रियों की शादी करो। यह इसलिये करो जिससे उनके भी लड़के और लड़कियाँ हो बहुत से बच्चे पैदा करो और बाबुल में अपनी संख्या बढ़ाओ। अपनी
संख्या मत घटाओ। 7 मैं जिस नगर में तुम्हें भेजूँ उसके लिये अच्छा काम करो। जिस नगर में तुम रहो उसके लिये यहोवा से प्रार्थना करो। क्यों क्योंकि यदि उस नगर में शान्ति रहेगी
तो तुम्हें भी शान्ति मिलेगी।" 8 इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, "अपने नबियों और जादूगरों को अपने को मूर्ख मत बनाने दो। उनके उन स्वप्नों के बारे में न सुनो
जिन्हें वे देखते हैं। 9 वे झूठा उपदेश देते हैं और वे यह कहते हैं कि उनका सन्देश मेरे यहाँ से है। किन्तु मैंने उसे नहीं भेजा।" यह सन्देश यहोवा का है।

10 यहोवा जो कहता है, वह यह है: "बाबुल सत्तर वर्ष तक शक्तिशाली रहेगा। उसके बाद बाबुल में रहने वाले लोगों, मैं तुम्हारे पास आऊँगा। मैं तुम्हें वापस यरूशलेम लाने की सच्ची

प्रतिज्ञा पूरी करुँगा। 11 मैं यह इसलिये कहता हूँ क्योंकि मैं उन
अपनी योजनाओं को जानता हूँ जो तुम्हारे लिये हैं।” यह सन्देश
यहोवा का है। “तुम्हारे लिये मेरी अच्छी योजनाएं हैं। मैं तुम्हें
चोट पहुँचाने की योजना नहीं बना रहा हूँ। मैं तुम्हें आशा और
उज्जवल भविष्य देने की योजना बना रहा हूँ। 12 तब तुम लोग
मेरा नाम लोगे। तुम मेरे पास आओगे और मेरी प्रार्थना करोगे
और मैं तुम्हारी बातों पर ध्यान दूँगा। 13 तुम लोग मेरी खोज
करोगे और जब तुम पूरे हृदय से मेरी खोज करोगे तो तुम मुझे
पाओगे। 14 मैं अपने को तुम्हें प्राप्त होने दूँगा।” यह सन्देश यहोवा
का है। “मैं तुम्हें तुम्हारे बन्दीखाने से वापस लाऊँगा। मैंने तुम्हें
यह स्थान छोड़ने को विवश किया। किन्तु मैं तुम्हें उन सभी राष्ट्रों
और स्थानों से इकट्ठा करुँगा जहाँ मैंने तुम्हें भेजा है।” यह सन्देश
यहोवा का है। “मैं तुम्हें इस स्थान पर वापस लाऊँगा।”

15 तुम लोग यह कह सकते हो, “किन्तु यहोवा ने हमें यहाँ
बाबुल में नबी दिये हैं।” 16 किन्तु यहोवा तुम्हारे उन सम्बन्धियों
के बारे में जो बाबुल नहीं ले जाए गए यह कहता है: मैं उस राजा
के बारे में बात कर रहा हूँ जो इस समय दाऊद के राजसिंहासन
पर बैठा है और उन सभी अन्य लोगों के बारे में जो अब भी
यरूशलेम नगर में रहते हैं। 17 सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, “मैं
शीघ्र ही तलवार, भूख और भयंकर बीमारी उन लोगों के विरुद्ध
भेजूँगा जो अब भी यरूशलेम में हैं और मैं उन्हें वे ही सड़े—गले
अंजीर बनाऊँगा जो खाने योग्य नहीं। 18 मैं उन लोगों का पीछा,
जो अभी भी यरूशलेम में है, तलवार, भूख और भयंकर बीमारी
से करूँगा और मैं इसे ऐसा कर दूँगा कि पृथ्वी के सभी राज्य
यह देखकर डरेंगे कि इन लोगों के साथ क्या घटित हो गया
है। वे लोग नष्ट कर दिए जाएंगे। लोग जब उन घटित घटनाओं
को सुनेंगे तो आश्चर्य से सिसकारी भरेंगे और जब लोग किन्हीं

लोगों के लिये बुरा होने की मांग करेंगे तो इसे उदाहरण रूप में
याद करेंगे। मैं उन लोगों को जहाँ कहीं जाने को विवश करुँगा,
लोग वहाँ उनका अपमान करेंगे। 19 मैं उन सभी घटनाओं को
घटित कराऊँगा क्योंकि यरूशलेम के उन लोगों ने मेरे सन्देश
को अनसुना किया है।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैंने अपना
सन्देश उनके पास बार—बार भेजा। मैंने अपने सेवक नबियों
को उन लोगों को अपना सन्देश देने को भेजा। किन्तु लोगों ने
उन्हें अनसुना किया।" यह सन्देश यहोवा का है। 20 "तुम लोग
बन्दी हो। मैंने तुम्हें यरूशलेम छोड़ने और बाबुल जाने को विवश
किया। अत: यहोवा का सन्देश सुनो।"

21 सर्वशक्तिमान यहोवा कोलायाह के पुत्र अहाब और
मासेयाह के पुत्र सिदकिय्याह के बारे में यह कहता है: "ये दोनों
व्यक्ति तुम्हें झूठा उपदेश दे रहे थे। उन्होंने कहा है कि उनके
सन्देश मेरे यहाँ से हैं। किन्तु वे झूठ बोल रहे थे। उन दोनों नबियों
को बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को दे दूँगा और नबूकदनेस्सर
बाबुल में बन्दी तुम सभी लोगों के सामने उन नबियों को मार
डालेगा। 22 सभी यहूदी बन्दी उन लोगों का उपयोग उदाहरण के
लिये तब करेंगे जब वे अन्य लोगों का बुरा होने की मांग करेंगे।
वे बन्दी कहेंगे, 'यहोवा तुम्हारे साथ सिदकिय्याह और अहाब
के समान व्यवहार करे। बाबुल के राजा ने उन दोनों को आग
में जला दिया!' 23 उन दोनों नबियों ने इस्राएल के लोगों के साथ
घृणित कर्म किया था। उन्होंने अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ
व्यभिचार किया है। उन्होंने झूठ भी बोला है और कहा है कि वे
झूठ मुझ यहोवा के यहाँ से हैं। मैंने उनसे वह सब करने को नहीं
कहा। मैं जानता हूँ कि उन्होंने क्या किया है मैं साक्षी हूँ।" यह
सन्देश यहोवा का है।

शमायाह को परमेश्वर का सन्देश

24 शमायाह को भी एक सन्देश दो। शमायाह नेहलामी परिवार
से है। 25 इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है,
“शमायाह, तुमने यरूशलेम के सभी लोगों को पत्र भेजे और तुमने
यासेयाह के पुत्र याजक सपन्याह को पत्र भेजे। तुमने सभी याजकों
को पत्र भेजे। तुमने उन पत्रों को अपने नाम से भेजा और यहोवा की
सत्ता के नाम पर नहीं। 26 शमायाह, तुमने सपन्याह को अपने पत्र
में जो लिखा था वह यह है: ‘सपन्याह यहोवा ने यहोयादा के स्थान
पर तुम्हें याजक बनाया है। तुम यहोवा के मन्दिर के अधिकारी हो।
तुम्हें उस किसी को कैद कर लेना चाहिये जो पागल की तरह काम
करता है और नबी की तरह व्यवहार करता है। तुम्हें उस व्यक्ति के
पैरों को लकड़ी के बड़े टुकड़े के बीच रखना चाहिये और उसके
गले में लौह—कटक पहनाना चाहिए। 27 इस समय यिर्मयाह नबी
की तरह काम कर रहा है। अत: तुमने उसे बन्दी क्यों नहीं बनाया
28 यिर्मयाह ने हम लोगों को यह सन्देश बाबुल में दिया था: बाबुल
में रहने वाले लोगों, तुम वहाँ लम्बे समय तक रहोगे। अत: अपने
मकान बनाओ और वहीं बस जाओ। बाग लगाओ और वह खाओ,
जो उपजाओ।’ ”

29 याजक सपन्याह ने यिर्मयाह नबी को पत्र सुनाया। 30 तब
यिर्मयाह के पास यहोवा का सन्देश आया। 31 “यिर्मयाह, बाबुल के
सभी बन्दियों को यह सन्देश भेजो: ‘नेहलामी परिवार के शमायाह
के बारे में जो यहोवा कहता है, वह यह है: शमायाह ने तुम्हारे सामने
भविष्यवाणी की, किन्तु मैंने उसे नहीं भेजा। शमायाह ने तुम्हें झूठ
में विश्वास कराया है। शमायाह ने यह किया है। 32 अत: यहोवा
जो कहता है वह यह है: नेहलामी परिवार के शमायाह को मैं शीघ्र
दण्ड दूँगा। मैं उसके परिवार को पूरी तरह नष्ट कर दूँगा और मैं
अपने लोगों के लिये जो अच्छा करूँगा उसमें उसका कोई भाग
नहीं होगा।’ ” यह सन्देश यहोवा का है। “ ‘मैं शमायाह को दण्ड
दूँगा क्योंकि उसने लोगों को यहोवा के विरुद्ध जाने की शिक्षा दी
है।’ ”

30

आशा के प्रतिज्ञाएं

1 यह सन्देश यहोवा का है जो यिर्मयाह को मिले। 2 इस्राएल के
लोगों के परमेश्वर यहोवा ने यह कहा, "यिर्मयाह, मैंने जो सन्देश दिये
है, उन्हें एक पुस्तक में लिख डालो। इस पुस्तक को अपने लिये
लिखो।" 3 यह सन्देश यहोवा का है। "यह करो, क्योंकि वे दिन
आएंगे जब मैं अपने लोगों इस्राएल और यहूदा को देश निकाले से
वापस लाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं उन लोगों को उस
देश में वापस लाऊँगा जिसे मैंने उनके पूर्वजों को दिया था। तब मेरे
लोग उस देश को फिर अपना बनायेंगे।"

4 यहोवा ने यह सन्देश इस्राएल और यहूदा के लोगों के बारे में
दिया। 5 यहोवा ने जो कहा, वह यह है:

"हम भय से रोते लोगों का रोना सुनते हैं!
लोग भयभीत हैं! कहीं शान्ति नहीं!

6 "यह प्रश्न पूछो इस पर विचार करो:
क्या कोई पुरुष बच्चे को जन्म दे सकता है निश्चय ही नही!
तब मैं हर एक शक्तिशाली व्यक्ति को पेट पकड़े क्यों देखता हूँ
मानों वे प्रसव करने वाली स्त्री की पीड़ा सह रहे हो
क्यों हर एक व्यक्ति का मुख शव सा सफेद हो रहा है
क्यों? क्योंकि लोग अत्यन्त भयभीत हैं।

7 "यह याकूब के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है।
यह बड़ी विपत्ति का समय है।
इस प्रकार का समय फिर कभी नहीं आएगा।
किन्तु याकूब बच जायेगा।"

8 यह सन्देश सर्वशक्तिमान यहोवा का है: "उस समय, मैं इस्राएल
और यहूदा के लोगों की गर्दन से जुवे को तोड़ डालूँगा और तुम्हें
जकड़ने वाली रस्सियों को मैं तोड़ दूँगा। विदेशों के लोग मेरे लोगों
को फिर कभी दास होने के लिये विवश नहीं करेंगे। 9 इस्राएल और
यहूदा के लोग अन्य देशों की भी सेवा नहीं करेंगे। नहीं, वे तो अपने
परमेश्वर यहोवा की सेवा करेंगे और वे अपने राजा दाऊद की सेवा
करेंगे। मैं उस राजा को उनके पास भेजूँगा।

10 "अत: मेरे सेवक याकूब डरो नहीं।"
    यह सन्देश यहोवा का है।
"इस्राएल, डरो नहीं।
    मैं उस अति दूर के स्थान से तुम्हें बचाऊँगा।
तुम उस बहुत दूर के देश में बन्दी हो,
    किन्तु मैं तुम्हारे वंशजों को
    उस देश से बचाऊँगा।
याकूब फिर शान्ति पाएगा।
    याकूब को लोग तंग नहीं करेंगे।
    मेरे लोगों को भयभीत करने वाला कोई शत्रु नहीं होगा।
11 इस्राएल और यहूदा के लोगों, मैं तुम्हारे साथ हूँ।"
    यह सन्देश यहोवा का है, "और मैं तुम्हें बचाऊँगा।
मैंने तुम्हें उन राष्ट्रों में भेजा।
    किन्तु मैं उन सभी राष्ट्रों को पूरी तरह नष्ट कर दूँगा।
यह सत्य है कि मैं उन राष्ट्रों को नष्ट करुँगा।
    किन्तु मैं तुम्हें नष्ट नहीं करुँगा।
तुम्हें उन बुरे कामों का जरूर दण्ड मिलेगा जिन्हें तुमने किये।
    किन्तु मैं तुम्हें अच्छी प्रकार से अनुशासित करूँगा।"

12 यहोवा कहता है, "इस्राएल और यहूदा के तुम लोगों को एक घाव
है जो अच्छा नहीं किया जा सकता।
तुम्हें एक चोट है जो अच्छी नहीं हो सकती।
13 तुम्हारे घावों को ठीक करने वाला कोई व्यक्ति नहीं है।
अत: तुम स्वस्थ नहीं हो सकते।
14 तुम अनेक राष्ट्रों के मित्र बने हो,
किन्तु वे राष्ट्र तुम्हारी परवाह नहीं करते।
तुम्हारे मित्र तुम्हें भूल गए हैं।
मैंने तुम्हें शत्रु जैसी चोट पहुँचाई।
मैंने तुम्हें कठोर दण्ड दिया।
मैंने यह तुम्हारे बड़े अपराध के लिये किया।
15 इस्राएल और यहूदा तुम अपने घाव के बारे में क्यों चिल्ला रहे हो
तुम्हारा घाव कष्टकर है
और इसका कोई उपचार नहीं है।
मैंने अर्थात् यहोवा ने तुम्हारे बड़े अपराधों के कारण तुम्हें यह सब किया।
मैंने ये चीजें तुम्हारे अनेक पापों के कारण कीं।
16 उन राष्ट्रों ने तुम्हें नष्ट किया।
किन्तु अब वे राष्ट्र नष्ट किये जायेंगे।
इस्राएल और यहूदा तुम्हारे शत्रु बन्दी होंगे।
उन लोगों ने तुम्हारी चीज़ें चुराई।
किन्तु अन्य लोग उनकी चीज़ें चुराएंगे।
उन लोगों ने तुम्हारी चीज़ें युद्ध में लीं।
किन्तु अन्य लोग उनसे चीज़ें युद्ध में लेंगे।
17 मैं तुम्हारे स्वास्थ्य को लौटाऊँगा और मैं तुम्हारे घावों को भरूँगा।"
यह सन्देश यहोवा का है।
"क्यों क्योंकि अन्य लोगों ने कहा कि तुम जाति—बहिष्कृत हो।

उन लोगों ने कहा, 'कोई भी सिय्योन की परवाह नहीं करता।' "

18 यहोवा कहता है:
"याकूब के लोग अब बन्दी हैं।
किन्तु वे वापस आएंगे।
और मैं याकूब के परिवारों पर दया करूँगा।
नगर अब बरबाद इमारतों से ढका एक पहाड़ी मात्र है।
किन्तु यह नगर फिर बनेगा
और राजा का महल भी वहाँ फिर बनेगा जहाँ इसे होना चाहिये।
19 उन स्थानों पर लोग स्तुतिगान करेंगे।
वहाँ हँसी ठट्ठा भी सुनाई पड़ेगा।
मैं उन्हें बहुत सी सन्तानें दूँगा।
इस्राएल और यहूदा छोटे नहीं रहेंगे।
मैं उन्हें सम्मान दूँगा।
कोई व्यक्ति उनका अनादर नहीं करेगा।
20 याकूब का परिवार प्राचीन काल के परिवारों सा होगा।
मैं इस्राएल और यहूदा के लोगों को शक्तिशाली बनाऊँगा
और मैं उन लोगों को दण्ड दूँगा जो उन पर चोट करेंगे।
21 उन्हीं में से एक उनका अगुवा होगा।
वह शासक मेरे लोगों में से होगा।
वह मेरे नजदीक तब आएंगे जब मैं उनसे ऐसा करने को कहूँगा।
अत: मैं उस अगुवा को अपने पास बुलाऊँगा
और वह मेरे निकट होगा।
22 तुम मेरे लोग होगे
और मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊँगा।"

23 यहोवा बहुत क्रोधित था।

उसने लोगों को दण्ड दिया
और दण्ड प्रचंड आंधी की तरह आया।
दण्ड एक चक्रवात सा, दुष्ट लोगों के विरुद्ध आया।
24 यहोवा तब तक क्रोधित रहेगा
जब तक वे लोगों को दण्ड देना पूरा नहीं करता
वह तब तक क्रोधित रहेगा जब तक वह अपनी योजना के अनुसार दण्ड नहीं दे लेता।
जब वह दिन आएगा तो यहूदा के लोगों, तुम समझ जाओगे।

31

नया इस्राएल

1 यहोवा ने यह सब कहा: "उस समय मैं इस्राएल के पूरे परिवार
समूहों का परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे।"

2 यहोवा कहता है,
"कुछ लोग, जो शत्रु की तलवार के घाट नहीं उतारे गए,
वे लोग मरुभूमि में आराम पाएंगे। इस्राएल आराम की खोज में आएगा।"
3 बहुत दूर से यहोवा
अपने लोगों के सामने प्रकट होगा।

यहोवा कहते हैं लोगों, "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ और मेरा प्रेम सदैव रहेगा।
मैं सदैव तुम्हारे प्रति सच्चा रहूँगा।
4 मेरी दुल्हन, इस्राएल, मैं तुम्हें फिर सवारूँगा।
तुम फिर सुन्दर देश बनोगी।
तुम अपना तम्बूरा फिर संभालोगी।
तुम विनोद करने वाले अन्य सभी लोगों के साथ नाचोगी।
5 इस्राएल के किसानों, तुम अंगूर के बाग फिर लगाओगे।

तुम शोमरोन नगर के चारों ओर पहाड़ी पर उन अंगूरों के बाग लगाओगे
और किसान लोग उन अंगूरों के बागों के फलों का आनन्द लेंगे।
6 वह समय आएगा, जब एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश का चौकीदार यह सन्देश घोषित करेगा:
'आओ, हम अपने परमेश्वर यहोवा की उपासना करने सिय्योन चलें!'
एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश के चौकीदार भी उसी सन्देश की घोषणा करेंगे।"

7 यहोवा कहता है,
"प्रसन्न होओ और याकूब के लिये गाओ।
सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र इस्राएल के लिये उद्‌घोष करो।
अपनी स्तुतियाँ करो, यह उद्‌घोष करो,
'यहोवा ने अपने लोगों की रक्षा की है।
उसने इस्राएल राष्ट्र के जीवित बचे लोगों की रक्षा की है!'
8 समझ लो कि मैं उत्तर देश से इस्राएल को लाऊँगा।
मैं पृथ्वी के अति दूर स्थानों से
इस्राएल के लोगों को इकट्ठा करूँगा।
उन व्यक्तियों में से कुछ अन्धे और लंगड़े हैं।
कुछ स्त्रियाँ गर्भवती हैं
और शिशु को जन्म देगी।
असंख्य लोग वापस आएंगे।
9 लौटते समय वे लोग रो रहे होंगे।
किन्तु मैं उनकी अगुवाई करूँगा
और उन्हें आराम दूँगा।
मैं उन लोगों को पानी के नालों के साथ लाऊँगा।
मैं उन्हें अच्छी सड़क से लाऊँगा जिससे वे ठोकर खाकर न गिरें।
मैं उन्हें इस प्रकार लाऊँगा क्योंकि मैं इस्राएल का पिता हूँ

और एप्रैम मेरा प्रथम पुत्र है।

10 “राष्ट्रों, यहोवा का यह सन्देश सुनो।
सागर के किनारे के दूर देशों को यह सन्देश कहो:
‘जिसने इस्राएल के लोगों को बिखेरा,
वही उन्हें एक साथ वापस लायेगा
और वह गडेरिये की तरह अपनी झुंड (लोग) की देखभाल करेगा।’
11 यहोवा याकूब को वापस लायेगा
यहोवा अपने लोगों की रक्षा उन लोगों से करेगा जो उनसे अधिक बलवान हैं।
12 इस्राएल के लोग सिय्योन की ऊँचाइयों पर आएंगे,
और वे आनन्द घोष करेंगे।
उनके मुख यहोवा द्वारा दी गई अच्छी चीज़ों के कारण प्रसन्नता से झूम उठेंगे।
यहोवा उन्हें अन्न, नयी दाखमधु, तेल, नयी भेड़ें और गायें देगा।
वे उस उद्यान की तरह होंगे जिसमें प्रचुर जल हो
और इस्राएल के लोग भविष्य में तंग नहीं किये जाएंगे।
13 तब इस्राएल की युवतियाँ प्रसन्न होंगी और नाचेंगी।
युवा, वृद्ध पुरुष भी उस नृत्य में भाग लेंगे।
मैं उनके दु:ख को सुख में बदल दूँगा।
मैं इस्राएल के लोगों को आराम दूँगा।
मैं उनकी खिन्नता को प्रसन्नता में बदल दूँगा।

14 याजकों के लिये आवश्यकता से अधिक बलि भेंट दी जायेगी
और मेरे लोग इससे भरे पूरे तथा सन्तुष्ट होंगे जो अच्छी चीज़ें मैं उन्हें दूँगा।”
यह सन्देश यहोवा का है।

15 यहोवा कहता है,
“रामा में एक चिल्लाहट सुनाई पड़ेगी—
यह कटु रूदन और अधिक उदासी भरी होगी।
राहेल अपने बच्चों के लिये रोएगी राहेल सान्त्वना पाने से इन्कार करेगी,
क्योंकि उसके बच्चे मर गए हैं।”

16 किन्तु यहोवा कहता है: “रोना बन्द करो,
अपनी आँखे आँसू से न भरो!
तुम्हें अपने काम का पुरस्कार मिलेगा!”
यह सन्देश यहोवा का है।
“इस्राएल के लोग अपने शत्रु के देश से वापस आएंगे।
17 अत: इस्राएल, तुम्हारे लिये आशा है।”
यह सन्देश यहोवा का है।
“तुम्हारे बच्चे अपने देश में वापस लौटेंगे।
18 मैंने एप्रैम को रोते सुना है।
मैंने एप्रैम को यह कहते सुना है:
‘हे यहोवा, तूने, सच ही, मुझे दण्ड दिया है
और मैंने अपना पाठ सीख लिया।
मैं उस बछड़े की तरह था जिसे कभी प्रशिक्षण नहीं मिला कृपया मुझे दण्ड देना बन्द कर, मैं तेरे पास वापस आऊँगा।
तू सच ही मेरा परमेश्वर यहोवा है।
19 हे यहोवा, मैं तुझसे भटक गया था।
किन्तु मैंने जो बुरा किया उससे शिक्षा ली।
अत: मैंने अपने हृदय और जीवन को बदल डाला।
जो मैंने युवाकाल में मूर्खतापूर्ण काम किये उनके लिये मैं परेशान और लज्जित हूँ।’ ”
20 परमेश्वर कहता है:

"तुम जानते हो कि एप्रैम मेरा प्रिय पुत्र है।
मैं उस बच्चे से प्यार करता हूँ।
हाँ, मैं प्राय: एप्रैम के विरुद्ध बोलता हूँ,
किन्तु फिर भी मैं उसे याद रखता हूँ। मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ।
मैं सच ही, उसे आराम पहुँचाना चाहता हूँ।"
यह सन्देश यहोवा का है।
21 "इस्राएल के लोगों, सड़कों के संकेतों को लगाओ।
उन संकेतों को लगाओ जो तुम्हें घर का मार्ग बतायें।
सड़क को ध्यान से देखो।
उस सड़क पर ध्यान रखो जिससे तुम यात्रा कर रहे हो।
मेरी दुल्हन इस्राएल घर लौटो,
अपने नगरों को लौट आओ।
22 अविश्वासी पुत्री कब तक तुम चारों ओर मंडराती रहोगी
तुम कब घर आओगी"
यहोवा एक नयी चीज़ धरती पर बनाता है:
एक स्त्री, पुरुष के चारों तरफ।

23 इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: "मैं यहूदा
के लोगों के लिये फिर अच्छा काम करूँगा। उस समय यहूदा देश
और उसके नगरों के लोग इन शब्दों का उपयोग फिर करेंगे: 'ऐ
सच्ची निवास भूमि ये पवित्र पर्वत यहोवा तुम्हें आशीर्वाद दे।'
24 "यहूदा के सभी नगरों में लोग एक साथ शान्तिपूर्वक रहेंगे।
किसान और वह व्यक्ति जो अपनी भेड़ों की रेवड़ों के साथ चारों
ओर घूमते हैं, यहूदा में शान्ति से एक साथ रहेंगे। 25 मैं उन लोगों
को आराम और शक्ति दूँगा जो थके और कमजोर हैं।"
26 यह सुनने के बाद मैं (यिर्मयाह) जगा और अपने चारों ओर
देखा। वह बड़ी आनन्ददायक नींद थी।

27 "वे दिन आ रहे हैं जब मैं यहूदा और इस्राएल के परिवारों
को बढ़ाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है। "मैं उनके बच्चों और
जानवरों के बढ़ने में भी सहायता करुँगा। यह पौधे के रोपने और
देखभाल करने जैसा होगा। 28 अतीत में, मैंने इस्राएल और यहूदा
पर ध्यान दिया, किन्तु मैंने उस समय उन्हें फटकारने की दृष्टि से
ध्यान दिया। मैंने उन्हें उखाड़ फेंका। मैंने उन्हें नष्ट किया। मैंने उन
पर अनेक विपत्तियाँ ढाई। किन्तु अब मैं उन पर उनको बनाने तथा
उन्हें शक्तिशाली करने की दृष्टि से ध्यान दूँगा।" यह सन्देश यहोवा
का है।
29 "उस समय लोग इस कहावत को कहना बन्द कर देंगे:

'पूर्वजों ने खट्टे अंगूर खाये
और बच्चों के दाँत खट्टे हो गये।'

30 किन्तु हर एक व्यक्ति अपने पाप के लिये मरेगा। जो व्यक्ति खट्टे
अंगूर खायेगा, वही खट्टे स्वाद के कारण अपने दाँत घिसेगा।"

नयी वाचा

31 यहोवा ने यह सब कहा, "वह समय आ रहा है जब मैं इस्राएल
के परिवार तथा यहूदा के परिवार के साथ नयी वाचा करूँगा।
32 यह उस वाचा की तरह नहीं होगी जिसे मैंने उनके पूर्वजों के
साथ की थी। मैंने वह वाचा तब की जब मैंने उनके हाथ पकड़े
और उन्हें मिस्र से बाहर लाया। मैं उनका स्वामी था और उन्होंने
वाचा तोड़ी।" यह सन्देश यहोवा का है।
33 "भविष्य में यह वाचा मैं इस्राएल के लोगों के साथ करूँगा।"
यह सन्देश यहोवा का है। "मैं अपनी शिक्षाओं को उनके मस्तिष्क
में रखूँगा तथा उनके हृदयों पर लिखूँगा। मैं उनका परमेश्वर होऊँगा
और वे मेरे लोग होंगे। 34 लोगों को यहोवा को जानने के लिए अपने
पड़ोसियों और रिश्तेदारों को, शिक्षा देना नहीं पड़ेगी। क्यों क्योंकि
सबसे बड़े से लेकर सबसे छोटे तक सभी मुझे जानेंगे।" यह सन्देश

यहोवा का है। “जो बुरा काम उन्होंने कर दिया उसे मैं क्षमा कर दूँगा। मैं उनके पापों को याद नहीं रखूँगा।”

यहोवा इस्राएल को कभी नहीं छोड़ेगा

35 यहोवा यह कहता है:
“यहोवा सूर्य को दिन में चमकाता है
और यहोबा चाँद और तारों को रात में चमकाता है।
यहोवा सागर को चंचल करता है जिससे उसकी लहरे तट से टकराती हैं।
उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।”
36 यहोवा यह सब कहता है,“मेरे सामने इस्राएल के वंशज उसी दशा में एक राष्ट्र न रहेंगे।
यदि मैं सूर्य, चन्द्र, तारे और सागर पर अपना नियन्त्रण खो दूँगा।”

37 यहोवा कहता है: “मैं इस्राएल के वंशजों का कभी नहीं त्याग करुँगा।
यह तभी संभव है यदि लोग ऊपर आसमान को नापने लगें और नीचे धरती के सारे रहस्यों को जान जायें।
यदि लोग वह सब कर सकेंगे तभी मैं इस्राएल के वंशजों को त्याग दूँगा।
तब मैं उनको, जो कुछ उन्होंने किया, उसके लिये त्यागूँगा।”
यह सन्देश यहोवा का है।

नया यरूशलेम

38 यह सन्देश यहोवा का है: “वे दिन आ रहे हैं जब यरूशलेम
नगर यहोवा के लिये फिर बनेगा। पूरा नगर हननेल के स्तम्भ से कोने
वाले फाटक तक फिर बनेगा। 39 नाप की जंजीर कोने वाले फाटक
से सीधे गारेब की पहाड़ी तक बिछेगी और तब गोआ नामक स्थान
तक फैलेगी। 40 पूरी घाटी जहाँ शव और राख फेंकी जाती है, यहोवा
के लिये पवित्र होगी और उसमें किद्रोन घाटी तक के सभी टीले पूर्व

में अश्वद्वार के कोने तक सम्मिलित होंगे। सारा क्षेत्र यहोवा के लिये पवित्र होगा। यरूशलेम का नगर भविष्य में न ध्वस्त होगा, न ही नष्ट किया जाएगा।"

32

यिर्मयाह एक खेत खरीदता है

1 सिदकिय्याह के यहूदा में राज्य काल के दसवें वर्ष, यिर्मयाह
को यहोवा का यह सन्देश मिला। सिदकिय्याह का दसवाँ वर्ष
नबूकदनेस्सर का अट्ठारहवाँ वर्ष था। 2 उस समय बाबुल के राजा
की सेना यरूशलेम नगर को घेरे हुए थी और यिर्मयाह रक्षक प्रांगण
में बन्दी था। यह प्रागंण यहूदा के राजा के महल में था। 3 यहूदा के
राजा सिदकिय्याह ने उस स्थान पर यिर्मयाह को बन्दी बना रखा था।
सिदकिय्याह यिर्मयाह की भविष्यवाणियों को पसन्द नहीं करता
था। यिर्मयाह ने कहा, "यहोवा यह कहता है: 'मैं यरूशलेम को शीघ्र
ही बाबुल के राजा को दे दूँगा। नबूकदनेस्सर इस नगर पर अधिकार
कर लेगा। 4 यहूदा का राजा सिदकिय्याह कसदियों की सेना से
बचकर निकल नहीं पाएगा। किन्तु वह निश्चय ही बाबुल के राजा को
दिया जायेगा और सिदकिय्याह बाबुल के राजा से आमने—सामने
बातें करेगा। सिदकिय्याह उसे अपनी आँखों से देखेगा। 5 बाबुल
का राजा सिदकिय्याह को बाबुल ले जाएगा। सिदकिय्याह तब तक
वहाँ ठहरेगा जब तक मैं उसे दण्ड नहीं दे लेता।' यह सन्देश यहोवा
का है। 'यदि तुम कसदियों की सेना से लड़ोगे, तुम्हें सफलता नहीं
मिलेगी।' "

6 जिस समय यिर्मयाह बन्दी था, उसने कहा, "यहोवा का सन्देश
मुझे मिला। वह सन्देश यह था: 7 'यिर्मयाह, तुम्हारा चचेरा भाई
हननेल शीघ्र ही तुम्हारे पास आएगा। वह तुम्हारे चाचा शल्लूम का
पुत्र है।' हननेल तुमसे यह कहेगा, 'यिर्मयाह, अनातोत नगर के पास
मेरा खेत खरीद लो। इसे खरीद लो क्योंकि तुम मेरे सबसे समीपी

रिश्तेदार हो। उस खेत को खरीदना तुम्हारा अधिकार तथा तुम्हारा उत्तरदायित्व है।' "

8 "तब यह वैसा ही हुआ जैसा यहोवा ने कहा था। मेरा चचेरा भाई रक्षक प्रांगण में मेरे पास आया। हननेल ने मुझसे कहा, 'यिर्मयाह, बिन्यामीन परिवार समूह के प्रदेश में अनातोत नगर के पास मेरा खेत खरीद लो। उस भूमि को तुम अपने लिये खरीदो क्योंकि यह तुम्हारा अधिकार है कि तुम इसे खरीदो और अपना बनाओ।' "

अत: मुझे ज्ञात हुआ कि यह यहोवा का सन्देश है। 9 मैंने अपने
चचेरे भाई हननेल से अनातोत में भूमि खरीद ली। मैंने उसके लिये
सत्तरह शेकेल चाँदी तौली। 10 मैंने पट्टे पर हस्ताक्षर किये और मुझे
पट्टे की एक प्रति मुहरबन्द मिली और जो मैंने किया था उसके
साक्षी के रूप से कुछ लोगों को बुला लिया तथा मैंने तराजू पर
चाँदी तौली। 11 तब मैंने पट्टे की मुहरबन्द प्रति और मुहर रहित प्रति
प्राप्त की 12 और मैंने उसे बारूक को दिया। बारुक नोरिय्याह का
पुत्र था। नोरिय्याह महसेयाह का पुत्र था। मुहरबन्द पट्टे में मेरी खरीद
की सभी शर्तें और सीमायें थीं। मैंने अपने चचेरे भाई हननेल और
अन्य साक्षियों के सामने वह पट्टा बारुक को दिया। उन साक्षियों ने
भी उस पट्टे पर हस्ताक्षर किये। उस समय यहूदा के बहुत से व्यक्ति
प्रांगण में बैठे थे जिन्होंने मुझे बारुक को पट्टा देते देखा।

13 सभी लोगों को साक्षी कर मैंने बारुक से कहा, 14 "इस्राएल का
परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है, 'मुहरबन्द और मुहर
रहित दोनों पट्टे की प्रतियों को लो और इसे मिट्टी के घड़े में रख दो।
यह तुम इसलिये करो कि पट्टा बहुत समय तक रहे।' 15 इस्राएल का
परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, 'भविष्य में मेरे लोग एक
बार फिर घर, खेत और अंगूर के बाग इस्राएल देश में खरीदेंगे।' "

16 नेरिय्याह के पुत्र बारुक को पट्टा देने के बाद मैंने यहोवा से प्रार्थना की। मैंने कहा:

17 “परमेश्वर यहोवा, तूने पृथ्वी और आकाश बनाया। तूने उन्हें
अपनी महान शक्ति से बनाया। तेरे लिये कुछ भी करना अति
कठिन नहीं है। 18 यहोवा, तू हज़ारों व्यक्तियों का विश्वासपात्र
और उन पर दयालु है। किन्तु तू व्यक्तियों को उनके पूर्वजों के
पापों के लिए भी दण्ड देता है। महान और शक्तिशाली परमेश्वर,
तेरा नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है। 19 हे यहोवा, तू महान कार्यों
की योजना बनाता और उन्हें करता है। तू वह सब देखता है
जिन्हें लोग करते हैं और उन्हें पुरस्कार देता है जो अच्छे काम
करते हैं तथा उन्हें दण्ड देता है जो बुरे काम करते हैं, तू उन्हें वह
देता है जिनके वे पात्र हैं। 20 हे यहोवा, तूने मिस्र देश में अत्यन्त
प्रभावशाली चमत्कार किया। तूने आज तक भी प्रभावशाली
चमत्कार किया है। तूने ये चमत्कार इस्राएल में दिखाया और तूने
इन्हें वहाँ भी दिखाये जहाँ कहीं मनुष्य रहते हैं। तू इन चमत्कारों
के लिये प्रसिद्ध है। 21 हे यहोवा, तूने प्रभावशाली चमत्कारों का
प्रयोग किया और अपने लोग इस्राएल को मिस्र से बाहर ले
आया। तूने उन चमत्कारों को करने के लिये अपने शक्तिशाली
हाथों का उपयोग किया। तेरी शक्ति आश्चर्यजनक रही!

22 “हे यहोवा, तूने यह धरती इस्राएल के लोगों को दी। यह
वही धरती है जिसे तूने उनके पूर्वजों को देने का वचन बहुत
पहले दिया था। यह बहुत अच्छी धरती है। यह बहुत सी अच्छी
चीज़ों वाली अच्छी धरती है। 23 इस्राएल के लोग इस धरती में
आये और उन्होंने इसे अपना बना लिया। किन्तु उन लोगों ने तेरी
आज्ञा नहीं मानी। वे तेरे उपदेशों के अनुसार न चले। उन्होंने वह
नहीं किया जिसके लिये तूने आदेश दिया। अत: तूने इस्राएल के
लोगों पर वे भयंकर विपत्तियाँ ढाई।

24 “अब शत्रु ने नगर पर घेरा डाला है। वे ढाल बना रहे हैं
जिससे वे यरूशलेम की चहारदीवारी पर चढ़ सकें और उस पर
अधिकार कर लें। अपनी तलवारों का उपयोग करके तथा भूख

और भयंकर बीमारी के कारण बाबुल की सेना यरूशलेम नगर को हरायेगी। बाबुल की सेना अब नगर पर आक्रमण कर रही है। यहोवा तूने कहा था कि यह होगा, और अब तू देखता है कि यह घटित हो रहा है।

25 “मेरे स्वामी यहोवा, वे सभी बुरी घटनायें घटित हो रही हैं। किन्तु तू अब मुझसे कह रहा है, ‘यिर्मयाह, चाँदी से खेत खरीदो और खरीद की साक्षी के लिये कुछ लोगों को चुनो।’ तू यह उस समय कह रहा है जब बाबुल की सेना नगर पर अधिकार करने को तैयार है। मैं अपने धन को उस तरह बरबाद क्यों करूँ?”

26 तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला: 27 “यिर्मयाह, मैं
यहोवा हूँ। मैं पृथ्वी के हर एक व्यक्ति का परमेश्वर हूँ। यिर्मयाह,
तुम जानते हो कि मेरे लिये कुछ भी असंभव नहीं है।” 28 यहोवा
ने यह भी कहा, “मैं शीघ्र ही यरूशलेम नगर को बाबुल की सेना
और बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को दे दूँगा। वह सेना नगर पर
अधिकार कर लेगी। 29 बाबुल की सेना पहले से ही यरूशलेम नगर
पर आक्रमण कर रही है। वे शीघ्र ही नगर में प्रवेश करेंगे और आग
लगा देंगे। वे इस नगर को जला कर राख कर देंगे। इस नगर में
ऐसे मकान हैं जिनमें यरूशलेम के लोगों ने असत्य देवता बाल को
छतों पर बलि भेंट दे कर मुझे क्रोधित किया है और लोगों ने अन्य
देवमूर्तियों को मदिरा भेंट चढ़ाई। बाबुल की सेना उन मकानों को
जला देगी। 30 मैंने इस्राएल और यहूदा के लोगों पर नजर रखी है।
वे जो कुछ करते हैं, बुरा है। वे तब से बुरा कर रहे हैं जब से वे
युवा थे। इस्राएल के लोगों ने मुझे बहुत क्रोधित किया। उन्होंने मुझे
क्रोधित किया क्योंकि उन्होंने उन देवमूर्तियों की पूजा की जिन्हें
उन्होंने अपने हाथों से बनाया।” यह सन्देश यहोवा का है। 31 “जब
से यरूशलेम नगर बसा तब से अब तक इस नगर के लोगों ने मुझे
क्रोधित किया है। इस नगर ने मुझे इतना क्रोधित किया है कि मुझे

इसे अपनी नजर के सामने से दूर कर देना चाहिये। 32 यहूदा और
इस्राएल के लोगों ने जो बुरा किया है, उसके लिये, मैं यरूशलेम को
नष्ट करुँगा। जनसाधारण उनके राजा, प्रमुख, उनके याजक और
नबी यहूदा के पुरुष और यरूशलेम के लोग, सभी ने मुझे क्रोधित
किया है।

33 "उन लोगों को सहायता के लिये मेरे पास आना चाहिये था।
लेकिन उन्होंने मुझसे अपना मुँह मोड़ा। मैंने उन लोगों को बार—बार
शिक्षा देनी चाही किन्तु उन्होंने मेरी एक न सुनी। मैंने उन्हें सुधारना
चाहा किन्तु उन्होंने अनसुनी की। 34 उन लोगों ने अपनी देवमूर्तियाँ
बनाई हैं और मैं उन देवमूर्तियों से घृणा करता हूँ। वे उन देवमूर्तियों
को उस मन्दिर में रखते हैं जो मेरे नाम पर है। इस तरह उन्होंने मेरे
मन्दिर को अपवित्र किया है।

35 "बेनहिन्नोम की घाटी में उन लोगों ने असत्य देवता बाल के
लिये उच्च स्थान बनाए। उन्होंने वे पूजा स्थान अपने पुत्र—पुत्रियों को
शिशु बलिभेंट के रूप में जला सकने के लिये बनाए। मैंने उनको
कभी ऐसे भयानक काम करने के लिये आदेश नहीं दिये। मैंने यह
कभी सोचा तक नहीं कि यहूदा के लोग ऐसा भयंकर पाप करेंगे।

36 "तुम सभी लोग कहते हो, "बाबुल का राजा यरूशलेम पर
अधिकार कर लेगा। वह तलवार, भुखमरी और भयंकर बीमारी का
उपयोग इस नगर को पराजित करने के लिये करेगा।" किन्तु यहोवा
इस्राएल के लोगों का परमेश्वर कहता है, 37 "मैंने इस्राएल और यहूदा
के लोगों को अपना देश छोड़ने को विवश किया है। मैं उन लोगों पर
बहुत क्रोधित था। किन्तु मैं उन्हें इस स्थान पर वापस लाऊँगा। मैं
उन्हें उन देशों से इकट्ठा करुँगा जिनमें जाने के लिये मैंने उन्हें विवश
किया। मैं उन्हें इस देश में वापस लाऊँगा। मैं उन्हें शान्तिपूर्वक और
सुरक्षित रहने दूँगा। 38 इस्राएल और यहूदा के लोग मेरे अपने लोग
होंगे और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा। 39 वे एक उद्देश्य रखेंगे सच

ही, जीवन भर मेरी उपासना करना चाहेंगे। उनके लिये शुभ होगा
और उनके बाद उनके परिवारों के लिये भी शुभ होगा।
40 " 'मैं इस्राएल और यहूदा के लोगों के साथ एक वाचा करूँगा।
यह वाचा सदैव के लिये रहेगी। इस वाचा के अनुसार मैं लोगों
से कभी दूर नहीं जाऊँगा। मैं उनके लिये सदैव अच्छा रहूँगा।
मैं उन्हें, अपना आदर करने के लिये इच्छुक बनाऊँगा। तब वे
मुझसे कभी दूर नहीं हटेंगे। 41 वे मुझे प्रसन्न करेंगे। मैं उनका भला
करने में आनन्दित होऊँगा और मैं, निश्चय ही, उन्हें इस धरती में
बसाऊँगा और उन्हें बढ़ाऊँगा। यह मैं अपने पूरे हृदय और आत्मा
से करूँगा।' "
42 यहोवा जो कहता है, वह यह है, "मैंने इस्राएल और यहूदा के
लोगों पर यह बड़ी विपत्ति ढाई है। इसी तरह मैं उन्हें अच्छी चीज़ें
दूँगा। मैं उन्हें अच्छी चीज़ें करने का वचन देता हूँ। 43 तुम लोग यह
कहते हो, "यह देश सूनी मरूभूमि है। यहाँ कोई व्यक्ति और कोई
जानवर नहीं है। बाबुल की सेना ने इस देश को पराजित किया।"
किन्तु भविष्य में लोग फिर इस देश में भूमि खरीदेंगे। वे अपनी
वाचाओं पर हस्ताक्षर के साक्षी होंगे। लोग उस प्रदेश में फिर खेत
खरीदेंगे जिसमें बिन्यामीन परिवार समूह के लोग रहते हैं। 44 लोग
अपने धन का उपयोग करेंगे और खेत खरीदेंगे। वे यरूशलेम क्षेत्र
के चारों ओर खेत खरीदेंगे। वे यहूदा प्रदेश के नगरों, पहाड़ी प्रदेश,
पश्चिमी पर्वत चरण, और दक्षिणी मरुभूमि के क्षेत्र में खेत खरीदेंगे।
यह होगा, क्योंकि मैं तुम्हारे लोगों को वापस लाऊँगा।" यह सन्देश
यहोवा का है।

33

परमेश्वर की प्रतिज्ञा

1 यिर्मयाह को दूसरी बार यहोवा का सन्देश मिला। यिर्मयाह अभी
भी रक्षक प्रांगण में ताले के अन्दर बन्दी था। 2 "यहोवा ने पृथ्वी

को बनाया और उसकी वह रक्षा करता है। उसका नाम यहोवा
है। यहोवा कहता है, 3 'यहूदा, मुझसे प्रार्थना करो और मैं उसे पूरा
करूँगा। मैं तुम्हें महत्वपूर्ण रहस्य बताऊँगा। तुमने उन्हें कभी पहले
नहीं सुना है।' 4 इस्राएल का परमेश्वर यहोवा है। यहोवा यरूशलेम के
मकानों और यहूदा के राजाओं के महलों के बारे में यह कहता है।
'शत्रु उन मकानों को ध्वस्त कर देगा। शत्रु नगर की चहारदीवारियों
के ऊपर तक ढाल बनायेगा। शत्रु तलवार का उपयोग करेगा और
इन नगरों के लोगों के साथ युद्ध करेगा।' "

5 " 'यरूशलेम के लोगों ने बहुत बुरे काम किये हैं। मैं उन लोगों
पर क्रोधित हूँ। मैं उनके विरुद्ध हो गया हूँ। इसलिये वहाँ मैं असंख्य
लोगों को मार डालूँगा। बाबुल की सेना यरूशलेम के विरुद्ध लड़ने
के लिये आएगी। यरूशलेम के घरों में असंख्य शव होंगे।

6 " 'किन्तु उसके बाद मैं उस नगर में लोगों को स्वस्थ बनाऊँगा।
मैं उन लोगों को शान्ति और सुरक्षा का आनन्द लेने दूँगा। 7 मैं
इस्राएल और यहूदा में फिर से सब कुछ अच्छा घटित होने दूँगा।
मैं उन लोगों को अतीत की तरह शक्तिशाली बनाऊँगा। 8 उन्होंने
मेरे विरुद्ध पाप किये, किन्तु मैं उस पाप को धो दूँगा। वे मेरे विरुद्ध
लड़े, किन्तु मैं उन्हें क्षमा कर दूँगा। 9 तब यरूशलेम आश्चर्यचकित
करने वाला स्थान हो जायेगा। लोग सुखी होंगे और अन्य राष्ट्रों के
लोग इसकी प्रशंसा करेंगे। यह उस समय होगा जब लोग यह सुनेंगे
कि वहाँ सब अच्छा हो रहा है। वे उन अच्छे कामों को सुनेंगे जिन्हें
मैं यरूशलेम के लिये कर रहा हूँ।'

10 "तुम लोग यह कह रहे हो, 'हमारा देश सूनी मरुभूमि है। वहाँ
कोई व्यक्ति या कोई जानवर जीवित नहीं रहे।' अब यरूशलेम की
सड़कों और यहूदा के नगरों में निर्जन शान्ति है। किन्तु वहाँ शीघ्र ही
चहल—पहल होगी। 11 वहाँ सुख और आनन्द की किलोलें होंगी।
वहाँ वर—वधु की उमंग भरी चुहल होगी। वहाँ यहोवा के मन्दिर

में अपनी भेंट लाने वाले की मधुर वाणी होगी। वे लोग कहेंगे, सर्वशक्तिमान यहोवा की स्तुति करो! यहोवा दयालु है! यहोवा की दया सदा बनी रहती है! लोग ये बातें कहेंगे क्योंकि मैं फिर यहूदा के लिये अच्छे काम करूँगा। यह वैसा ही होगा जैसा आरम्भ में था।” ये बातें यहोवा ने कही।
12 सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, “यह स्थान अब सूना है। यहाँ कोई लोग या जानवर नहीं रह रहें। किन्तु अब यहूदा के सभी नगरों में लोग रहेंगे। वहाँ गडरिये होंगे और चरागाहें होंगी जहाँ वे अपनी
रेवड़ों को आराम करने देंगे। 13 गडरिये अपनी भेड़ों को तब गिनते
हैं जब भेड़ें उनके आगे चलती हैं। लोग अपनी भेड़ों को पूरे देश में चारों ओर पहाड़ी प्रदेश, पश्चिमी पर्वत चरण, नेगव और यहूदा के सभी नगरों में गिनेंगे।”

अच्छी शाखा

14 यह सन्देश यहोवा का है: “मैंने इस्राएल और यहूदा के लोगों को विशेष वचन दिया है। वह समय आ रहा है जब मैं वह करूँगा
जिसे करने का वचन मैंने दिया है। 15 उस समय मैं दाऊद के परिवार
से एक अच्छी शाखा उत्पन्न करूँगा। वह अच्छी शाखा वह सब
करेगी जो देश के लिये अच्छा और उचित होगा। 16 इस शाखा के
समय यहूदा के लोगों की रक्षा हो जाएगी। लोग यरूशलेम में सुरक्षित रहेंगे। उस शाखा का नाम ‘यहोवा हमारी धार्मिकता (विजय) हैं।’ ”
17 यहोवा कहता है, “दाऊद के परिवार का कोई न कोई व्यक्ति
सदैव सिंहासन पर बैठेगा और इस्राएल के परिवार पर शासन करेगा
18 और लेवी के परिवार से याजक सदैव होंगे। वे याजक मेरे सामने सदा रहेंगे और मुझे होमबलि, अन्नबलि और बलिभेंट करेंगे।”
19 यहोवा का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला। 20 यहोवा कहता
है, “मैंने रात और दिन से वाचा की है। मैंने वाचा की कि वह सदैव रहेगी। तुम उस वाचा को बदल नहीं सकते। दिन और रात सदा ठीक समय पर आएंगे। यदि तुम उस वाचा को बदल सकते हो
21 तो तुम दाऊद और लेवी के साथ की गई मेरी वाचा को भी बदल

सकते हो। तब दाऊद और लेवी के परिवार के वंशज राजा और
पुरोहित नहीं हो सकेंगे। 22 किन्तु मैं अपने सेवक दाऊद को और
लेवी के परिवार समूह को अनेक वंशज दूँगा। वे उतने होंगे जितने
आकाश में तारे हैं, और आकाश के तारों को कोई गिन नहीं सकता
और वे इतने होंगे जितने सागर तट पर बालू के कण होते हैं और
उन बालू के कणों को कोई गिन नहीं सकता।"

23 यहोवा का यह सन्देश यिर्मयाह ने प्राप्त किया: 24 "यिर्मयाह,
क्या तुमने सुना है कि लोग क्या कह रहे हैं वे लोग कह रहे हैं:
'यहोवा ने इस्राएल और यहूदा के दो परिवारों को अस्वीकार कर
दिया है। यहोवा ने उन लोगों को चुना था, किन्तु अब वह उन्हें राष्ट्र
के रूप में भी स्वीकार नहीं करता।' "

25 यहोवा कहता है, "यदि मेरी वाचा दिन और रात के साथ
बनी नहीं रहती, और यदि मैं आकाश और पृथ्वी के लिये नियम
नहीं बनाता तभी संभव है कि मैं उन लोगों को छोड़ूँ। 26 तभी यह
संभव होगा कि मैं याकूब के वंशजों से दूर हट जाऊँ और तभी यह
हो सकता है कि मैं दाऊद के वंशजों को इब्राहीम, इसहाक और
याकूब के वंशजों पर शासन करने न दूँ। किन्तु दाऊद मेरा सेवक है
और मैं उन लोगों पर दया करूँगा और मैं फिर उन लोगों को उनकी
धरती पर वापस लौटा लाऊँगा।"

34

यहूदा के राजा सिदकिय्याह को चेतावनी

1 यहोवा का यह सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह सन्देश उस
समय मिला जब बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर यरूशलेम और
उसके चारों ओर के सभी नगरों से युद्ध कर रहा था। नबूकदनेस्सर
अपने साथ अपनी सारी सेना और शासित राज्यों तथा साम्राज्य के
लोगों को मिलाये हुए था।

2 सन्देश यह था: "यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर जो
कहता है, वह यह है: यिर्मयाह, यहूदा के राजा सिदकिय्याह के पास

जाओ और उसे यह सन्देश दो: 'सिदकिय्याह, यहोवा जो कहता
है, वह यह है: मैं यरूशलेम नगर को बाबुल के राजा को शीघ्र ही
दे दूँगा और वह उसे जला डालेगा। 3 सिदकिय्याह, तुम बाबुल के
राजा से बचकर निकल नहीं पाओगे। तुम निश्चय ही पकड़े जाओगे
और उसे दे दिये जाओगे। तुम बाबुल के राजा को अपनी आँखों
से देखोगे। वह तुमसे आमने—सामने बातें करेगा और तुम बाबुल
जाओगे। 4 किन्तु यहूदा के राजा सिदकिय्याह यहोवा के दिये वचन
को सुनो। यहोवा तुम्हारे बारे में जो कहता है, वह यह है: तुम तलवार
से नहीं मारे जाओगे। 5 तुम शान्तिपूर्वक मरोगे। तुम्हारे राजा होने से
पहले जो राजा राज्य करते थे तुम्हारे उन पूर्वजों के सम्मान के लिये
लोगों ने अग्नि तैयार की। उसी प्रकार तुम्हारे सम्मान के लिये लोग
अग्नि बनायेंगे। वे तुम्हारे लिये रोएंगे। वे शोक में डूबे हुए कहेंगे,
"हे स्वामी," मैं स्वयं तुम्हें यह वचन देता हूँ।' " यह सन्देश यहोवा
का है।

6 अत: यिर्मयाह ने यहोवा का सन्देश यरूशलेम में सिदकिय्याह
को दिया। 7 यह उस समय हुआ जब बाबुल के राजा की सेना
यरूशलेम के विरुद्ध लड़ रही थी। बाबुल की सेना यहूदा के उन
नगरों के विरुद्ध भी लड़ रही थी जिन पर अधिकार नहीं हो सका
था। वे लाकीश और अजेका नगर थे। वे ही केवल किलाबन्द नगर
थे जो यहूदा प्रदेश में बचे थे।

लोगों ने वाचाओं में से एक को तोड़ा

8 सिदकिय्याह ने यरूशलेम के सभी निवासियों से यह वाचा की
थी कि मैं सभी यहूदी दासों को मुक्त कर दूँगा। जब सिदकिय्याह
ने वह वाचा कर ली, उसके बाद यिर्मयाह को यहोवा का सन्देश
मिला। 9 हर व्यक्ति से आशा की जाती है कि वह अपने यहूदी
दासों को स्वतन्त्र करे। सभी यहूदी दास—दासी स्वतन्त्र किये जाने
थे। यहूदा के परिवार समूह के किसी भी व्यक्ति के दास रखने की
संभावना किसी भी व्यक्ति से नहीं की जा सकती थी। 10 अत: सभी

प्रमुखों और यहूदा के सभी लोगों ने इस वाचा को स्वीकार किया
था। हर एक व्यक्ति अपने दास—दासियों को स्वतन्त्र कर देगा और
उन्हें और अधिक समय तक दास से रूप में नहीं रखेगा। हर एक
व्यक्ति सहमत था और इस प्रकार सभी दास स्वतन्त्र कर दिये गए।
11 किन्तु उसके बाद उन लोगों ने जिनके पास दास थे, अपने निर्णय
को बदला दिया। अत: उन्होंने स्वतन्त्र किये गये लोगों को फिर
पकड़ लिया और उन्हें दास बनाया।

12 तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला: 13 "यिर्मयाह, यहोवा
इस्राएल के लोगों का परमेश्वर जो कहता है वह यह है: 'मैं तुम्हारे
पूर्वजों को मिस्र से बाहर लाया जहाँ वे दास थे। जब मैंने ऐसा किया
तब मैंने उनके एक वाचा की। 14 मैंने तुम्हारे पूर्वजों से कहा, "हर
एक सात वर्ष के अन्त में प्रत्येक व्यक्ति को अपने यहूदी दासों को
स्वतन्त्र कर देना चाहिये। यदि तुम्हारे यहाँ तुम्हारा ऐसा यहूदी साथी
है जो अपने को तुम्हारे हाथ बेच चुका है तो तुम्हें उसे छ: महीने
सेवा के बाद स्वतन्त्र कर देना चाहिये।" किन्तु तुम्हारे पूर्वजों ने न
तो मेरी सुनी, न ही उस पर ध्यान दिया। 15 कुछ समय पहले तुमने
अपने हृदय को, जो उचित है, उसे करने के लिये बदला। तुममें से
हर एक ने अपने उन यहूदी साथियों को स्वतन्त्र किया जो दास थे
और तुमने मेरे सामने उस मन्दिर में जो मेरे नाम पर है एक वाचा
भी की। 16 किन्तु अब तुमने अपने इरादे बदल दिये हैं। तुमने यह
प्रकट किया है कि तुम मेरे नाम का सम्मान नहीं करते। तुमने यह
कैसे किया तुम में से हर एक ने अपने दास दासियों को वापस ले
लिया है जिन्हें तुमने स्वतन्त्र किया था। तुम लोगों ने उन्हें फिर दास
होने के लिये विवश किया है।'

17 "अत: जो यहोवा कहता है, वह यह है: 'तुम लोगों ने मेरी
आज्ञा का पालन नहीं किया है। तुमने अपने साथी यहूदियों को
स्वतन्त्रता नहीं दी है। क्योंकि तुमने यह वाचा पूरी नहीं की है,
इसलिये मैं स्वतन्त्रता दूँगा। यह यहोवा का सन्देश है। तलवार से,

भयंकर बीमारी से और भूख से मारे जाने की स्वतन्त्रता मैं दूँगा। मैं
तुम्हें कुछ ऐसा कर दूँगा कि जब वे तुम्हारे बारे में सुनेंगे तो पृथ्वी
के सारे राज्य भयभीत हो उठेंगे। 18 मैं उन लोगों को दूसरों के हाथ
दूँगा जिन्होंने मेरी वाचा को तोड़ा है और उस प्रतिज्ञा का पालन
नहीं किया है जिसे उन्होंने मेरे सामने की है। इन लोगों ने मेरे सामने
एक बछड़े को दो टुकड़ों में काटा और वे दोनों टुकड़ों के बीच से
गुजरे। 19 ये वे लोग हैं जो उस समय बछड़े के टुकड़ों के बीच से
गुजरे जब उन्होंने मेरे साथ वाचा की थी: यहूदा और यरूशलेम के
प्रमुख, न्यायालयों के बड़े अधिकारी, याजक और उस देश के लोग।
20 अत: मैं उन लोगों को उनके शत्रुओं और उन व्यक्तियों को दूँगा जो
उन्हें मार डालना चाहते हैं। उन व्यक्तियों के शव हवा में उड़ने वाले
पक्षियों और पृथ्वी पर के जंगली जानवरों के भोजन बनेंगे। 21 मैं
यहूदा के राजा सिदकिय्याह और उसके प्रमुखों को उनके शत्रुओं
एवं जो उन्हें मार डालना चाहते हैं, को दूँगा। मैं सिदकिय्याह और
उनके लोगों को बाबुल के राजा की सेना को तब भी दूँगा जब वह
सेना यरूशलेम को छोड़ चुकी होगी। 22 किन्तु मैं कसदी सेना को
यरूशलेम में फिर लौटने का आदेश दूँगा। यह सन्देश यहोवा का है।
वह सेना यरूशलेम के विरुद्ध लड़ेगी। वे इस पर अधिकार करेंगे,
इसमें आग लगायेंगे तथा इसे जला डालेंगे और मैं यहूदा के नगरों
को नष्ट कर दूँगा। वे नगर सूनी मरुभूमि हो जायेंगे। वहाँ कोई व्यक्ति
नहीं रहेगा।' "

35

रेकाबी परिवार का उत्तम उदाहरण

1 जब यहोयाकीम यहूदा का राजा था तब यहोवा का सन्देश
यिर्मयाह का मिला। यहोयाकीम राजा योशिय्याह का पुत्र था।
यहोवा का सन्देश यह था: 2 "यिर्मयाह, रेकाबी परिवार के पास

जाओ। उन्हें यहोवा के मन्दिर के बगल के कमरों में से एक में आने
के लिये निमन्त्रित करो। उन्हें पीने के लिये दाखमधु दो।”
3 अत: मैं (यिर्मयाह) याजन्याह से मिलने गया। याजन्याह उस
यिर्मयाह नामक एक व्यक्ति का पुत्र था जो हबस्सिन्याह नामक
व्यक्ति का पुत्र था और मैं याजन्याह के सभी भाइयों और पुत्रों से
मिला। मैंने पूरे रेकाबी परिवार को एक साथ इकट्ठा किया। 4 तब
मैं रेकाबी परिवार को यहोवा के मन्दिर में ले आया। हम लोग
उस कमरे में गये जो हानान के पुत्रों का कहा जाता है। हानान
यिग्दल्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था। हानान परमेश्वर का व्यक्ति
था। वह कमरा उस कमरे से अगला कमरा था जिसमें यहूदा के
राजकुमार ठहरते थे। यह शल्लूम के पुत्र मासेयाह के कमरे के ऊपर
था। मासेयाह मन्दिर में द्वारपाल था। 5 तब मैंने (यिर्मयाह) रेकाबी
परिवार के सामने कुछ प्यालों के साथ दाखमधु से भरे कुछ कटोरे
रखे और मैंने उनसे कहा, “थोड़ी दाखमधु पीओ।”
6 किन्तु रेकाबी लोगों ने उत्तर दिया, “हम दाखमधु कभी नहीं
पीते। हम इसलिये नहीं पीते क्योंकि हमारे पूर्वज रेकाबी के पुत्र
योनादाब ने यह आदेश दिया था: ‘तुम्हें और तुम्हारे वंशजों को
दाखमधु कभी नहीं पीनी चाहिये 7 तुम्हें कभी घर बनाना, पौधे रोपना
और अंगूर की बेल नहीं लगानी चाहिये। तुम्हें उनमे से कुछ भी नहीं
करना चाहिये। तुम्हें केवल तम्बुओं में रहना चाहिये। यदि तुम ऐसा
करोगे तो उस प्रदेश में अधिक समय तक रहोगे जहाँ तुम एक स्थान
से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हो।’ 8 इसलिये हम रेकाबी लोग उन
सब चीज़ों का पालन करते हैं जिन्हें हमारे पूर्वज योनादाब ने हमें
आदेश दिया है। 9 हम दाखमधु कभी नहीं पीते और हमारी पत्नियाँ
पुत्र और पुत्रियाँ दाखमधु कभी नहीं पीते। हम रहने के लिये घर कभी
नहीं बनाते और हम लोगों के अंगूर के बाग या खेत कभी नहीं होते
और हम फसलें कभी नहीं उगाते। 10 हम तम्बूओं में रहे हैं और वह
सब माना है जो हमारे पूर्वज योनादाब ने आदेश दिया है। 11 किन्तु

जब बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यहूदा देश पर आक्रमण किया तब हम लोग यरूशलेम को गए। हम लोगों ने आपस में कहा, 'आओ हम यरूशलेम नगर में शरण लें जिससे हम कसदी और अरामी सेना से बच सकें।' अत: हम लोग यरूशलेम में ठहर गए।"

12 तब यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला: 13 "इस्राएल के
लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: "यिर्मयाह, जाओ
यहूदा एवं यरूशलेम के लोगों को यह सन्देश दो: 'लोगों, तुम्हें सबक
सीखना चाहिये और मेरे सन्देश का पालन करना चाहिये।' यह
सन्देश यहोवा का है। 14 'रेकाब के पुत्र योनादाब ने अपने पुत्रों
को आदेश दिया कि वे दाखमधु न पीएं, और उस आदेश का पालन
हुआ है। आज तक योनादाब के वंशजों ने अपने पूर्वज के आदेश
का पालन किया है। वे दाखमधु नहीं पीते। किन्तु मैं तो यहोवा हूँ
और यहूदा के लोगों, मैंने तुम्हें बार बार सन्देश दिया है, किन्तु तुमने
उसका पालन नहीं किया। 15 इस्राएल और यहूदा के लोगों, मैंने
अपने सेवक नबियों को तुम्हारे पास भेजा। मैंने उन्हें तुम्हारे पास
बार बार भेजा। उन नबियों ने तुमसे कहा, "इस्राएल और यहूदा के
लोगों, तुम सब को बुरा करना छोड़ देना चाहिये। तुम्हें अच्छा होना
चाहिये। अन्य देवताओं का अनुसरण न करो। उन्हें न पूजो, न ही
उनकी सेवा करो। यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे तो तुम उस
देश में रहोगे जिसे मैंने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को दिया है।" किन्तु
तुम लोगों ने मेरे सन्देश पर ध्यान नहीं दिया। 16 योनादाब के वंशजों
ने अपने पूर्वज के आदेश को, जो उसने दिया, माना। किन्तु यहूदा
के लोगों ने मेरी आज्ञा का पालन नहीं किया।'

17 "अत: इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: 'मैंने कहा कि यहूदा और यरूशलेम के लिये बहुत सी बुरी घटनायें घटेंगी। मैं उन बुरी घटनाओं को शीघ्र ही घटित कराऊँगा। मैंने उन लोगों को समझाया, किन्तु उन्होंने मेरी एक न सुनी। मैंने उन्हें पुकारा, किन्तु उन्होंने उत्तर नहीं दिया।' "

18 तब यिर्मयाह ने रेकाबी परिवार के लोगों से कहा, “इस्राएल
का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है, ‘तुम लोगों ने अपने
पूर्वज योनादाब के आदेश का पालन किया है। तुमने योनादाब
की सारी शिक्षाओं का अनुसरण किया है। तुमने वह सब किया
है जिसके लिये उसने आदेश दिया था।’ 19 इसलिये इस्राएल का
परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है: ‘रेकाब के पुत्र योनादाब
के वंशजों में से एक ऐसा सदैव होगा जो मेरी सेवा करेगा।’ ”

36

राजा यहोयाकीम यिर्मयाह के पत्रकों को जला देता है

1 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह योशिय्याह के पुत्र
यहोयाकीम के यहूदा में राज्यकाल के चौथे वर्ष हुआ। यहोवा का
सन्देश यह था: 2 “यिर्मयाह, पत्रक लो और उन सन्देशों को उस पर
लिख डालो जिन्हें मैंने तुमसे कहे हैं। मैंने तुमसे इस्राएल और यहूदा
के राष्ट्रों एवं सभी राष्ट्रों के बारे में बातें की हैं। जब से योशिय्याह
राजा था तब से अब तक मैंने जो सन्देश तुम्हें दिये हैं, उन्हें लिख
डालो। 3 संभव है, यहूदा का परिवार यह सुने कि मैं उनके लिये
क्या करने की योजना बना रहा हूँ और संभव है वे बुरा काम करना
छोड़ दें। यदि वे ऐसा करेंगे तो मैं उन्हें, जो बुरे पाप उन्होंने किये हैं,
उसके लिये क्षमा कर दूँगा।”

4 इसलिये यिर्मयाह ने बारुक नामक एक व्यक्ति को बुलाया।
बारुक, नेरिय्याह नामक व्यक्ति का पुत्र था। यिर्मयाह ने उन सन्देशों
को कहा जिन्हें यहोवा ने उसे दिया था। जिस समय यिर्मयाह सन्देश
दे रहा था उसी समय बारुक उन्हें पत्रक पर लिख रहा था। 5 तब
यिर्मयाह ने बारुक से कहा, “मैं यहोवा के मन्दिर में नहीं जा सकता।
मुझे वहाँ जाने की आज्ञा नहीं है। 6 इसलिये मैं चाहता हूँ कि तुम
यहोवा के मन्दिर में आओ। वहाँ उपवास के दिन जाओ और पत्रक
से लोगों को सुनाओ। उन सन्देशों को जिन्हें यहोवा ने तुम्हें दिया

और जिनको तुमने पत्रक में लिखा, उन्हें लोगों के सामने पढ़ो। उन सन्देंशों को यहूदा के सभी लोगों के सामने पढ़ो जो अपने रहने के
नगरों से यरूशलेम में आएं। 7 शायद वे लोग यहोवा से सहायता
की याचना करें। कदाचित् हर एक व्यक्ति बुरा काम करना छोड़ दे। यहोवा ने यह घोषित कर दिया है कि वह उन लोगों पर बहुत क्रोधित है।”

8 अत: नेरिय्याह के पुत्र बारुक ने वह सब किया जिसे यिर्मयाह नबी ने करने को कहा। बारुक ने उस पत्रक को जोर से पढ़ा जिसमें यहोवा के सन्देश लिखे थे। उसने इसे यहोवा के मन्दिर में पढ़ा।

9 यहोयाकीम के राज्यकाल के पाँचवें वर्ष के नवें महीने में एक उपवास घोषित हुआ। यह आज्ञा थी कि यरूशलेम में रहने वाले सभी लोग और यहूदा के नगरों से यरूशलेम में आने वाले लोग
यहोवा के सामने उपवास रखेंगे। 10 उस समय बारुक ने उस पत्रक
को पढ़ा जिसमें यिर्मयाह के कथन थे। उसने पत्रक को यहोवा के मन्दिर में पढ़ा। बारुक ने पत्रक को उन सभी लोगों के सामने पढ़ा जो यहोवा के मन्दिर में थे। बारुक उस समय ऊपरी आँगन में यमरिया के कमरे में था। वह पत्रक को पढ़ रहा था। वह कमरा मन्दिर के नये द्वार के पास स्थित था। यमरिया शापान का पुत्र था। यमरिया मन्दिर में एक शास्त्री था।

11 मीकायाह नामक एक व्यक्ति ने यहोवा के उन सारे सन्देशों
को सुना जिन्हें बारुक ने पत्रक से पढ़ा। मीकायाह उस गमर्याह का
पुत्र था जो शापान का पुत्र था। 12 जब मीकायाह ने पत्रक से सन्देश
को सुना तो वह राजा के महल में सचिव के कमरे में गया। राजकीय सभी अधिकारी राजमहल में बैठे थे। उन अधिकारियों के नाम ये हैं: सचिव एलीशामा, शमायाह का पुत्र दलायाह, अबबोर का पुत्र एलनातान, शापान का पुत्र गमर्याह, हनन्याह का पुत्र सिदकिय्याह
और अन्य सभी राजकीय अधिकारी भी वहाँ थे। 13 मीकायाह ने
उन अधिकारियों से वह सब कहा जो उसने बारुक को पत्रक से पढ़ते सुना था।

14 तब उन अधिकारियों ने बारुक के पास यहूदी नामक एक व्यक्ति को भेजा। (यहूदी शेलेम्याह के पुत्र नतन्याह का पुत्र था। शेलेम्याह कूशी का पुत्र था।) यहूदी ने बारुक से कहा, "वह पत्रक तुम लाओ जिसे तुमने पढ़ा और मेरे साथ चलो।"

नेरिय्याह के पुत्र बारुक ने पत्रक को लिया और यहूदी के साथ अधिकारियों के पास गया।

15 तब उन अधिकारियों ने बारुक से कहा, "बैठो और पत्रक को हम लोगों के सामने पढ़ो।"

अत: बारुक ने उस पत्रक को उन्हें सुनाया।

16 उन राजकीय अधिकारियों ने उस पत्रक से सभी सन्देश सुने। तब वे डर गए और एक दूसरे को देखने लगे। उन्होंने बारुक से कहा, "हमें पत्रक के सन्देश के बारे में राजा यहोयाकीम से कहना होगा।"

17 तब अधिकारियों ने बारुक से एक प्रश्न किया। उन्होंने पूछा, "बारुक यह बताओ कि तुमने ये सन्देश कहाँ से पाए जिन्हें तुमने इस पत्रक पर लिखा क्या तुमने उन सन्देशों को लिखा जिन्हें यिर्मयाह ने तुम्हें बताया"

18 बारुक ने उत्तर दिया, "हाँ, यिर्मयाह ने कहा और मैंने सारे सन्देशो को स्याही से इस पत्रक पर लिखा।"

19 तब राजकीय अधिकारियों ने बारुक से कहा, "तुम्हें और यिर्मयाह को कहीं जा कर छिप जाना चाहिये। किसी से न बताओ कि तुम कहाँ छिपे हो।"

20 तब राजकीय अधिकारियों ने शास्त्री एलीशामा कमरे में पत्रक को रखा। वे राजा यहोयाकीम के पास गए और पत्रक के बारे में उसे सब कुछ बताया।

21 अत: राजा यहोयाकीम ने यहूदी को पत्रक को लेने भेजा।
यहूदी शास्त्री एलीशामा के कमरे से पत्रक को लाया। तब यहूदी ने
राजा और उसके चारों ओर खड़े सभी सेवकों को पत्रक को पढ़
कर सुनाया। 22 यह जिस समय हुआ, नवाँ महीना था, अत: राजा

यहोयाकीम शीतकालीन महल — खण्ड में बैठा था। राजा के सामने
अंगीठी में आग जल रही थी। 23 यहूदी ने पत्रक से पढ़ना आरम्भ
किया। किन्तु जब वह दो या तीन पक्तियाँ पढ़ता, राजा यहोयाकीम
पत्रक को पकड़ लेता था। तब वह उन पक्तियों को एक छोटे चाकू
से पत्रक में से काट डालता था और उन्हें अंगीठी में फेंक देता था।
अन्तत: पूरा पत्रक आग में जला दिया गया 24 जब राजा यहोयाकीम
और उसके सेवकों ने पत्रक से सन्देश सुने तो वे डरे नहीं। उन्होंने
अपने वस्त्र यह प्रकट करने के लिए नहीं फाड़े कि उन्हें अपने बुरे
किये कामों के लिये दु:ख है।

25 एलनातान, दलइया और यिर्मयाह ने राजा यहोयाकीम से पत्रक
को न जलाने के लिये बात करने का प्रयत्न किया। किन्तु राजा ने
उनकी एक न सुनी 26 और राजा यहोयाकीम ने कुछ व्यक्तियों को
आदेश दिया कि वे शास्त्री बारुक और यिर्मयाह नबी को बन्दी
बनायें। ये व्यक्ति राजा का एक पुत्र अज्राएल का पुत्र सरायाह और
अब्देल का पुत्र शेलेम्याह थे। किन्तु वे व्यक्ति बारुक और यिर्मयाह
को न ढूँढ सके क्योंकि यहोवा ने उन्हें छिपा दिया था।

27 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह को मिला। यह तब हुआ जब
यहोयाकीम ने यहोवा के उन सभी सन्देशों वाले पत्रक को जला
दिया था, जिन्हें यिर्मयाह ने बारुक से कहा था और बारुक ने सन्देशों
को पत्रक पर लिखा था। यहोवा का जो सन्देश यिर्मयाह को मिला,
वह यह था:

28 "यिर्मयाह, दूसरा पत्रक तैयार करो। इस पर उन सभी सन्देशों
को लिखो जो प्रथम पत्रक पर थे। यानि वही पत्रक जिसे यहूदा के
राजा यहोयाकीम ने जला दिया था। 29 यिर्मयाह, यहूदा के राजा
यहोयाकीम से यह भी कहो, यहोवा जो कहता है, वह यह है:
'यहोयाकीम तुमने उस पत्रक को जला दिया। तुमने कहा, "यिर्मयाह
ने क्यों लिखा कि बाबुल का राजा निश्चय ही आएगा और इस
देश को नष्ट करेगा वह क्यों कहता है कि बाबुल का राजा इस
देश के लोगों और जानवरों दोनों को नष्ट करेगा" 30 अत: यहूदा

के राजा यहोयाकीम के बारे में जो यहोवा कहता है, वह यह है:
यहोयाकीम के वंशज दाऊद के राज सिंहासन पर नहीं बैठेंगे। जब
यहोयाकीम मरेगा उसे राजा जैसे अन्त्येष्टि नहीं दी जाएगी, अपितु
उसका शव भूमि पर फेंक दिया जायेगा। उसका शव दिन की गर्मी
में और रात के ठंडे पाले में छोड़ दिया जाएगा। 31 यहोवा अर्थात्
मैं यहोयाकीम और उसकी सन्तान को दण्ड दूँगा और मैं उसके
अधिकारियों को दण्ड दूँगा। मैं यह करुँगा क्योंकि वे दुष्ट हैं। मैंने
उन पर तथा यरूशलेम के सभी निवासियों पर और यहूदा के लोगों
पर भयंकर विपत्ति ढाने की प्रतिज्ञा की है। मैं अपनी प्रतिज्ञा के
अनुसार उन पर सभी बुरी विपत्तियाँ ढाऊँगा क्योंकि उन्होंने मेरी
अनसुनी की है।' "

32 तब यिर्मयाह ने दूसरा पत्रक लिया और उसे नेरिय्याह के पुत्र
शास्त्री बारुक को दिया। जैसे यिर्मयाह बोलता जाता था वैसे ही
बारुक उन्हीं सन्देशों को पत्रक पर लिखता जाता था जो उस पत्रक
पर थे जिसे राजा यहोयाकीम ने आग में जला दिया था और उन्हीं
सन्देशों की तरह बहुत सी अन्य बातें दूसरे पत्रक में जोड़ी गई।

37

यिर्मयाह बन्दीगृह में डाला गया

1 नबूकदनेस्सर बाबुल का राजा था। नबूकदनेस्सर ने यहोयाकीम
के पुत्र यकोन्याह के स्थान पर सिदकिय्याह को यहूदा का राजा
नियुक्त किया। सिदकिय्याह राजा योशिय्याह का पुत्र था। 2 किन्तु
सिदकिय्याह ने यहोवा के उन सन्देशों पर ध्यान नहीं दिया जिन्हें
यहोवा ने यिर्मयाह नबी को उपदेश देने के लिये दिया था और
सिदकिय्याह के सेवकों तथा यहूदा के लोगों ने यहोवा के सन्देश
पर ध्यान नहीं दिया।

3 राजा सिदकिय्याह ने यहूकल नामक एक व्यक्ति और याजक
सपन्याह को यिर्मयाह नबी के पास एक सन्देश लेकर भेजा।
यहूकल शेलेम्याह का पुत्र था। याजक सपन्याह मासेयाह का पुत्र

था। जो सन्देश वे यिर्मयाह के लिये लाये थे वह यह है: "यिर्मयाह, हमारे परमेश्वर यहोवा से हम लोगों के लिये प्रार्थना करो।"
4 (उस समय तक, यिर्मयाह बन्दीगृह में नहीं डाला गया था, अत:
जहाँ कहीं वह जाना चाहता था, जा सकता था। 5 उस समय ही
फिरौन की सेना मिस्र से यहूदा को प्रस्थान कर चुकी थी। बाबुल सेना ने पराजित करने के लिये, यरूशलेम नगर के चारों ओर घेरा डाल रखा था। तब उन्होंने मिस्र से उनकी ओर कूच कर चुकी हुई सेना के बारे में सुना था। अत: बाबुल की सेना मिस्र से आने वाली सेना से लड़ने के लिये, यरूशलेम से हट गई थी।)
6 यहोवा का सन्देश यिर्मयाह नबी को सन्देश मिला: 7 "इस्राएल
के लोगों का परमेश्वर यहोवा जो कहता है, वह यह है: 'यहूकल और सपन्याह मैं जानता हूँ कि यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने तुम्हें मेरे पास प्रश्न पूछने को भेजा है। राजा सिदकिय्याह को यह उत्तर दो, फिरौन की सेना यहाँ आने और बाबुल की सेना के विरुद्ध तुम्हारी सहायता के लिये मिस्र से कूच कर चुकी है। किन्तु फिरौन की सेना
मिस्र लौट जाएगी। 8 उसके बाद बाबुल की सेना यहाँ लौटेगी। यह
यरूशलेम पर आक्रमण करेगी। तब बाबुल की वह सेना यरूशलेम
पर अधिकार करेगी और उसे जला डालेगी।' 9 यहोवा जो कहता
है, वह यह है: 'यरूशलेम के लोगों, अपने को मूर्ख मत बनाओ। तुम आपस में यह मत कहो, बाबुल की सेना निश्चय ही, हम लोगों को
शान्त छोड़ देगी। वह नहीं छोड़ेगी। 10 यरूशलेम के लोगों, यदि तुम
बाबुल की उस सारी सेना को ही क्यों न पराजित कर डालो जो तुम पर आक्रमण कर रही है, तो भी उनके डेरों में कुछ घायल व्यक्ति बच जाएंगे। वे थोड़े घायल व्यक्ति भी अपने डेरों से बाहर निकलेंगे और यरूशलेम को जलाकर राख कर देंगे।' "
11 जब बाबुल सेना ने मिस्र के फिरौन की सेना के साथ युद्ध
करने के लिये यरूशलेम को छोड़ा, 12 तब यिर्मयाह यरूशलेम से
बिन्यामीन प्रदेश की यात्रा करना चाहता था। वहाँ वह अपने परिवार
की कुछ सम्पत्ति के विभाजन में भाग लेने जा रहा था। 13 किन्तु

जब यिर्मयाह यरूशलेम के बिन्यामीन द्वार पर पहुँचा तब रक्षकों
के अधिकारी कप्तान ने उसे बन्दी बना लिया। कप्तान का नाम
यिरिय्याह था। यिरिय्याह शेलेम्याह का पुत्र था। शेलेम्याह हनन्याह
का पुत्र था। इस प्रकार कप्तान यिरिय्याह ने यिर्मयाह को बन्दी
बनाया और कहा, “यिर्मयाह, तुम हम लोगों को बाबुल पक्ष में मिलने
के लिये, छोड़ रहे हो।”

14 यिर्मयाह ने यिरिय्याह से कहा, “यह सच नहीं है। मैं कसदियों
के साथ मिलने के लिये नहीं जा रहा हूँ।” किन्तु यिरिय्याह ने यिर्मयाह
की एक न सुनी। यिरिय्याह ने यिर्मयाह को बन्दी बनाया और
उसे यरूशलेम के राजकीय अधिकारियों के पास ले गया। 15 वे
अधिकारी यिर्मयाह पर बहुत क्रोधित थे। उन्होंने यिर्मयाह को पीटने
का आदेश दिया। तब उन्होंने यिर्मयाह को बन्दीगृह में डाल दिया।
बन्दीगृह योनातान नामक व्यक्ति के घर में था। योनातान यहूदा के
राजा का शास्त्री था। योनातान का घर बन्दीगृह बना दिया गया
था। 16 उन लोगों ने यिर्मयाह को योनातान के घर की एक कोठरी
में रखा। वह कोठरी जमीन के नीचे कूप—गृह थी। यिर्मयाह उसमें
लम्बे समय तक रहा।

17 तब राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह को बुलवाया और उसे
राजमहल में लाया गया। सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से एकान्त में
बातें कीं। उसने यिर्मयाह से पूछा, “क्या यहोवा को कोई सन्देश है”

यिर्मयाह ने उत्तर दिया, “हाँ, यहोवा का सन्देश है। सिदकिय्याह,
तुम बाबुल के राजा के हाथ में दे दिये जाओगे।” 18 तब यिर्मयाह ने
राजा सिदकिय्याह से कहा, “मैंने कौन सा अपराध किया है मैंने कौन
सा अपराध तुम्हारे, तुम्हारे अधिकारियों या यरूशलेम के विरुद्ध
किया है तुमने मुझे बन्दीगृह में क्यों फेंका 19 राजा सिदकिय्याह,
तुम्हारे नबी अब कहाँ है उन नबियों ने तुम्हें झूठा सन्देश दिया।
उन्होंने कहा, ‘बाबुल का राजा तुम पर या यहूदा देश पर आक्रमण
नहीं करेगा।’ 20 किन्तु अब मेरे यहोवा, यहूदा के राजा, कृपया मेरी

सुन। कृपया मेरा निवेदन अपने तक पहुँचने दे। मैं आपसे इतना माँगता हूँ। शास्त्री योनातान के घर मुझे वापस न भेजें। यदि आप मुझे वहाँ भेजेंगे मैं वहीं मर जाऊँगा।”

21 अत: राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह के लिये आँगन में रक्षकों के संरक्षण में रहने का आदेश दिया और उसने यह आदेश दिया कि यिर्मयाह को सड़क पर रोटी बनाने वालों से रोटियाँ दी जानीं चाहिये। यिर्मयाह को तब तक रोटी दी जाती रही जब तक नगर में रोटी समाप्त नहीं हुई। इस प्रकार यिर्मयाह आँगन में रक्षकों के संरक्षण में रहा।

38

यिर्मयाह हौज में फेंक दिया जाता है

1 कुछ राजकीय अधिकारियों ने यिर्मयाह द्वारा दिये जा रहे उपदेश
को सुनो। वे मत्तान के पुत्र शपन्याह, पशहूर के पुत्र गदल्याह,
शेलेम्याह का पुत्र यहूकल, और मल्किय्याह का पुत्र पशहूर थे।
यिर्मयाह सभी लोगों को यह सन्देश दे रहा था। 2 “जो यहोवा कहता
है, वह यह है: ‘जो कोई भी यरूशलेम में रहेंगे वे सभी तलवार,
भूख, भयंकर बीमारी से मरेंगे। किन्तु जो भी बाबुल की सेना को
आत्मसमर्पण करेगा, जीवित रहेगा। वे लोग जीवित बचा जाये।’
3 और यहोवा यही कहता है, ‘यह यरूशलेम नगर बाबुल के राजा
की सेना को, निश्चय ही, दिया जाएगा। वह इस नगर पर अधिकार
करेगा।’ ”

4 तब जिन राजकीय अधिकारियों ने यिर्मयाह के उस कथन को सुना जिसे वह लोगों से कह रहा था, वे राजा सिदकिय्याह के पास गए। उन्होंने राजा से कहा, “यिर्मयाह को अवश्य मार डालना चाहिये। वह उन सैनिकों को भी हतोत्साहित कर रहा है जो अब तक नगर में हैं। यिर्मयाह जो कुछ कह रहा है उससे वह हर एक का साहस तोड़ रहा है। यिर्मयाह हम लोगों का भला होता नहीं देखना चाहता। वह यरूशलेम के लोगों को बरबाद करना चाहता है।”

5 अत: राजा सिदकिय्याह ने उन अधिकारियों से कहा, "यिर्मयाह
तुम लोगों के हाथ में है। मैं तुम्हें रोकने के लिये कुछ नहीं कर
सकता।"

6 अत: उन अधिकारियों ने यिर्मयाह को लिया और उसे
मल्किय्याह के हौज में डाल दिया। (मल्किय्याह राजा का पुत्र था।)
वह हौज मन्दिर के आँगन में था जहाँ राजा के रक्षक ठहरते थे।
उन अधिकारियों ने यिर्मयाह को हौज में उतारने के लिये रस्सी का
उपयोग किया। हौज में पानी बिल्कुल नहीं था, उसमें केवल कीचड़
थी और यिर्मयाह कीचड़ में धंस गया।

7 किन्तु एबेदमेलेक नामक एक व्यक्ति ने सुना कि अधिकारियों
ने यिर्मयाह को हौज में रखा है। एबेदमेलेक कूश का निवासी थी
और वह राजा के महल में खोजा था। राजा सिदकिय्याह बिन्यामीन
द्वार पर बैठा था। अत: एबेदमेलेक राजमहल से निकला और राजा
से बातें करने उस द्वार पर पहुँचा। 8-9 एबेदमेलेक ने कहा, "मेरे
स्वामी राजा उन अधिकारियों ने दुष्टता का काम किया है। उन्होंने
यिर्मयाह नबी के साथ दुष्टता की है। उन्होंने उसे हौज में डाल दिया
है।" उन्होंने उसे वहाँ मरने को छोड़ दिया है।"

10 तब राजा सिदकिय्याह ने कूशी एबेदमेलेक को आदेश दिया।
आदेश यह था: "एबेदमेलेक राजमहल से तुम तीन व्यक्ति अपने
साथ लो। जाओ और मरने से पहले यिर्मयाह को हौज से निकालो।"

11 अत: एबेदमेलेक ने अपने साथ व्यक्तियों को लिया। किन्तु
पहले वह राजमहल के भंडारगृह के एक कमरे में गया। उसने कुछ
पुराने कम्बल और फटे पुराने कपड़े उस कमरे से लिये। तब उसने
उन कम्बलों को रस्सी के सहारे हौज में यिर्मयाह के पास पहुँचाया।
12 कूशी एबेदमेलेक ने यिर्मयाह से कहा, "इन पुराने कम्बलों और
चिथड़ों को अपनी बगल के नीचे लगाओ। जब हम लोग तुम्हें
खींचेंगे तो ये तुम्हारी बाँहों के नीचे गदेले बनेंगे। तब रस्सियाँ तुम्हें
चुभेंगी नहीं।" अत: यिर्मयाह ने वही किया जो एबेदमेलेक ने कहा।
13 उन लोगों ने यिर्मयाह को रस्सियों से ऊपर खींचा और हौज के

बाहर निकाल लिया और यिर्मयाह मन्दिर के आँगन में रक्षकों के संरक्षण में रहा।

सिदकिय्याह यिर्मयाह से फिर प्रश्न पूछता है।

14 तब राजा सिदकिय्याह ने किसी को यिर्मयाह नबी को लाने के लिये भेजा। उसने यहोवा के मन्दिर के तीसरे द्वार पर यिर्मयाह को मंगवाया। तब राजा ने कहा, "यिर्मयाह, मैं तुमसे कुछ पूछ रहा हूँ। मुझसे कुछ भी न छिपाओ, मुझे सब ईमानदारी से बताओ।"

15 यिर्मयाह ने सिदकिय्याह से कहा, "यदि मैं आपको उत्तर दूँगा तो संभव है आप मुझे मार डालें और यदि मैं आपको सलाह भी दूँ तो आप उसे नहीं मानेंगे।"

16 किन्तु राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से शपथ खाई। सिदकिय्याह ने यह गुप्त रूप से किया। यह वह है जो सिदकिय्याह ने शपथ ली, "यिर्मयाह जैसा कि यहोवा शाश्वत है, जिसने हमें प्राण और जीवन दिया है यिर्मयाह। मैं तुम्हें मारूँगा नहीं और मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं तुम्हें उन अधिकारियों को नहीं दूँगा जो तुम्हें मार डालना चाहते हैं।"

17 तब यिर्मयाह ने राजा सिदकिय्याह से कहा, "यह वह है जिसे सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर कहता है, 'यदि तुम बाबुल के राजा के अधिकारियों को आत्मसमर्पण करोगे तो तुम्हारा जीवन बच जाएगा और यरूशलेम जलाकर राख
नहीं किया जाएगा, तुम और तुम्हारा परिवार जीवित रहेगा। 18 किन्तु
यदि तुम बाबुल के राजा के अधिकारियों को आत्मसमर्पण करने से इन्कार करोगे तो यरूशलेम बाबुल सेना को दे दिया जाएगा। वे यरूशलेम को जलाकर राख कर देंगे और तुम स्वयं उनसे बचकर नहीं निकल पाओगे।' "

19 तब राजा सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, "किन्तु मैं यहूदा के उन लोगों से डरता हूँ जो पहले ही बाबुल सेना से जा मिले हैं।

मुझे भय है कि सैनिक मुझे यहूदा के उन लोगों को दे देंगे और वे
मेरे साथ बुरा व्यवहार करेंगे और चोट पहुँचायेंगे।”
20 किन्तु यिर्मयाह ने उत्तर दिया, “सैनिक तुम्हें यहूदा के उन लोगों
को नहीं देंगे। राजा सिदकिय्याह, जो मैं कह रहा हूँ उसे करके,
यहोवा की आज्ञा का पालन करो। तब सभी कुछ तुम्हारे भले के
लिये होगा और तुम्हारा जीवन बच जाएगा। 21 किन्तु यदि तुम
बाबुल की सेना के सामने आत्मसमर्पण करने से इन्कार करते हो
तो यहोवा ने मुझे दिखा दिया है कि क्या होगा। यह वह है जो यहोवा
ने मुझसे कहा है: 22 वे सभी स्त्रियाँ जो यहूदा के राजमहल में रह
गई हैं बाहर लाई जाएंगी। वे बाबुल के राजा के बड़े अधिकारियों
के सामने लाई जायेंगी। तुम्हारी स्त्रियाँ एक गीत द्वारा तुम्हारी खिल्ली
उड़ाएंगी। जो कुछ स्त्रियाँ कहेंगी वह यह है:

“तुम्हारे अच्छे मित्र तुम्हें गलत राह ले गए
और वे तुमसे अधिक शक्तिशाली थे।
वे ऐसे मित्र थे जिन पर तुम्हारा विश्वास था।
तुम्हारे पाँव कीचड़ में फँसे हैं।
तुम्हारे मित्रों ने तुम्हें छोड़ दिया है।”

23 “तुम्हारी सभी पत्नियाँ और तुम्हारे बच्चे बाहर लाये जाएंगे। वे
बाबुल सेना को दे दिये जाएंगे। तुम स्वयं बाबुल की सेना से बचकर
नहीं निकल पाओगे। तुम बाबुल के राजा द्वारा पकड़े जाओगे और
यरूशलेम जलाकर राख कर दिया जाएगा।”
24 तब सिदकिय्याह ने यिर्मयाह से कहा, “किसी व्यक्ति से यह
मत कहना कि मैं तुमसे बातें करता रहा। यदि तुम कहोगे तो तुम
मारे जाओगे। 25 वे अधिकारी पता लगा सकते हैं कि मैंने तुमसे
बातें कीं। तब वे तुम्हारे पास आएंगे और तुमसे कहेंगे, ‘यिर्मयाह,
यह बताओ कि तुमने राजा सिदकिय्याह से क्या कहा और हमें यह

बताओ कि राजा सिदकिय्याह ने तुमसे क्या कहा हम लोगों के
प्रति ईमानदार रहो और हमें सब कुछ बता दो, नहीं तो हम तुम्हें
मार डालेंगे।' 26 यदि वे तुमसे ऐसा कहें तो उनसे कहना, 'मैं राजा से
प्रार्थना कर रहा था कि वे मुझे योनातान के घर के नीचे कूप—गृह में
वापस न भेजें। यदि मुझे वहाँ वापस जाना पड़ा तो मैं मर जाऊँगा।' "
27 ऐसा हुआ कि राजा के वे राजकीय अधिकारी यिर्मयाह से
पूछने उसके पास आ गए। अत: यिर्मयाह ने वह सब कहा जिसे
कहने का आदेश राजा ने दिया था। तब उन अधिकारियों ने यिर्मयाह
को अकेले छोड़ दिया। किसी व्यक्ति को पता न चला कि यिर्मयाह
और राजा ने क्या बातें कीं।
28 इस प्रकार यिर्मयाह रक्षकों के संरक्षण में मन्दिर के आँगन
में उस दिन तक रहा जिस दिन यरूशलेम पर अधिकार कर लिया
गया।

39

यरूशलेम का पतन

1 यरूशलेम पर जिस तरह अधिकार हुआ वह यह है: यहूदा
के राजा सिदकिय्याह के राज्यकाल के नवें वर्ष के दसवें महीने
में बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने अपनी पूरी सेना के साथ
यरूशलेम के विरुद्ध कूच किया। उसने हराने के लिये नगर का
घेरा डाला 2 और सिदकिय्याह के ग्यारहवें वर्ष के चौथे महीने
के नौवें दिन यरूशलेम की चहारदीवारी टूटी। 3 तब बाबुल के
राजा के सभी राजकीय अधिकारी यरूशलेम नगर में घुस आए।
वे अन्दर आए और बीच वाले द्वार पर बैठ गए। उन अधिकारियों
के नाम ये हैं: समगर जिले का प्रशासक नेर्गलसरेसेर एक बहुत उच्च
अधिकारी नेबो—सर्सकीम अन्य उच्च अधिकारी और बहुत से अन्य
बड़े अधिकारी भी वहाँ थे।
4 यहूदा के राजा सिदकिय्याह ने बाबुल के उन पदाधिकारियों
को देखा, अत: वह और उसके सैनिक वहाँ से भाग गये। उन्होंने रात

में यरूशलेम को छोड़ा और राजा के बाग से होकर बाहर निकले।
वे उस द्वार से गए जो दो दीवारों के बीच था। तब वे मरुभूमि की
ओर बढ़े। 5 किन्तु बाबुल की सेना ने सिदकिय्याह और उसके साथ
की सेना का पीछा किया। कसदियों की सेना ने यरीहो के मैदान में
सिदकिय्याह को जा पकड़ा उन्होंने सिदकिय्याह को पकड़ा और
उसे बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर के पास ले गए। नबूकदनेस्सर
हमात प्रदेश के शिब्ला नगर में था. उस स्थान पर नबूकदनेस्सर ने
सिदकिय्याह के लिये निर्णय सुनाया। 6 वहाँ रिबला नगर में बाबुल
के राजा ने सिदकिय्याह के पुत्रों को उसके सामने मार डाला और
सिदकिय्याह के सामने ही नबूकदनेस्सर ने यहूदा के सभी राजकीय
अधिकारियों को मार डाला। 7 तब नबूकदनेस्सर ने सिदकिय्याह
की आँखे निकाल लीं। उसने सिदकिय्याह को काँसे की जंजीर से
बाँधा और उसे बाबुल ले गया।

8 बाबुल की सेना ने राजमहल और यरूशलेम के लोगों के
घरों में आग लगा दी और उन्होंने यरूशलेम की दीवारें गिरा दीं।
9 नबूजरदान नामक एक व्यक्ति बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों
का अधिनायक था। उसने उन लोगों को लिया जो यरूशलेम में
बच गए थे और उन्हें बन्दी बना लिया। वह उन्हें बाबुल ले गया।
नबूजरदान ने यरूशलेम के उन लोगों को भी बन्दी बनाया जो पहले
ही उसे आत्मसमर्पण कर चुके थे। उसने यरूशलेम के अन्य सभी
लोगों को बन्दी बनाया और उन्हें बाबुल ले गया। 10 किन्तु विशेष
रक्षकों के अधिनायक नबूजरदान ने यहूदा के कुछ गरीब लोगों को
अपने पीछे छोड़ दिया। वे ऐसे लोग थे जिनके पास कुछ नहीं था।
इस प्रकार उस दिन नबूजरदान ने उन यहूदा के गरीब लोगों को
अंगूर के बाग और खेत दिये।

11 किन्तु नबूकदनेस्सर ने नबूजरदान को यिर्मयाह के बारे में
कुछ आदेश दिये। नबूजरदान, नबूकदनेस्सर के विशेष रक्षकों का
अधिनायक था। आदेश ये थे: 12 “यिर्मयाह को ढूँढों और उसकी

देख–रेख करो। उसे चोट न पहुँचाओ। उसे वह सब दो, जो वह माँगे।"

13 अत: राजा के विशेष रक्षकों के अधिनायक नबूजरदान बाबुल की सेना का एक मुख्य पदाधिकारी नबूसजबान एक उच्च अधिकारी नेर्गलसरेसेर और बाबुल की सेना के अन्य सभी अधिकारी यिर्मयाह की खोज में भेजे गए।
14 न लोगों ने यिर्मयाह को मन्दिर के आँगन से निकाला जहाँ वह यहूदा के राजा के रक्षकों के संरक्षण में पड़ा था। कसदी सेना के उन अधिकारियों ने यिर्मयाह को गदल्याह के सुपुर्द किया। गदल्याह अहीकाम का पुत्र था। अहीकाम शापान का पुत्र था। गदल्याह को आदेश था कि वह यिर्मयाह को उसके घर वापस ले जाये। अत: यिर्मयाह अपने घर पहुँचा दिया गया और वह अपने लोगों में रहने लगा।

एबेदमेलेक को यहोवा से सन्देश

15 जिस समय यिर्मयाह रक्षकों के संरक्षण में मन्दिर के आँगन में था, उसे यहोवा का एक सन्देश मिला। सन्देश यह था,
16 "यिर्मयाह, जाओ और कूश के एबेदमेलेक को यह सन्देश दो: यह वह सन्देश है, जिसे सर्वशक्तिमान यहोवा इस्राएल के लोगों का परमेश्वर देता है: 'बहुत शीघ्र ही मैं इस यरूशलेम नगर सम्बन्धी अपने सन्देशों को सत्य घटित करूँगा। मेरा सन्देश विनाश लाकर सत्य होगा। अच्छी बातों को लाकर नहीं। तुम सभी इस सत्य को घटित होता हुआ अपनी आँखों से देखोगे।
17 किन्तु एबेदमेलेक उस दिन मैं तुम्हें बचाऊँगा।' यह यहोवा का सन्देश है। 'तुम उन लोगों को नहीं दिये जाओगे जिनसे तुम्हें भय है।
18 एबेदमेलेक मैं तुझे बचाऊँगा। तुम तलवार के घाट नहीं उतारे जाओगे, अपितु बच निकलोगे और जीवित रहोगे। ऐसा होगा, क्योंकि तुमने मुझ पर विश्वास किया है।' " यह सन्देश यहोवा का है।

40

यिर्मयाह स्वतन्त्र किया जाता है

1 रामा नगर में स्वतन्त्र किये जाने के बाद यिर्मयाह को यहोवा
का सन्देश मिला। बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों के अधिनायक
नबूजरदान को यिर्मयाह रामा में मिला। यिर्मयाह जंजीरों में बंधा
था। वह यरूशलेम और यहूदा के सभी बन्दियों के साथ था। वे
बन्दी बाबुल को बन्धुवाई में ले जाए जा रहे थे। 2 जब अधिनायक
नबूजरदान को यिर्मयाह मिला तो उसने उससे बातें कीं। उसने कहा,
"यिर्मयाह तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने यह घोषित किया था कि यह
विपत्ति इस स्थान पर आएगी 3 और अब यहोवा ने सब कुछ वह
कर दिया है जिसे उसने करने को कहा था। यह विपत्ति इसलिये
आई कि यहूदा के लोगों, तुमने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। तुम
लोगों ने यहोवा की आज्ञा नहीं मानी। 4 किन्तु यिर्मयाह, अब मैं
तुम्हें स्वतन्त्र करता हूँ। मैं तुम्हारी कलाइयों से जंजीर उतार रहा
हूँ। यदि तुम चाहो तो मेरे साथ बाबुल चलो और मैं तुम्हारी अच्छी
देखभाल करूँगा। किन्तु यदि तुम मेरे साथ चलना नहीं चाहते तो न
चलो। देखो पूरा देश तुम्हारे लिये खुला है। तुम जहाँ चाहो जाओ।
5 अथवा शापान के पुत्र अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास लौट
जाओ। बाबुल के राजा ने यहूदा के नगरों का प्रशासक गदल्याह
को चुना है। जाओ और गदल्याह के साथ लोगों के बीच रहो या
तुम जहाँ चाहो जा सकते हो।"

तब नबूजरदान ने यिर्मयाह को कुछ भोजन और भेंट दिया तथा
उसे विदा किया। 6 इस प्रकार यिर्मयाह अहीकाम के पुत्र गदल्याह
के पास मिस्पा गया। यिर्मयाह गदल्याह के साथ उन लोगों के बीच
रहा जो यहूदा देश में छोड़ दिये गए थे।

गदल्याह का अल्पकालीन शासन

7 यहूदा की सेना के कुछ सैनिक, अधिकारी और उनके लोग,
जब यरूशलेम नष्ट हो रहा था, खुले मैदान में थे। उन सैनिकों ने
सुना कि अहीकाम के पुत्र गदल्याह को बाबुल के राजा ने प्रदेश
में बचे लोगों का प्रशासक नियुक्त किया है। बचे हुए लोगों में वे
सभी स्त्री, पुरुष और बच्चे थे जो बहुत अधिक गरीब थे और बन्दी
बनाकर बाबुल नहीं पहुँचाये गए थे। 8 अत: वे सैनिक गदल्याह के
पास मिस्पा में आए। वे सैनिक नतन्याह का पुत्र इश्माएल, योहानान
और उसका भाई योनातान, कारेह के पुत्र तन्हूसेत का पुत्र सरायाह,
नतोपावासी एपै के पुत्र माकावासी का पुत्र याजन्याह और उनके
साथ के पुरुष थे।

9 शापान के पुत्र अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने उन सैनिकों और
उनके लोगों को अधिक सुरक्षित अनुभव कराने की शपथ खाई।
गदल्याह ने जो कहा, वह यह है: "सैनिकों तुम लोग कसदी लोगों
की सेवा करने से भयभीत न हो। इस प्रदेश में बस जाओ और
बाबुल के राजा की सेवा करो। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारा
सब कुछ भला होगा। 10 मैं स्वयं मिस्पा में रहूँगा। मैं उन कसदी
लोगों से तुम्हारे लिये बातें करूँगा जो यहाँ आएंगे। तुम लोग यह
काम मुझ पर छोड़ो। तुम्हें दाखमधु ग्रीष्म के फल और तेल पैदा
करना चाहिये। जो तुम पैदा करो उसे अपने इकट्ठा करने के घड़ों में
भरो। उन नगरों में रहो जिस पर तुमने अधिकार कर लिया है।"

11 यहूदा के सभी लोगों ने, जो मोआब, अम्मोन, एदोम और अन्य
सभी प्रदेशों में थे, सुना कि बाबुल के राजा ने यहूदा के कुछ लोगों
को उस देश में छोड़ दिया है और उन्होंने यह सुना कि बाबुल के
राजा ने शापान के पौत्र एवं अहीकाम के पुत्र गदल्याह को उनका
प्रशासक नियुक्त किया है। 12 जब यहूदा के लोगों ने यह खबर पाई,
तो वे यहूदा प्रदेश में लौट आए। वे गदल्याह के पास उन सभी देशों
से मिस्पा लौटे, जिनमें वे बिखर गए थे। अत: वे लौटे और उन्होंने

दाखमधु और ग्रीष्म फलों की बड़ी फसल काटी।

13 कारेह का पुत्र योहानान और यहूदा की सेना के सभी
अधिकारी, जो अभी तक खुले प्रदेशों में थे, गदल्याह के पास
आए। गदल्याह मिस्पा नगर में था। 14 योहानान और उसके साथ के
अधिकारियों ने गदल्याह से सहा, "क्या तुम्हें मालूम है कि अम्मोनी लोगों का राजा बालीस तुम्हें मार डालना चाहता है उसने नतन्याह के पुत्र इश्माएल को तुम्हें मार डालने के लिये भेजा है।" किन्तु अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने उन पर विश्वास नहीं किया।

15 तब कारेह के पुत्र योहानान ने मिस्पा में गदल्याह से गुप्त वार्ता की। योहानान ने गदल्याह से कहा, "मुझे जाने दो और नतन्याह के पुत्र इश्माएल को मार डालने दो। कोई भी व्यक्ति इस बारे में नहीं जानेगा। हम लोग इश्माएल को तुम्हें मारने नहीं देंगे। वह यहूदा के उन सभी लोगों को जो तुम्हारे पास इकट्ठे हुए हैं, विभिन्न देशों में फिर से बिखेर देगा और इसका यह अर्थ होगा कि यहूदा के थोड़े से बचे–खुचे लोग भी नष्ट हो जायेंगे।"

16 किन्तु अहीकाम के पुत्र गदल्याह ने कारेह के पुत्र योहानान से कहा, "इश्माएल को न मारो। इश्माएल के बारे में जो तुम कह रहे हो, वह सत्य नहीं है।"

41

1 सातवें महीने में नतन्याह (एलीशामा का पुत्र) का पुत्र इश्माएल,
अहीकाम के पुत्र गदल्याह के पास आया। इश्माएल अपने दस
व्यक्तियों के साथ आया। वे लोग मिस्पा नगर में आए थे। इश्माएल
राजा के परिवार का सदस्य था। वह यहूदा के राजा के अधिकारियों
में से एक था। इश्माएल और उसके लोगों ने गदल्याह के साथ खाना
खाया। 2 जब वे साथ भोजन कर रहे थे तभी इश्माएल और उसके
दस व्यक्ति उठे और अहीकाम के पुत्र गदल्याह को तलवार से
मार दिया। गदल्याह वह व्यक्ति था जिसे बाबुल के राजा ने यहूदा

का प्रशासक चुना था। 3 इश्माएल ने यहूदा के उन सभी लोगों को
भी मार डाला जो मिस्पा में गदल्याह के साथ थे। इश्माएल ने उन
कसदी सैनिकों को भी मार डाला जो गदल्याह के साथ थे।

4-5 गदल्याह की हत्या के एक दिन बाद अस्सी व्यक्ति मिस्पा
आए। वे अन्नबलि और सुगन्धि यहोवा के मन्दिर के लिये ला रहे थे।
उन अस्सी व्यक्तियों ने अपनी दाढ़ी मुड़ा रखी थी, अपने वस्त्र फाड़
डाले थे और अपने को काट रखा था। वे शकेम, शीलो और शोमरोन
से आए थे। इनमें से कोई भी यह नहीं जानता था कि गदल्याह की
हत्या कर दी गई है। 6 इश्माएल मिस्पा नगर से उन अस्सी व्यक्तियों
से मिलने गया। उनसे मिलने जाते समय वह रोता रहा। इश्माएल
उन अस्सी व्यक्तियों से मिला और उसने कहा, “अहीकाम के पुत्र
गदल्याह से मिलने मेरे साथ चलो।”

7 वे अस्सी व्यक्ति मिस्पा नगर में गए। तब इश्माएल और उसके
व्यक्तियों ने उनमें से सत्तर लोगों को मार डाला। इश्माएल और
उसके व्यक्तियों ने उन सत्तर व्यक्तियों के शवों को एक गहरे हौज
में डाल दिया।

8 किन्तु बचे हुए दस व्यक्तियों ने इश्माएल से कहा, “हमें मत
मारो। हमारे पास गेहूँ और जौ है और हमारे पास तेल और शहद
है। हम लोगों ने उन चीज़ों को एक खेत में छिपा रखा है।” अत:
इश्माएल ने उन व्यक्तियों को छोड़ दिया। उसने अन्य लोगों के साथ
उनको नहीं मारा। 9 (वह हौज बहुत बड़ा था। यह यहूदा के आसा
नामक राजा द्वारा बनवाया गया था। राजा आसा ने उसे इसलिये
बनाया था कि युद्ध के दिनों में नगर को उससे पानी मिलता रहे।
आसा ने यह काम इस्राएल के राजा बाशा से नगर की रक्षा के लिये
किया था। इश्माएल ने उस हौज में इतने शव डाले कि वह भर
गया।)

10 इश्माएल ने मिस्पा नगर के अन्य सभी लोगों को भी पकड़ा।
(उन लोगों में राजा की पुत्रियाँ और वे अन्य सभी लोग थे जो वहाँ
बच गए थे। वे ऐसे लोग थे जिन्हें नबूजरदान ने गदल्याह पर नजर
रखने के लिये चुना था। नबूजरदान बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों

का अधिनायक था। अत: इश्माएल ने उन लोगों को पकड़ा और अम्मोनी लोगों के देश में जाने के लिये बढ़ना आरम्भ किया।)

11 कारेह का पुत्र योहानान और उसके साथ के सभी सैनिक
अधिकारियों ने उन सभी दुराचारों को सुना जो इश्माएल ने किये।
12 इसलिये योहानान और उसके साथ के सैनिक अधिकारियों ने
अपने व्यक्तियों को लिया और नतन्याह के पुत्र इश्माएल से लड़ने
गए। उन्होंने इश्माएल को उस बड़े पानी के हौज के पास पकड़ा जो
गिबोन नगर में है। 13 उन बन्दियों ने जिन्हें इश्माएल ने बन्दी बनाया
था, योहानान और सैनिक अधिकारियों को देखा। वे लोग अति
प्रसन्न हुए। 14 तब वे सभी लोग जिन्हें इश्माएल ने मिस्पा में बन्दी
बनाया था, कारेह के पुत्र योहानान के पास दौड़ पड़े। 15 किन्तु
इश्माएल और उसके आठ व्यक्ति जोहानान से बच निकले। वे
अम्मोनी लोगों के पास भाग गये।

16 अत: कारेह के पुत्र योहानान और उसके सभी सैनिक अधिकारियों ने बन्दियों को बचा लिया। इश्माएल ने गदल्याह की हत्या की थी और उन लोगों को मिस्पा से पकड़ लिया था। बचे हुए लोगों में सैनिक, स्त्रियाँ, बच्चे और अदालत के अधिकारी थे। योहानान उन्हें गिबोन नगर से वापस लाया।

मिस्र को बच निकलना

17-18 योहानान तथा अन्य सैनिक अधिकारी कसदियों से भयभीत थे। बाबुल के राजा ने गदल्याह को यहूदा का प्रशासक चुना था। किन्तु इश्माएल ने गदल्याह की हत्या कर दी थी और योहानान को भय था कि कसदी क्रोधित होंगे। अत: उन्होंने मिस्र को भाग निकलने का निश्चय किया। मिस्र के रास्ते में वे गेरथ किम्हाम में रुके। गेरथ किम्हाम बेतलेहेम नगर के पास है।

42

1 जब वे गेरथ किम्हाम में थे योहानान और होशायाह का पुत्र याजन्याह नामक एक व्यक्ति यिर्मयाह नबी के पास गए। योहानान और याजन्याह के साथ सभी सैनिक अधिकारी गए। बड़े से लेकर

बहुत छोटे तक सभी व्यक्ति यिर्मयाह के पास गए। 2 उन सभी
लोगों ने उससे कहा, "यिर्मयाह, कृपया सुन जो हम कहते हैं। अपने
परमेश्वर यहोवा से, यहूदा के परिवार के इन सभी बचे व्यक्तियों
के लिये प्रार्थना करो। यिर्मयाह, तुम देख सकते हो कि हम लोगों
में बहुत अधिक नहीं बचे हैं। किसी समय हम बहुत अधिक थे।
3 यिर्मयाह, अपने परमेश्वर यहोवा से यह प्रार्थना करो कि वह बताये
कि हमें कहाँ जाना चाहिये और हमें क्या करना चाहिये।"

4 तब यिर्मयाह नबी ने उत्तर दिया, "मैं समझता हूँ कि तुम मुझसे
क्या कराना चाहते हो। मैं तुम्हारे परमेश्वर यहोवा से वही प्रार्थना
करूँगा जो तुम मुझसे करने को कहते हो। मैं हर एक बात, जो
यहोवा कहेगा बताऊँगा। मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपाऊँगा।"

5 तब उन लोगों ने यिर्मयाह से कहा, "यदि तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
जो कुछ कहता है उसे हम नहीं करते तो हमें आशा है कि यहोवा
ही सच्चा और विश्वसनीय गवाह हमारे विरुद्ध होगा। हम जानते हैं
कि तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें यह बताने को भेजा कि हम क्या
करे 6 इसका कोई महत्व नहीं कि हम सन्देश को पसन्द करते हैं या
नहीं। हम लोग अपने परमेश्वर, यहोवा की आज्ञा का पालन करेंगे।
हम लोग तुम्हें यहोवा के यहाँ उससे सन्देश लेने के लिये भेज रहे हैं।
हम उसका पालन करेंगे जो वह कहेगा। तब हम लोगों के लिए सब
अच्छा होगा। हाँ, हम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा का पालन
करेंगे।"

7 दस दिन बीतने के बाद यहोवा के यहाँ से यिर्मयाह को सन्देश
मिला। 8 तब यिर्मयाह ने कारेह के पुत्र योहानान और उसके साथ के
सैनिक अधिकारियों को एक साथ बुलाया। यिर्मयाह ने बहुत छोटे
व्यक्ति से लेकर बहुत बड़े व्यक्ति तक को भी एक साथ बुलाया।
9 तब यिर्मयाह ने उनसे कहा, "जो इस्राएल के लोगों का परमेश्वर
यहोवा कहता है, यह वह है: 'तुमने मुझे उसके पास भेजा। मैंने
यहोवा से वह पूछा, जो तुम लोग मुझसे पूछना चाहते थे। यहोवा

यह कहता है: 10 यदि तुम लोग यहूदा में रहोगे तो मैं तुम्हारा निर्माण
करूँगा मैं तुम्हें नष्ट नहीं करूँगा। मैं तुम्हें रोपूँगा और मैं तुमको
उखाड़ूँगा नहीं। मैं यह इसलिये करूँगा कि मैं उन भयंकर विपत्तियों
के लिये दु:खी हूँ जिन्हें मैंने तुम लोगों पर घटित होने दीं। 11 इस
समय तुम बाबुल के राजा से भयभीत हो। किन्तु उससे भयभीत
न हो। बाबुल के राजा से भयभीत न हो: यही यहोवा का सन्देश
है, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हें बचाऊँगा। मैं तुम्हें खतरे से
निकालूँगा। वह तुम पर अपना हाथ नहीं रख सकेगा। 12 मैं तुम पर
दयालु रहूँगा और बाबुल का राजा भी तुम्हारे साथ दया का व्यवहार
करेगा और वह तुम्हें तुम्हारे देश वापस लायेगा। 13 किन्तु तुम यह
कह सकते हो, हम यहूदा में नहीं ठहरेंगे। यदि तुम ऐसा कहोगे तो
तुम अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा का उल्लंघन करोगे। 14 तुम यह
भी कह सकते हो, 'नहीं हम लोग जाएंगे और मिस्र में रहेंगे। हमे
उस स्थान पर युद्ध की परेशानी नहीं होगी। हम वहाँ युद्ध की तुरही
नहीं सुनेंगे और मिस्र में हम भूखे नहीं रहेंगे।' 15 यदि तुम यह सब
कहते हो, तो यहूदा के बचे लोगों यहोवा के इस सन्देश को सुनो।
इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है:
'यदि तुम मिस्र में रहने के लिये जाने का निर्णय करते हो तो यह
सब घटित होगा: 16 तुम युद्ध की तलवार से डरते हो, किन्तु यही
तुम्हें वहाँ पराजित करेगी और तुम भूख से परेशान हो, किन्तु तुम
मिस्र में भूखे रहोगे। तुम वहाँ मरोगे। 17 हर एक वह व्यक्ति तलवार,
भूख और भयंकर बीमारी से मरेगा जो मिस्र में रहने के लिये जाने
का निर्णय करेगा। जो लोग मिस्र जाएंगे उसमें से कोई भी जीवित
नहीं बचेगा। उनमें से कोई भी उन भयंकर विपत्तियों से नहीं बचेगा
जिन्हें मैं उन पर ढाऊँगा।'

18 "इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा, यह
कहता है: 'मैंने अपना क्रोध यरूशलेम के विरुद्ध प्रकट किया है।
मैंने उन लोगों को दण्ड दिया जो यरूशलेम में रहते थे। उसी प्रकार मैं

अपना क्रोध प्रत्येक उस व्यक्ति पर प्रकट करुँगा जो मिस्र जाएगा। लोग तुम्हारा उदाहरण तब देंगे जब वे अन्य लोगों के साथ बुरा घटित होने की प्रार्थना करेंगे। तुम अभिशाप वाणी के समान होओगे। तुम पर जो हुआ उसे देख कर लोग भयभीत होंगे। लोग तुम्हारा अपमान करेंगे और तुम फिर कभी यहूदा को नहीं देख पाओगे।'

19 "यहूदा के बचे हुए लोगों, यहोवा ने तुमसे कहा, 'मिस्र मत
जाओ।' मैं तुम्हें स्पष्ट चेतावनी देता हूँ। 20 तुम लोग एक बड़ी भूल
कर रहे हो, जिसके कारण तुम मरोगे। तुम लोगों ने यहोवा अपने
परमेश्वर के पास मुझे भेजा। तुमने मुझसे कहा, 'परमेश्वर यहोवा से
हमारे लिये प्रार्थना करो। हर बात हमें बताओ जो यहोवा करने को
कहता है। हम यहोवा की आज्ञा का पालन करेंगे।' 21 अत: आज
मैंने यहोवा का सन्देश तुम्हें दिया है। किन्तु तुमने अपने परमेश्वर
यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने वह सब नहीं किया
है जिसे करने के लिये कहने को उसने मुझे भेजा है। 22 तुम लोग
रहने के लिये मिस्र जाना चाहते हो अब निश्चय ही तुम यह समझ
गये होगे कि मिस्र में तुम पर यह घटेगा: तुम तलवार से या भूख से,
या भयंकर बीमारी से मरोगे।"

43

1 इस प्रकार यिर्मयाह ने लोगों को यहोवा उसके परमेश्वर का
सन्देश देना पूरा किया। यिर्मयाह ने लोगों को वह सब कुछ बता
दिया जिसे लोगों से कहने के लिये यहोवा ने उसे भेजा था।

2 होशाया का पुत्र अजर्याह, कारेह का पुत्र योहानान और कुछ
अन्य लोग घमण्डी और हठी थी। वे लोग यिर्मयाह पर क्रोधित हो
गए। उन लोगों ने यिर्मयाह से कहा, "यिर्मयाह, तुम झूठ बोलते हो!
हमारे परमेश्वर यहोवा ने तुम से हमें यह कहने को नहीं भेजा, 'तुम
लोगों को मिस्र में रहने के लिये नहीं जाना चाहिये।' 3 यिर्मयाह, हम
समझते हैं कि नेरिय्याह का पुत्र बारुक तुम्हें हम लोगों के विरुद्ध
होने के लिये उकसा रहा है। वह चाहता है कि तुम हमें कसदी लोगों

के हाथ में दे दो। वह यह इसलिये चाहता है जिससे वे हमें मार डालें या वह तुमसे यह इसलिये चाहता है कि वे हमें बन्दी बना लें और बाबुल ले जाये।”

4 इसलिये योहानान सैनिक अधिकारी और सभी लोगों ने यहोवा
की आज्ञा का उल्लंघन किया। यहोवा ने उन्हें यहूदा में रहने का
आदेश दिया था। 5 किन्तु यहोवा की आज्ञा मानने के स्थान पर
योहानान और सैनिक अधिकारी उन बचे लोगों को यहूदा से मिस्र
ले गए। बीते समय में, शत्रु उन बचे हुओं को अन्य देशों को ले गया
था। किन्तु वे यहूदा वापस आ गए थे। 6 अब योहानान और सभी
सैनिक अधिकारी, सभी पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को मिस्र ले गए।
उन लोगों में राजा की पुत्रियाँ थीं। (नबूजरदान ने गदल्याह को उन
लोगों का प्रशासक नियुक्त किया था। नबूजरदान बाबुल के राजा
के विशेष रक्षकों का अधिनायक था।) योहानान यिर्मयाह नबी और
नेरिय्याह के पुत्र बारूक को भी साथ ले गया। 7 उन लोगों ने यहोवा
की एक न सुनी। अत: वे सभी लोग मिस्र गए। वे तहपन्हेस नगर
को गए।

8 तहपन्हेस नगर में यिर्मयाह ने यहोवा से यह सन्देश पाया,
9 “यिर्मयाह, कुछ बड़े पत्थर लो। उन्हें लो और उन्हें तहपन्हेस
में फिरौन के राजमहल के प्रवेश द्वार के ईंटें के चबूतरे के पास
मिट्टी में गाड़ो। यह तब करो जब यहूदा के लोग तुम्हें ऐसा करते
देख रहे हो। 10 तब यहूदा के उन लोगों से कहो जो तुम्हें देख रहे
हो, ‘इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता है, वह
यह है: मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर को यहाँ आने के लिये
बुलावा भेजूँगा। वह मेरा सेवक है और मैं उसके राज सिंहासन को
इन पत्थरों पर रखूँगा जिन्हें मैंने यहाँ गाड़ा है। नबूकदनेस्सर अपनी
चंदोवा इन पत्थरों के ऊपर फैलाएगा। 11 नबूकदनेस्सर यहाँ आएगा
और मिस्र पर आक्रमण करेगा। वह उन्हें मृत्यु के घाट उतारेगा जो
मरने वाले हैं। जो बन्दी बनाये जाने के योग्य है वह उन्हें बन्दी

बनायेगा और वह उन्हें तलवार के घाट उतारेगा जिन्हें तलवार से
मारना है। 12 नबूकदनेस्सर मिस्र के असत्य देवताओं के मन्दिरों में
आग लगा देगा। वह उन मन्दिरों को जला देगा और उन देवमूर्तियों
को अलग करेगा। गडेरिया अपने कपड़ों को स्वच्छ रखने के लिये
उसमें से जूँ और अन्य खटमलों को दूर फेंकता है। ठीक इसी
प्रकार नबूकदनेस्सर मिस्र को स्वच्छ करने के लिये कुछ को दूर
करेगा। तब वह सुरक्षापूर्वक मिस्र को छोड़ेगा। 13 नबूकदनेस्सर
उन स्मृतिपाषाणों को नष्ट करेगा जो मिस्र में सूर्य देवता के मन्दिर
में है और वह मिस्र के असत्य देवों के मन्दिरों को जला देगा।' "

44

यहूदा और मिस्र के लोगों को यहोवा का सन्देश

1 यिर्मयाह को यहोवा से एक सन्देश मिला। यह सन्देश मिस्र में
रहने वाले यहूदा के सभी लोगों के लिये था। यह सन्देश यहूदा के
उन लोगों के लिए था जो मिग्दोल, तहपन्हेस, नोप और दक्षिणी मिस्र
में रहते थे। सन्देश यह था: 2 "इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान
यहोवा कहता है, 'तुम लोगों ने उन भयंकर घटनाओं को देखा जिन्हें
मैं यरूशलेम नगर और यहूदा के अन्य सभी नगर के विरुद्ध लाया।
वे नगर आज पत्थरों के खाली ढेर हैं। 3 वे स्थान नष्ट किए गए
क्योंकि उनमें रहने वाले लोगों ने बुरे काम किये। उन लोगों ने अन्य
देवताओं को बलिभेंट की, और इसने मुझे क्रोधित किया। तुम्हारे
लोग और तुम्हारे पूर्वज अतीतकाल में उन देवताओं को नहीं पूजते
थे। 4 मैंने अपने नबी उन लोगों के पास बार बार भेजे। वे नबी
मेरे सेवक थे। उन नबियों ने मेरे सन्देश दिये और लोगों से कहा,
"यह भयंकर काम न करो जिससे मैं घृणा करता हूँ। क्योंकि तुम
देवमूर्तियों की पूजा करते हो?" 5 किन्तु उन लोगों ने नबियों की एक
न सुनी। उन्होंने उन नबियों पर ध्यान न दिया। उन लोगों ने दुष्टता
भरे काम करने नहीं छोड़े। उन्होंने अन्य देवताओं को बलि भेंट

करना बन्द नहीं किया। 6 इसलिये मैंने अपना क्रोध उन लोगों के
विरुद्ध प्रकट किया। मैंने यहूदा के नगरों और यरूशलेम की सड़कों
को दण्ड दिया। मेरे क्रोध ने यरूशलेम और यहूदा के नगरों को सूने
पत्थरों का ढेर बनाया, जैसे वे आज है।'

7 "अत: इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता
है, 'देवमूर्ति की पूजा करते रह कर तुम अपने को क्यों चोट पहुँचाते
हो, तुम पुरुष, स्त्रियों, बच्चों और शिशुओं को यहूदा के परिवार से
अलग कर रहे हो। तुममें से कोई भी नहीं जीवित रहेगा। 8 लोगों
देवमूर्तियाँ बनाकर तुम मुझे क्रोधित करना क्यों चाहते हो अब तुम
मिस्र में रह रहे हो और अब मिस्र के असत्य देवताओं को भेंट
चढ़ाकर तुम मुझे क्रोधित कर रहे हो। लोगों तुम अपने को नष्ट
कर डालोगे। यह तुम्हारे अपने दोष के कारण होगा। तुम अपने को
कुछ ऐसा बना लोगे कि अन्य राष्ट्रों के लोग, तुम्हारी बुराई करेंगे
और पृथ्वी के अन्य राष्ट्रों के लोग तुम्हारा मजाक उड़ायेंगे। 9 क्या
तुम उन दुष्टता भरे कामों को भूल चुके हो जिन्हें तुम्हारे पूर्वजों ने
किया क्या तुम उन दुष्टतापूर्ण कामों को भूल चुके हो जिन्हें यहूदा के
राजा और रानियों ने किया। क्या तुम उन दुष्टतापूर्ण कामों को भूल
चुके हो जिन्हें तुमने और तुम्हारी पत्नियों ने यहूदा की धरती पर
और यरूशलेम की सड़कों पर किया 10 आज भी यहूदा के लोगों ने
अपने को विनम्र नहीं बनाया। उन्होंने मुझे कोई सम्मान नहीं दिया
और उन लोगों ने मेरी शिक्षाओं का अनुसरण नहीं किया। उन्होंने
उन नियमों का पालन नहीं किया जिन्हें मैंने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों
को दिया।'

11 "अत: इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा जो कहता
है, वह यह है: 'मैंने तुम पर भयंकर विपत्ति ढाने का निश्चय किया
है। मैं यहूदा के पूरे परिवार को नष्ट कर दूँगा। 12 यहूदा के थोड़े
से लोग ही बचे थे। वे लोग यहाँ मिस्र में आए हैं। किन्तु मैं यहूदा
के परिवार के उन कुछ बचे लोगों को नष्ट कर दूँगा। वे तलवार

के घाट उतरेंगे या भूख से मरेंगे। वे कुछ ऐसे होंगे कि अन्य राष्ट्रों
के लोग उनके बारे में बुरा कहेंगे। अन्य राष्ट्र उससे भयभीत होंगे
जो उन लोगों के साथ घटित होगा। वे लोग अभिशाप वाणी बन
जायेंगे। अन्य राष्ट्र यहूदा के उन लोगों का अपमान करेंगे। 13 मैं उन
लोगों को दण्ड दूँगा जो मिस्र में रहने चले गए हैं। मैं उन्हें दण्ड देने
के लिये तलवार, भूख और भयंकर बीमारी का उपयोग करूँगा। मैं
उन लोगों को वैसे ही दण्ड दूँगा जैसे मैंने यरूशलेम नगर को दण्ड
दिया। 14 इन थोड़े बचे हुओं में से, जो मिस्र में रहने चले गए हैं, कोई
भी मेरे दण्ड से नहीं बचेगा। उनमें से कोई भी यहूदा वापस आने
के लिये नहीं बच पायेगा। वे लोग यहूदा वापस लौटना और वहाँ
रहना चाहते हैं किन्तु उनमें से एक भी व्यक्ति संभवत: कुछ बच
निकलने वालों के अतिरिक्त वापस नहीं लौटेगा।'

15 मिस्र में रहने वाली यहूदा की स्त्रियों में से अनेक अन्य
देवताओं को बलि भेंट कर रही थी। उनके पति इसे जानते थे, किन्तु
उन्हें रोकते नहीं थे। वहाँ यहूदा के लोगों का एक विशाल समूह एक
साथ इकट्ठा होता था। वे यहूदा के लोग थे जो दक्षिणी मिस्र में रह
रहे थे। उन सभी व्यक्तियों ने यिर्मयाह से कहा, 16 "हम यहोवा का
सन्देश नहीं सुनेंगे जो तुम दोगे। 17 हमने स्वर्ग की रानी को बलि
भेंट करने की प्रतिज्ञा की है और हम वह सब करेंगे जिसकी हमने
प्रतिज्ञा की है। हम उसकी पूजा में बलि चढ़ायेंगे और पेय भेंट देंगे।
यह हमने अतीत में किया और हमारे पूर्वजों, राजाओं और हमारे
पदाधिकारियों ने अतीत में यह किया। हम सब ने यहूदा के नगरों
और यरूशलेम की सड़कों पर यह किया। जिन दिनों हम स्वर्ग की
रानी की पूजा करते थे हमारे पास बहुत अन्न होता था। हम सफल
होते थे। हम लोगों का कुछ भी बुरा नहीं हुआ। 18 किन्तु तभी हम
लोगों ने स्वर्ग की रानी की पूजा छोड़ दी और हमने उसे पेय भेंट
देनी बन्द कर दी। जबसे हमने उसकी पूजा में वे काम बन्द किये

तब से ही समस्यायें उत्पन्न हुई हैं। हमारे लोग तलवार और भूख से मरे हैं।"

19 तब स्त्रियाँ बोल पड़ीं। उन्होंने यिर्मयाह से कहा, "हमारे पति जानते थे कि हम क्या कर रहे थे। हमने स्वर्ग की रानी को बलि देने के लिये उनसे स्वीकृति ली थी। मदिरा भेंट चढ़ाने के लिये हमें उनकी स्वीकृति प्राप्त थी। हमारे पति यह भी जानते थे कि हम ऐसी विशेष रोटी बनाते थे जो उनकी तरह दिखाई पड़ती थी।"

20 तब यिर्मयाह ने उन सभी स्त्रियों और पुरुषों से बातें कीं। उसने
उन लोगों से बातें कीं जिन्होंने वे बातें अभी कही थीं। 21 यिर्मयाह
ने उन लोगों से कहा, "यहोवा को याद था कि तुमने यहूदा के नगर
और यरूशलेम की सड़कों पर बलि भेंट की थी। तुमने और तुम्हारे
पूर्वजों, तुम्हारे राजाओं, तुम्हारे अधिकारियों और देश के लोगों ने
उसे किया। यहोवा को याद था और उसने तुम्हारे किये गये कर्मों
के बारे में सोचा। 22 अत: यहोवा तुम्हारे प्रति और अधिक चुप
नहीं रह सका। यहोवा ने उन भयंकर कामों से घृणा की जो तुमने
किये। इसीलिये यहोवा ने तुम्हारे देश को सूनी मरुभूमि बना दिया।
अब वहाँ कोई व्यक्ति नहीं रहता। अन्य लोग उस देश के बारे में
बुरी बातें कहते हैं। 23 वे सभी बुरी घटनायें तुम्हारे साथ घटी क्योंकि
तुमने अन्य देवताओं को बलि भेंट की। तुमने यहोवा के विरुद्ध पाप
किये। तुमने यहोवा की आज्ञा का पालन नहीं किया। तुमने उसके
उपदेशों या उसके दिये नियमों का अनुसरण नहीं किया। तुमने उसके
साथ की गयी वाचा का पालन नहीं किया।"

24 तब यिर्मयाह ने उन सभी पुरुष और स्त्रियों से बात की।
यिर्मयाह ने कहा, "मिस्र में रहने वाले यहूदा के तुम सभी लोगों
यहोवा के यहाँ से सन्देश सुनो: 25 इस्राएल के लोगों का परमेश्वर
सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: 'स्त्रियों, तुमने वह किया जो तुमने
करने को कहा। तुमने कहा, "हमने जो प्रतिज्ञा की है उसका पालन
हम करेंगे। हम ने प्रतिज्ञा की है कि हम स्वर्ग की देवी को बलि

भेंट करेंगे और पेय भेंट डालेंगे।" अत: ऐसा करती रहो। वह करो जो तुमने करने की प्रतिज्ञा की है। अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करो।'
26 किन्तु मिस्र में रहने वाले सभी लोगों यहोवा के सन्देश को सुनो: मैंने अपने बड़े नाम का उपयोग करते हुए यह प्रतिज्ञा की है: 'मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब मिस्र में रहने वाला यहूदा का कोई भी व्यक्ति प्रतिज्ञा करने के लिये मेरे नाम का उपयोग कभी नहीं कर पायेगा। वे फिर कभी नहीं कहेंगे, "जैसा कि यहोवा शाश्वत है।"
27 मैं यहूदा के उन लोगों पर नजर रख रहा हूँ। किन्तु मैं उन पर नजर उनकी देखरेख के लिये नहीं रख रहा हूँ। मैं उन पर चोट पहुँचाने के लिये नजर रख रहा हूँ। मिस्र में रहने वाले यहूदा के लोग भूख से मरेंगे और तलवार से मारे जायेंगे। वे तब तक मरते चले जायेंगे
जब तक वे समाप्त नहीं होंगे। 28 यहूदा के कुछ लोग तलवार से
मरने से बच निकलेंगे। वे मिस्र से यहूदा वापस लौटेंगे। किन्तु बहुत थोड़े से यहूदा के लोग बच निकलेंगे। तब यहूदा के बचे हुए वे लोग जो मिस्र में आकर रहेंगे यह समझेंगे कि किसका सन्देश सत्य घटित होता है। वे जानेंगे कि मेरा सन्देश अथवा उनका सन्देश सच
निकलता है। 29 लोगों मैं तुम्हें इसका प्रमाण दूँगा' यह यहोवा के
यहाँ से सन्देश है कि मैं तुम्हें मिस्र में दण्ड दूँगा। तब तुम निश्चय ही समझ जाओगे कि तुम्हें चोट पहुँचाने की मेरी प्रतिज्ञा, सच ही
घटित होगी। 30 जो मैं कहता हूँ वह करूँगा यह तुम्हारे लिए प्रमाण
होगा। जो यहोवा कहता है, यह वह है 'होप्रा फ़िरौन मिस्र का राजा है। उसके शत्रु उसे मार डालना चाहते हैं। मैं होप्रा फिरौन को उसके शत्रुओं को दूँगा। सिदकिय्याह यहूदा का राजा था। नबूकदनेस्सर सिदकिय्याह का शत्रु था और मैंने सिदकिय्याह को उसके शत्रु को दिया। उसी प्रकार मैं होप्रा फिरौन को उसके शत्रु को दूँगा।' "

45

बारुक को सन्देश

1 यहोयाकीम योशिय्याह का पुत्र था। यहोयाकीम के यहूदा में
राज्यकाल के चौथे वर्ष यिर्मयाह नबी ने नेरिय्याह के पुत्र बारुक
से यह कहा। बारुक ने इन तथ्यों को पत्रक पर लिखा। यिर्मयाह ने
बारुक से जो कहा, वह यह है: 2 "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जो
तुमसे कहता है, वह यह है: 3 'बारुक, तुमने कहा है: यह मेरे लिये
बहुत बुरा है। यहोवा ने मेरी पीड़ा के साथ मुझे शोक दिया है। मैं
बहुत थक गया हूँ। अपने कष्टों के कारण मैं क्षीण हो गया हूँ। मैं
आराम नहीं पा सकता।" 4 यिर्मयाह, बारुक से यह कहो: "यहोवा जो
कहता है, वह यह है: मैं उसे ध्वस्त कर दूँगा जिसे मैंने बनाया है। मैंने
जिसे रोपा है उसे मैं उखाड़ फेंकूँगा। मैं यहूदा में सर्वत्र यही करूँगा।
5 बारुक, तुम अपने लिये कुछ बड़ी बात होने की आशा कर रहे
हो। किन्तु उन चीज़ों की आशा न करो। उनकी ओर नजर न रखो
क्योंकि मैं सभी लोगों के लिये कुछ भयंकर विपत्ति उत्पन्न करुँगा।'
ये बातें यहोवा ने कही, 'तुम्हें अनेकों स्थानों पर जाना पड़ेगा। किन्तु
तुम चाहे जहाँ जाओ, मैं तुम्हें जीवित बचकर निकल जाने दूँगा।' "

46

राष्ट्रों के बारे में यहोवा का सन्देश

1 यिर्मयाह नबी को ये सन्देश मिले। ये सन्देश विभिन्न राष्ट्रों के
लिय हैं।

मिस्र के बारे में सन्देश

2 यह सन्देश मिस्र के बारे में है। यह सन्देश निको फिरौन की
सेना के बारे में है। निको मिस्र का राजा था। उसकी सेना कर्कमीश
नगर में पराजित हुई थी। कर्कमीश परात नदी पर है। यहोयाकीम के
यहूदा पर राज्यकाल के चौथे वर्ष बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने
निको फिरौन की सेना को कर्कमीश में पराजित किया। यहोयाकीम
राजा योशिय्याह का पुत्र था। मिस्र के लिये यहोवा का सन्देश यह
है:

3 "अपनी विशाल और छोटी ढालों को तैयार करो।
युद्ध के लिये कूच कर दो।
4 घोड़ों को तैयार करो।
सैनिकों अपने घोड़ों पर सवार हो।
युद्ध के लिये अपनी जगह जाओ।
अपनी टोप पहनो।
अपने भाले तेज करो।
अपने कवच पहन लो।
5 मैं यह क्या देखता हूँ सेना डर गई है।
सैनिक भाग रहे हैं।
उनके वीर सैनिक पराजित हो गये हैं।
वे जल्दी में भाग रहे हैं।
वे पीछे मुड़कर नहीं देखते।
सर्वत्र भय छाया है।"
यहोवा ने ये बातें कहीं।

6 "तेज घावक भाग कर निकल नहीं सकते।
शक्तिशाली सैनिक बचकर भाग नहीं सकता।
वे सभी ठोकर खाएंगे और गिरेंगे।
उत्तर में यह परात नदी के किनारे घटित होगा।
7 नील नदी सा कौन उमड़ा आ रहा है उस बलवती और तेज नदी सा कौन बढ़ रहा है
8 यह मिस्र है जो उमड़ते नील नदी सा आ रहा है।
यह मिस्र है जो उस बलवान तेज नदी सा आ रहा है।
मिस्र कहता है: 'मैं आऊँगा और पृथ्वी को पाट दूँगा, मैं नगरों और उनके लोगों को नष्ट कर दूँगा।'
9 घुड़सवारों, युद्ध में टूट पड़ो।
सारथियों, तेज हाँकों।
वीर सैनिकों, आगे बढ़ो।
कूश और पूत के सैनिकों अपनी ढालें लो।

लूदीया के सैनिकों, अपने धनुष संभालो।

10 “किन्तु उस दिन, हमारा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा विजयी होगा।
उस समय वह उन लोगों को दण्ड देगा जिन्हें दण्ड मिलना है।
यहोवा के शत्रु वह दण्ड पाएंगे जो उन्हें मिलना है।
तलवार तब तक काटेगी जब तक वह कुंठित नहीं हो जाती।
तलवार तब तक मारेगी जब तक इसकी रक्त पिपासा बुझ नहीं जाती।
यह होगा, क्योंकि ये हमारे स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा के लिए बलि भेंट होती है।
वह बलि मिस्र की सेना है जो परात नदी के किनारे उत्तरी प्रदेश में है।

11 “मिस्र, गिलाद को जाओ और कुछ दवायें लाओ।
तुम अनेक दवायें बनाओगे, किन्तु वे सहायक नहीं होंगी।
तुम स्वस्थ नहीं होगे।
12 राष्ट्र तुम्हारी व्यथा की पुकार को सुनेंगे।
तुम्हारा रूदन पूरी पृथ्वी पर सुना जाएगा।
एक वीर सैनिक दूसरे वीर सैनिक पर टूट पड़ेगा
और दोनों वीर सैनिक साथ गिरेंगे।”

13 यह वह सन्देश है जिसे यहोवा ने यिर्मयाह नबी को दिया। यह सन्देश नबूकदनेस्सर के बारे में है जो मिस्र पर आक्रमण करने आ रहा है।

14 “मिस्र में इस सन्देश की घोषणा करो,
इसका उपदेश मिग्दोल नगर में दो।
इसका उपदेश नोप और तहपन्हेस नगर में भी दो।
‘युद्ध के लिये तैयार हो।

क्यों क्योंकि तुम्हारे चारों ओर लोग तलवारों से मारे जा रहे हैं।’
15 मिस्र, तुम्हारे शक्तिशाली सैनिक क्यों मारे जाएंगे?
वे मुकाबले में नहीं टिकेंगे
क्योंकि यहोवा उन्हें नीचे धक्का देगा।
16 वे सैनिक बार—बार ठोकर खायेंगे, वे एक दूसरे पर गिरेंगे।
वे कहेंगे, ‘उठो, हम फिर अपने लोगों में चलें, हम अपने देश चलें।
हमारा शत्रु हमें पराजित कर रहा है।
हमें अवश्य भाग निकलना चाहिये।’
17 वे सैनिक अपने देश में कहेंगे,
‘मिस्र का राजा फिरौन केवल एक नाम की गूंज है।
उसके गौरव का समय गया।’ ”
18 राजा का यह सन्देश है।
राजा सर्वशक्तिमान यहोवा है।
“यदि मेरा जीना सत्य है तो
एक शक्तिशाली पथ दर्शक आएगा।
वह सागर के निकट ताबोर और कर्मेल पर्वतों सा महान होगा।
19 मिस्र के लोगों, अपनी वस्तुओं को बाँधों, बन्दी होने को तैयार हो जाओ।
क्यों क्योंकि नोप एक बरबाद सूना प्रदेश बनेगा नगर नष्ट होंगे और कोई भी व्यक्ति उनमें नहीं रहेगा।

20 “मिस्र एक सुन्दर गाय सा है।
किन्तु उसे पीड़ित करने को उत्तर से एक गोमक्षी आ रही है।
21 मिस्र की सेना में भाड़े के सैनिक मोटे बछड़ों से हैं।
वे सभी मुड़कर भाग खड़े होंगे।
वे आक्रमण के विरुद्ध दृढ़ता से खड़े नहीं रहेंगे।
उनकी बरबादी का समय आ रहा है।
वे शीघ्र ही दण्ड पाएंगे।

22 मिस्र एक फुंफकारते उस साँप सा है
जो बच निकलना चाहता है।
शत्रु निकट से निकट आता जा रहा है
और मिस्री सेना भागने का प्रयत्न कर रही है।
शत्रु मिस्र के विरुद्ध कुल्हाड़ियों के साथ आएगा,
वे उन पुरुषों के समान हैं जो पेड़ काटते हैं।"

23 यहोवा यह सब कहता है,
"शत्रु मिस्र के वन को काट गिरायेगा।
वन में असंख्य वृक्ष है,
किन्तु वे सब काट डाले जायेंगे।
शत्रु के सैनिक टिड्डी दल से भी अधिक हैं।
वे इतने अधिक सैनिक हैं कि उन्हें कोई गिन नहीं सकता।
24 मिस्र लज्जित होगा,
उत्तर का शत्रु उसे पराजित करेगा।"

25 इस्राएल का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है: "मैं बहुत
शीघ्र, थीबिस के देवता आमोन को दण्ड दूँगा और मैं फिरौन, मिस्र
और उसके देवताओं को दण्ड दूँगा। मैं मिस्र के राजाओं को दण्ड
दूँगा। मैं फिरौन पर आश्रित लोगों को दण्ड दूँगा। 26 मैं उन सभी
लोगों को उनके शत्रुओं से पराजित होने दूँगा और वे शत्रु उन्हें
मार डालना चाहते हैं। मैं बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर और उसके
सेवकों के हाथ में उन लोगों को दूँगा।

"बहुत पहले मिस्र शान्ति से रहा और इन सब विपत्तियों के समय के बाद मिस्र फिर शान्तिपूर्वक रहेगा।" यहोवा ने ये बातें कहीं।

उत्तरी इस्राएल के लिए सन्देश

27 "मेरे सेवक याकूब, भयभीत न हो।
इस्राएल, आतंकित न हो।

मैं निश्चय ही तुम्हें उन दूर देशों से बचाऊँगा।
मैं तुम्हारे बच्चों को वहाँ से बचाऊँगा जहाँ वे बन्दी हैं।
याकूब को पुन: सुरक्षा और शान्ति मिलेगी
और कोई व्यक्ति उसे भयभीत नहीं करेगा।”
28 यहोवा यह सब कहता है:
“याकूब मेरे सेवक, डरो नहीं।
मैं तुम्हारे साथ हूँ।
मैंने तुम्हें विभिन्न स्थानों में दूर भेजा
और मैं उन सभी राष्ट्रों को पूर्णत: नष्ट करूँगा।
किन्तु मैं तुम्हें पूर्णत: नष्ट नहीं करूँगा।
तुम्हें उसका दण्ड मिलना चाहिये जो तुमने बुरे काम किये हैं।
अत: मैं तुम्हें दण्ड से बच निकालने नहीं दूँगा।
मैं तुम्हें अनुशासन में लाऊँगा, किन्तु मैं उचित ही करूँगा!”

47

पलिश्ती लोगों के बारे में सन्देश

1 यह सन्देश यहोवा का है जो यिर्मयाह नबी को मिला। यह सन्देश
पलिश्ती लोगों के बारे में है। यह सन्देश, जब फिरौन ने गज्जा नगर
पर आक्रमण किया, उससे पहले आया।

2 यहोवा कहता है:
“ध्यान दो, शत्रु के सैनिक उत्तर में एक साथ मोर्चा लगा रहे हैं।
वे तटों को डूबाती तेज नदी की तरह आएंगे वे पूरे देश को
बाढ़ सा ढक लेंगे।
वे नगरों और उनमें रह रहे निवासियों को ढक लेंगे।
उस देश का हर एक रहने वाला सहायता के लिये चिल्लाएगा।
3 वे दौड़ते घोड़ों की आवाज सुनेंगे, वे रथों की घरघराहट सुनेंगे।
वे पहियों की घरघराहट सुनेंगे।

पिता अपने बच्चों की सुरक्षा करने में सहायता नहीं कर सकेंगे।
वे पिता सहायता करने में एकदम असमर्थ होंगे।
4 “सभी पलिश्ती लोगों को नष्ट करने का समय आ गया है।
सोर और सिदोन के बचे सहायकों को नष्ट करने का समय आ गया है।
यहोवा पलिश्ती लोगों को शीघ्र ही नष्ट करेगा।
कप्तोर द्वीप में बचे लोगों को वह नष्ट करेगा।
5 गज्जा के लोग शोक में डूबेंगे और अपना सिर मुड़ाएंगे।
अश्कलोन के लोग चुप कर दिए जाएंगे।
घाटी के बचे लोगों, कब तक तुम अपने को काटते रहोगे?

6 “ओ! यहोवा की तलवार,
तू रुकी नहीं तू कब तक मार करती रहेगी?
अपनी म्यान में लौट जाओ,
रूको, शान्त होओ।
7 किन्तु यहोवा की तलवार कैसे विश्राम लेगी
यहोवा ने इसे आदेश दिया है।
यहोवा ने इसे यह आदेश दिया है
कि यह अश्कलोन नगर और समुद्र तट पर आक्रमण करे।”

48

मोआब के बारे में सन्देश

1 यह सन्देश मोआब देश के बारे में है। इस्राएल के लोगों के
परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा ने जो कहा, वह यह है:

“नबो पर्वत का बुरा होगा, नबो पर्वत नष्ट होगा।
किर्यातैम नगर लज्जित होगा।
इस पर अधिकार होगा।
शक्तिशाली स्थान लज्जित होगा।
यह बिखर जायेगा।

2 मोआब की पुन: प्रशंसा नहीं होगी।
हेशबोन नगर के लोग मोआब के पराजय की योजना बनाएंगे।
वे कहेंगे, 'आओ, हम उस राष्ट्र का अन्त कर दें।'
मदमेन तुम भी चुप किये जाओगे,
तलवार तुम्हारा पीछा करेगी।
3 होरोनैम नगर से रूदन सुनो,
वे बहुत घबराहट और विनाश की चीखे हैं।
4 मोआब नष्ट किया जाएगा।
उसके छोटे बच्चे सहायता की पुकार करेंगे।
5 मोआब के लोगों लूहीत के मार्ग तक जाओ।
वे जाते हुए फूट फूट कर रो रहे हैं।
होरोनैम के नगर तक जाने वाली सड़क से पीड़ा
और कष्ट का रूदन सुना जा सकता है!
6 भाग चलो, जीवन के लिए भागो!
झाड़ी सी उड़ो जो मरुभूमि में उड़ती है।

7 "तुम अपनी बनाई चीज़ों और अपने धन पर विश्वास करते हो।
अत: तुम बन्दी बना लिये जाओगे।
कमोश देवता बन्दी बनाया जायेगा और उसके याजक
और पदाधिकारी उसके साथ जाएंगे।
8 विध्वंसक हर एक नगर के विरुद्ध आएगा,
कोई नगर नहीं बचेगा।
घाटी बरबाद होगी।
उच्च मैदान नष्ट होगा।
यहोवा कहता है:
यह होगा अत: ऐसा ही होगा।
9 मोआब के खेतों में नमक फैलाओ।
देश सूनी मरुभूमि बनेगा।
मोआब के नगर खाली होंगे।

उनमें कोई व्यक्ति भी न रहेगा।
10 यदि व्यक्ति वह नहीं करता जिसे यहोवा कहता है
यदि वह अपनी तलवार का उपयोग उन लोगों को मारने के
लिये नहीं करता, तो उस व्यक्ति का बुरा होगा।

11 "मोआब का कभी विपत्ति से पाला नहीं पड़ा।
मोआब शान्त होने के लिये छोड़ी गई दाखमधु सा है।
मोआब एक घड़े से कभी दूसरे घड़े में ढाला नहीं गया।
वह कभी बन्दी नहीं बनाया गया।
अत: उसका स्वाद पहले की तरह है
और उसकी गन्ध बदली नहीं है।"
12 यहोवा यह सब कहता है,
"किन्तु मैं लोगों को शीघ्र ही
तुम्हें तुम्हारे घड़े से ढालने भेजूँगा।
वे लोग मोआब के घड़े को खाली कर देंगे
और तब वे उन घड़ों को चकनाचूर कर देंगे।"

13 तब मोआब के लोग अपने असत्य देवता कमोश के लिए
लज्जित होंगे। इस्राएल के लोगों ने बेतेल में झूठे देवता पर विश्वास
किया था और इस्राएल के लोगों को उस समय ग्लानि हुई थी जब
उस असत्य देवता ने उनकी सहायता नहीं की थी।

14 "तुम यह नहीं कह सकते 'हम अच्छे सैनिक हैं।
हम युद्ध में वीर पुरुष हैं।'
15 शत्रु मोआब पर आक्रमण करेगा।
शत्रु उन नगरों में आएगा और उन्हें नष्ट करेगा।
नरसंहार में उसके श्रेष्ठ युवक मारे जाएँगे।"
यह सन्देश राजा का है।
उस राजा का नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।
16 मोआब का अन्त निकट है।

मोआब शीघ्र ही नष्ट कर दिया जाएगा।
17 मोआब के चारों ओर रहने वाले लोगों, तुम सभी उस देश के लिये
रोओगे।
तुम लोग जानते हो कि मोआब कितना प्रसिद्ध है।
अत: इसके लिए रोओ।
कहो, 'शासक की शक्ति भंग हो गई।
मोआब की शक्ति और प्रतिष्ठा चली गई।'

18 "दीबोन में रहने वाले लोगों अपने प्रतिष्ठा के स्थान से बाहर
निकलो।
धूलि में जमीन पर बैठो क्यों क्योंकि मोआब का विध्वंसक
आ रहा है और वह तुम्हारे दृढ़ नगरों को नष्ट कर देगा।

19 "अरोएर में रहने वाले लोगों, सड़क के सहारे खड़े होओ और
सावधानी से देखो।
पुरुष को भागते देखो, स्त्री को भागते देखो, उनसे पूछो, क्या
हुआ है?

20 "मोआब बरबाद होगा और लज्जा से गड़ जाएगा।
मोआब रोएगा और रोएगा।
अर्नोन नदी पर घोषित करो कि मोआब नष्ट हो गया।
21 उच्च मैदान के लोग दण्ड पा चुके होलोन, यहसा
और मेपात नगरों का न्याय हो चुका।
22 दीबोन, नबो
और बेतदिबलातैम,
23 किर्य्यातैम, बेतगामूल
और बेतमोन।
24 करिय्योत बोस्रा तथा मोआब के निकट
और दूर के सभी नगरों के साथ न्याय हो चुका।
25 मोआब की शक्ति काट दी गई,

मोआब की भुजायें टूट गई।"
यहोवा ने यह सब कहा।

26 "मोआब ने समझा था वह यहोवा से भी अधिक महत्वपूर्ण है।
अत: मोआब को दण्डित करो कि वह पागल सा हो जाये।
मोआब गिरेगा और अपनी उलटी में चारों ओर लौटेगा।
लोग मोआब का मजाक उड़ाएंगे।

27 "मोआब तुमने इस्राएल का मजाक उड़ाया था।
इस्राएल चोरों के गिरोह द्वारा पकड़ा गया था।
हर बार तुम इस्राएल के बारे में कहते थे।
तुम अपना सिर हिलाते थे ऐसा अभिनय करते थे मानो तुम इस्राएल से श्रेष्ठ हो
28 मोआब के लोगों, अपने नगरों को छोड़ो।
जाओ और पहाड़ियों पर रहो,
उस कबूतर की तरह रहो
जो अपने घोंसले गुफा के मुख पर बनाता है।"

29 "हम मोआब के गर्व को सुन चुके हैं,
वह बहुत घमण्डी था।
उसने समझा था कि वह बहुत बड़ा है।
वह सदा अपने मुँह मियाँ मिटठू बनता रहा।
वह अत्याधिक घमण्डी था।"

30 यहोवा कहता है, "मैं जानता हूँ कि मोआब शीघ्र ही क्रोधित हो जाता है और अपनी प्रशंसा के गीत गाता है।
किन्तु उसकी शेखियाँ झूठ है।
वह जो करने को कहता है, कर नहीं सकता।
31 अत: मैं मोआब के लिये रोता हूँ।
मैं मोआब में हर एक के लिये रोता हूँ।

मैं कीर्हेरेस के लोगों के लिये रोता हूँ।
32 मैं याजेर के लोग के साथ याजेर के लिये रोता हूँ।
सिबमा अतीत में तुम्हारी अंगूर की बेले सागर तक फैली थीं।
वे याजेर नगर तक पहुँच गई थीं।
किन्तु विध्वंसक ने तुम्हारे फल और अंगूर ले लिये।
33 मोआब के विशाल अंगूर के बागों से सुख और आनन्द विदा हो गये।
मैंने दाखमधु निष्कासकों से दाखमधु का बहना रोक दिया है।
अब दाखमधु बनाने के लिये अंगूरों पर चलने वालों के नृत्य गीत नहीं रह गए हैं।
खुशी का शोर गुल सभी समाप्त हो गया है।

34 "हेशबोन और एलाले नगरों के लोग रो रहे हैं। उनका रूदन
दूर यहस के नगर में भी सुनाई पड़ रहा है। उनका रूदन सोआर
नगर से सुनाई पड़ रहा है और होरोनैम एवं एग्लथ शेलिशिया के
दूर नगरों तक पहुँच रहा है। यहाँ तक कि निम्रीम का भी पानी सुखे
गया है। 35 मैं मोआब को उच्च स्थानों पर होमबलि चढ़ाने से रोक
दूँगा। मैं उन्हें अपने देवताओं को बलि चढ़ाने से रोकूँगा। यहोवा ने
यह सब कहा।

36 "मुझे मोआब के लिये बहुत दुःख है। शोक गीत छेड़ने वाली
बाँसुरी की धुन की तरह मेरा हृदय रूदन कर रहा है। मैं कीर्हेरेस के
लोगों के लिये दुःखी हूँ। उनके धन और सम्पत्ति सभी ले लिये गए
हैं। 37 हर एक अपना सिर मुड़ाये है। हर एक की दाढ़ी साफ हो गई
हे। हर एक के हाथ कटे हैं और उनसे खून निकल रहा है। हर एक
अपनी कमर में शोक के वस्त्र लपेटे हैं। 38 मोआब में लोग घरों की
छतों और हर एक सार्वजनिक चौराहों में सर्वत्र मरे हुओं के लिये

रो रहे हैं। वहाँ शोक है क्योंकि मैंने मोआब को खाली घड़े की तरह
फोड़ डाला है।" यहोवा ने यह सब कहा।
39 "मोआब बिखर गया है। लोग रो रहे हैं। मोआब ने आत्म
समर्पण किया है। अब मोआब लज्जित है। लोग मोआब का मजाक
उड़ाते हैं, किन्तु जो कुछ हुआ है वह उन्हें भयभीत कर देता है।"

40 यहोवा कहता है, "देखो, एक उकाब आकाश से नीचे को टूट पड़
रहा है।
यह अपने परों को मोआब पर फैला रहा है।
41 मोआब के नगरों पर अधिकार होगा।
छिपने के सुरक्षित स्थान पराजित होंगे।
उस समय मोआब के सैनिक वैसे ही आतंकित होंगे
जैसे प्रसव करती स्त्री।
42 मोआब का राष्ट्र नष्ट कर दिया जायेगा।
क्यों क्योंकि वे समझते थे कि वे यहोवा से भी अधिक
महत्वपूर्ण हैं।"

43 यहोवा यह सब कहता है:
"मोआब के लोगों, भय गहरे गके और जाल तुम्हारी प्रतीक्षा
में हैं।
44 लोग डरेंगे और भाग खड़े होंगे,
और वे गहने गकों में गिरेंगे।
यदि कोई गहरे गके से निकलेगा तो
वह जाल में फँसेगा।
मैं मोआब पर दण्ड का वर्ष लाऊँगा।"
यहोवा ने यह सब कहा।

45 "शक्तिशाली शत्रु से लोग भाग चले हैं।
वे सुरक्षा के लिये हेशबोन नगर में भागे।
किन्तु वहाँ सुरक्षा नहीं थी।
हेशबोन में आग लगी।

वह आग सीहोन के नगर से शुद्ध हुई और यह मोआब के प्रमुखों
को नष्ट करने लगी।
यह उन घमण्डी लोगों को नष्ट करने लगी।
46 मोआब यह तुम्हारे लिये, बहुत बुरा होगा।
कमोश के लोग नष्ट किये जा रहे हैं।
तुम्हारे पुत्र और पुत्रियाँ बन्दी
और कैदी के रुप में ले जाए जा रहे हैं।
47 मोआब के लोग बन्दी के रूप में दूर पहुँचाए जाएंगे।
किन्तु आने वाले दिनों में मैं मोआब के लोगों को वापस
लाऊँगा।"
यह सन्देश यहोवा का है।

यहाँ मोआब के साथ न्याय समाप्त होता है।

49

अम्मोन के बारे में सन्देश

1 यह सन्देश अम्मोनी लोगों के बारे में है। यहोवा कहता है,

"अम्मोनी लोगों, क्या तुम सोचते हो कि
इस्राएली लोगों के बच्चे नहीं है?
क्या तुम समझते हो कि वहाँ माता—पिता के मरने के बाद
उनकी भूमि लेने वाले कोई नहीं?
शायद ऐसा ही है और इसलिए मल्काम ने गाद की भूमि ले ली है।"

2 यहोवा कहता है, "वह समय आएगा जब रब्बा अम्मोन के लोग
युद्ध का घोष सुनेंगे।
रब्बा अम्मोन नष्ट किया जाएगा।
यह नष्ट इमारतों से ढकी पहाड़ी बनेगा और इसको चारों ओर के
नगर जला दिये जाएंगे।

उन लोगों ने इस्राएल के लोगों को वह भूमि छोड़ने को विवश किया।
किन्तु इस्राएल के लोग उन्हें हटने के लिये विवश करेंगे।"
यहोवा ने यह सब कहा।
3 "हेशबोन के लोगों, रोओ।
क्योंकि ऐ नगर नष्ट कर दिया गया है।
रब्बा अम्मोन की स्त्रियों, रोओ।
अपने शोक वस्त्र पहनो और रोओ।
सुरक्षा के लिये नगर को भागो। क्यो क्योंकि शत्रु आ रहा है।
वे मल्कान देवता को ले जाएंगे और वे मल्कान के याजकों और अधिकारियों को ले जाएंगे।
4 तुम अपनी शक्ति की डींग मारते हो।
किन्तु अपना बल खो रहे हो।
तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारा धन तुम्हें बचाएगा।
तुम समझते हो कि तुम पर कोई आक्रमण करने की सोच भी नहीं सकता।"
5 किन्तु सर्वशक्तिमान यहोवा यह कहता है,
"मैं हर ओर से तुम पर विपत्ति ढाऊँगा।
तुम सब भाग खड़े होगे,
फिर कोई भी तुम्हें एक साथ लाने में समर्थ न होगा।"

6 "अम्मोनी लोग बन्दी बनाकर दूर पहुँचाए जायेंगे। किन्तु समय आएगा जब मैं अम्मोनी लोगों को वापस लाऊँगा।" यह सन्देश यहोवा का है।

एदोम के बारे में सन्देश

7 यह सन्देश एदोम के बारे में है: सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है,

"क्या तेमान नगर में बुद्धि बची नहीं रह गई है?

क्या एदोम के बुद्धिमान लोग अच्छी सलाह देने योग्य नहीं रहे?
क्या वे अपनी बुद्धिमत्ता खो चुके हैं?
8 ददान के निवासियों भागो, छिपो।
क्यों क्योंकि मैं एसाव को उसके कामों के लिये दण्ड दूँगा।

9 "यदि अंगूर तोड़ने वाले आते हैं
और अपने अंगूर के बागों से अंगूर तोड़ते हैं
और बेलों पर कुछ अंगूर छोड़ ही देते हैं।
यदि चोर रात को आते हैं तो वे उतना ही ले जाते हैं जितना उन्हें चाहिये सब नहीं।
10 किन्तु मैं एसाव से हर चीज़ ले लूँगा।
मैं उसके सभी छिपने के स्थान ढूँढ डालूँगा।
वह मुझसे छिपा नहीं रह सकेगा।
उसके बच्चे, सम्बन्धी और पड़ोसी मरेंगे।
11 कोई भी व्यक्ति उनके बच्चों की देख—रेख के लिये नहीं बचेगा।
उसकी पत्नियाँ किसी भी विश्वासपात्र को नहीं पाएंगी।"

12 यह वह है, जो यहोवा कहता है, "कुछ व्यक्ति दण्ड के पात्र
नहीं होते, किन्तु उन्हें कष्ट होता है। किन्तु एदोम तुम दण्ड पाने
योग्य हो, अत: सचमुच तुमको दण्ड मिलेगा। जो दण्ड तुम्हें मिलना
चाहिये, उससे तुम बचकर नहीं निकल सकते। तुम्हें दण्ड मिलेगा।"
13 यहोवा कहता है, "मैं अपनी शक्ति से यह प्रतिज्ञा करता हूँ, मैं
प्रतिज्ञा करता हूँ कि बोस्रा नगर नष्ट कर दिया जाएगा। वह नगर
बरबाद चट्टानों का ढेर बनेगा। जब लोग अन्य नगरों का बुरा होना
चाहेंगे तो वे इस नगर को उदाहरण के रूप में याद करेंगे। लोग उस
नगर का अपमान करेंगे और बोस्रा के चारों ओर के नगर सदैव के
लिये बरबाद हो जाएंगे।"

14 मैंने एक सन्देश यहोवा से सुना।
यहोवा ने राष्ट्रों को सन्देश भेजा।
सन्देश यह है:
"अपनी सेनाओं को एक साथ एकत्रित करो!
युद्ध के लिये तैयार हो जाओ।
एदोम राष्ट्र के विरुद्ध कुच करो।
15 एदोम, मैं तुम्हें महत्वहीन बनाऊँगा।
हर एक व्यक्ति तुमसे घृणा करेगा।
16 एदोम, तुमने अन्य राष्ट्रों को आतंकित किया है।
अत: तुमने समझा कि तुम महत्वपूर्ण हो।
किन्तु तुम मूर्ख बनाए गए थे।
तुम्हारे घमण्ड ने तुझे धोखा दिया है।
एदोम, तुम ऊँचे पहाड़ियों पर बसे हो, तुम बड़ी चट्टानों और पहाड़ियों के स्थानों पर सुरक्षित हो।
किन्तु यदि तुम अपना निवास उकाब के घोंसले की ऊँचाई पर ही क्यों न बनाओ, तो भी मैं तुझे पा लूँगा
और मैं वहाँ से नीचे ले आऊँगा।"
यहोवा ने यह सब कहा।

17 "एदोम नष्ट किया जाएगा।
लोगों को नष्ट नगरों को देखकर दु:ख होगा।
लोग नष्ट नगरों पर आश्चर्य से सीटी बजाएंगे।
18 एदोम, सदोम, अमोरा और उनके चारों ओर के नगरों जैसा नष्ट किया जाएगा।
कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा।"
यह सब यहोवा ने कहा।

19 "कभी यरदन नदी के समीप की घनी झाड़ियों से एक सिंह
निकलेगा और वह सिंह उन खेतों में जाएगा जहाँ लोग अपनी भेड़ें

और अपने पशु रखते हैं। मैं उस सिंह के समान हूँ। मैं एदोम जाऊँगा
और मैं उन लोगों को आतंकित करूँगा। मैं उन्हें भगाऊँगा। उनका
कोई युवक मुझको नहीं रोकेगा। कोई भी मेरे समान नहीं है। कोई
भी मुझको चुनौती नहीं देगा। उनके गडेरियों (प्रमुखों) में से कोई भी
हमारे विरुद्ध खड़ा नहीं होगा।”

20 अत: यहोवा ने एदोम के विरुद्ध जो योजना बनाई है उसे सुनो।
तेमान में लोगों के साथ जो करने का निश्चय यहोवा ने किया है उसे सुनो।
शत्रु एदोम की रेवड़ (लोग) के बच्चों को घसीट ले जाएगा।
उन्होंने जो कुछ किया उससे एदोम के चरागाह खाली हो जायेगें।
21 एदोम के पतन के धमाके से पृथ्वी काँप उठेगी।
उनका रूदन लगातार लाल सागर तक सुनाई पड़ेगा।
22 यहोवा उस उकाब की तरह मंडरायेगा जो अपने शिकार पर टूटता है।
यहोवा बोस्रा नगर पर अपने पंख उकाब के समान फैलाया है।
उस समय एदोम के सैनिक बहुत आतंकित होंगे।
वे प्रसव करती स्त्री की तरह भय से रोएंगे।

दमिश्क के बारे में सन्देश

23 यह सन्देश दमिश्क नगर के लिये है:

“हमात और अर्पद नगर भयभीत हैं।
वे डरे हैं क्योंकि उन्होंने बुरी खबर सुनी है।
वे साहसहीन हो गए हैं।
वे परेशान और आतंकित हैं।
24 दमिश्क नगर दुर्बल हो गया है।
लोग भाग जाना चाहते हैं।
लोग भय से घबराने को तैयार बैठे हैं।

प्रसव करती स्त्री की तरह लोग पीड़ा और कष्ट का अनुभव
कर रहे हैं।

25 “दमिश्क प्रसन्न नगर है।
लोगों ने अभी उस तमाशे के नगर को नहीं छोड़ा है।
26 अत: युवक इस नगर के सार्वजनिक चौराहे में मरेंगे।
उस समय उसके सभी सैनिक मार डाले जाएंगे।”
सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह सब कुछ कहा है।
27 “मैं दमिश्क की दीवारों में आग लगा दूँगा।
वह आग बेन्नहदद के दृढ़ दुर्गो को पूरी तरह जलाकर राख
कर देगी।”

केदार और हासोर के बारे में सन्देश

28 यह सन्देश केदार के परिवार समूह और हासोर के शासकों
के बारे में है। बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने उन्हें पराजित किया
था। यहोवा कहता है,

“जाओ और केदार के परिवार समूह पर आक्रमण करो।
पूर्व के लोगों को नष्ट कर दो।
29 उनके डेरे और रेवड़ ले लिये जाएंगे।
उनके डेरे और सभी चीज़ें ले जायी जायेंगी।
उनका शत्रु ऊँटों को ले लेगा।
लोग उनके सामने चिल्लाएंगे:
‘हमारे चारों ओर भयंकर घटनायें घट रही है।’
30 शीघ्र ही भाग निकलो!
हासोर के लोगों, छिपने का ठीक स्थान ढूँढो।”
यह सन्देश यहोवा का है।
“नबूकदनेस्सर ने तुम्हारे विरुद्ध योजना बनाई है।
उसने तुम्हें पराजित करने की चुस्त योजना बनाई है।

31 “एक राष्ट्र है, जो खुशहाल है।
उस राष्ट्र को विश्वास है कि उसे कोई नहीं हरायेगा।
उस राष्ट्र के पास सुरक्षा के लिये द्वार और रक्षा प्राचीर नहीं है।
वे लोग अकेले रहते हैं।”
यहोवा कहता है, “उस राष्ट्र पर आक्रमण करो।”
32 “शत्रु उनके ऊँटों और पशुओं के बड़े झुण्डों को चुरा लेगा।
शत्रु उनके विशाल जानवरों के समूह को चुरा लेगा।
मैं उन लोगों को पृथ्वी के हर भाग में भाग जाने पर विवश करूँगा
जिन्होंने अपने बालों के कोनों को कटा रखा है।
और मैं उनके लिये चारों ओर से भयंकर विपत्तियाँ लाऊँगा।”
यह सन्देश यहोवा का है।
33 “हासोर का प्रदेश जंगली कुत्तों के रहने का स्थान बनेगा।
यह सदैव के लिये सूनी मरुभूमि बनेगा।
कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा कोई व्यक्ति उस स्थान पर नहीं रहेगा।”

एलाम के बारे में सन्देश

34 जब सिदकिय्याह यहूदा का राजा था तब उसके राज्यकाल
के आरम्भ में यिर्मयाह नबी ने यहोवा का एक सन्देश प्राप्त किया।
यह सन्देश एलाम राष्ट्र के बारे में है।

35 सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है,
“मैं एलाम का धनुष बहुत शीघ्र तोड़ दूँगा।
धनुष एलाम का सबसे शक्तिशाली अस्त्र है।
36 मैं एलाम पर चतुर्दिक तूफान लाऊँगा।
मैं उन्हें आकाश के चारों दिशाओं से लाऊँगा।
मैं एलाम के लोगों को पृथ्वी पर सर्वत्र भेजूँगा जहाँ चतुर्दिक आँधिया चलती हैं
और एलाम के बन्दी हर राष्ट्र में जाएंगे।
37 मैं एलाम को, उनके शत्रुओं के देखते, टुकड़ों में बाँट दूँगा।

मैं एलाम को उनके सामने तोड़ूँगा जो उसे मार डालना चाहते हैं।
मैं उन पर भयंकर विपत्तियाँ लाऊँगा।
मैं उन्हें दिखाऊँगा कि मैं उन पर कितना क्रोधित हूँ।”
यह सन्देश यहोवा का है।
“मैं एलाम का पीछा करने को तलवार भेजूँगा।
तलवार उनका पीछा तब तक करेगी जब तक मैं उन सबको मार नहीं डालूँगा।
38 मैं एलाम को दिखाऊँगा कि मैं व्यवस्थापक हूँ
और मैं उसके राजाओं तथा पदाधिकारियों को नष्ट कर दूँगा।”
यह सन्देश यहोवा का है।
39 “किन्तु भविष्य में मैं एलाम के लिये सब अच्छा घटित होने दूँगा।”
यह सन्देश यहोवा का है।

50

बाबुल के बारे में सन्देश

1 यह सन्देश यहोवा का है जिसे उसने बाबुल राष्ट्र और बाबुल
के लोगों के लिये दिया। यहोवा ने यह सन्देश यिर्मयाह द्वारा दिया।

2 “हर एक राष्ट्र को यह घोषित कर दो!
झण्डा उठाओ और सन्देश सुनाओ।
पूरा सन्देश सुनाओ और कहो,
‘बाबुल राष्ट्र पर अधिकार किया जाएगा।
बेल देवता लज्जा का पात्र बनेगा।
मरोदक देवता बहुत डर जाएगा।
बाबुल की देवमूर्तियाँ लज्जा का पात्र बनेंगी
उसके मूर्ति देवता भयभीत हो जाएंगे।’
3 उत्तर से एक राष्ट्र बाबुल पर आक्रमण करेगा।

वह राष्ट्र बाबुल को सूनी मरुभूमि सा बना देगा।
कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा
मनुष्य और पशु दोनों वहाँ से भाग जाएंगे।”
4 यहोवा कहता है, “उस समय, इस्राएल के
और यहूदा के लोग एक साथ होंगे।
वे एक साथ बराबर रोते रहेंगे
और एक साथ ही वे अपने यहोवा परमेश्वर को खोजने जाएंगे।
5 वे लोग पूछेंगे सिय्योन कैसे जाएँ
वे उस दिशा में चलना आरम्भ करेंगे।
लोग कहेंगे, ‘आओ, हम यहोवा से जा मिलें,
हम एक ऐसी वाचा करें जो सदैव रहे।
हम लोग एक ऐसी वाचा करे जिसे हम कभी न भूलें।’

6 “मेरे लोग खोई भेड़ की तरह हो गए हैं।
उनके गडेरिए (प्रमुख) उन्हें गलत रास्ते पर ले गए हैं।
उनके मार्गदर्शकों ने उन्हें पर्वतों और पहाड़ियों में चारों ओर भटकाया है।
वे भूल गए कि उनके विश्राम का स्थान कहाँ है।
7 जिसने भी मेरे लोगों को पाया, चोट पहुँचाई
और उन शत्रुओं ने कहा,
‘हमने कुछ गलत नहीं किया।
उन लोगों ने यहोवा के विरुद्ध पाप किये।
यहोवा उनका सच्चा विश्रामस्थल है।
यहोवा परमेश्वर है जिस पर उनके पूर्वजों ने विश्वास किया।

8 “बाबुल से भाग निकलो।
कसदी लोगों के देश को छोड़ दो।
उन बकरों की तरह बनो जो झुण्ड को राह दिखाते हैं।
9 मैं बहुत से राष्ट्रों को उत्तर से एक साथ लाऊँगा।

राष्ट्रों का यह समूह बाबुल के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयार होगा।
बाबुल उत्तर के लोगों द्वारा अधिकार में लाया जाएगा।
वे राष्ट्र बाबुल पर अनेक बाण चलायेंगे
और वे बाण उन सैनिकों के समान होंगे
जो युद्ध भूमि से खाली हाथ नहीं लौटते।
10 शत्रु कसदी लोगों से सारा धन लेगा।
वे शत्रु सैनिक जो चाहेंगे, लेंगे।”
यह सब यहोवा कहता है।

11 “बाबुल, तुम उत्तेजित और प्रसन्न हो।
तुमने मेरा देश लिया।
तुम अन्न के चारों ओर नयी गाय की तरह नाचते हो।
तुम्हारी हँसी घोडों की हिनहिनाहट सी है।
12 अब तुम्हारी माँ बहुत लज्जित होगी
तुम्हें जन्म देने वाली माँ को ग्लानि होगी
बाबुल सभी राष्ट्रों की तुलना में सबसे कम महत्व का होगा।
वह एक सूनी मरुभूमि होगी।
13 यहोवा अपना क्रोध प्रकट करेगा।
अत: कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा।
बाबुल नगर पूरी तरह खाली होगा।
बाबुल से गुजरने वाला हर एक व्यक्ति डरेगा।
वे अपना सिर हिलाएंगे।
जब वे देखेंगे कि यह किस बुरी तरह नष्ट हुआ है।

14 “बाबुल के विरुद्ध युद्ध की तैयारी करो।
सभी सैनिकों अपने धनुष से बाबुल पर बाण चलाओ।
अपने बाणों को न बचाओ।
बाबुल ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है।
15 बाबुल के चारों ओर के सैनिकों, युद्ध का उद्घोष करो।

अब बाबुल ने आत्म समर्पण कर दिया है।
उसकी दीवारों और गुम्बदों को गिरा दिया गया है।
यहोवा उन लोगों को वह दण्ड दे रहा है जो उन्हें मिलना चाहिये।
राष्ट्रों तुम बाबुल को वह दण्ड दो जो उसे मिलना चाहिये।
उसके साथ वह करो जो उसने अन्य राष्ट्रों के साथ किया है।
16 बाबुल के लोगों को उनकी फसलें न उगाने दो।
उन्हें फसलें न काटने दो।
बाबुल के सैनिक ने अपने नगर में अनेकों बन्दी लाए थे।
अब शत्रु के सैनिक आ गए हैं, अत: वे बन्दी अपने घर लौट रहे हैं।
वे बन्दी अपने देशों को वापस भाग रहे हैं।

17 "इस्राएल भेड़ की तरह है जिसे सिंहो ने पीछा करके भगा दिया है।
उसे खाने वाला पहला सिंह अश्शूर का राजा था।
उसकी हड्डियों को चूर करने वाला अंतिम सिंह बाबुल का राजा नबूकदनेस्सर था।
18 अत: सर्वशक्तिमान यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर कहता है:
"मैं शीघ्र ही बाबुल के राजा और उसके देश को दण्ड दूँगा।
मैं उसे वैसे ही दण्ड दूँगा जैसे मैंने अश्शूर के राजा को दण्ड दिया।"

19 "किन्तु इस्राएल को मैं उसके खेतों में वापस लाऊँगा।
वह वही भोजन करेगा जो कर्मेल पर्वत और बाशान की भूमि की उपज है।
वह भोजन करेगा और भरा पूरा होगा।
वह एप्रैम और गिलाद भूमि में पहाड़ियों पर खायेगा।"

20 यहोवा कहता है, "उस समय लोग इस्राएल के अपराध को जानना चाहेंगे।
किन्तु कोई अपराध नहीं होगा।
लोग यहूदा के पापों को जानना चाहेंगे किन्तु कोई पाप नहीं मिलेगा।
क्यों क्योंकि मैं इस्राएल और यहूदा के कुछ बचे हुओं को बचा रहा हूँ और मैं उनके सभी पापों के लिये उन्हें क्षमा कर रहा हूँ।"

21 यहोवा कहता है, मरातैम देश पर आक्रमण करो।
पकोद के प्रदेश के निवासियों पर आक्रमण करो।
उन पर आक्रमण करो, उन्हें मार डालो और उन्हें पूरी तरह नष्ट कर दो।
वह सब करो जिसके लिये मैं आदेश दे रहा हूँ!

22 "युद्ध का घोष पूरे देश में सुना जा सकता है।
यह बहुत अधिक विध्वंस का शोर है।
23 बाबुल पूरी पृथ्वी का हथौड़ा था।
किन्तु अब 'हथौड़ा' टूट गया और बिखर गया है।
बाबुल सच में सबसे अधिक बरबाद राष्ट्रों में से एक है।
24 बाबुल, मैंने तुम्हारे लिए एक जाल बिछाया,
और जानने के पहले ही तुम इसमें आ फँसे।
तुम यहोवा के विरुद्ध लड़े,
इसलिये तुम मिल गए और पकड़े गए।
25 यहोवा ने अपना भण्डार गृह खोल दिया है।
यहोवा ने भण्डार गृह से अपने क्रोध के अस्त्र शस्त्र निकाले हैं।
सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा ने उन अस्त्र शस्त्रों को निकाला हैं क्योंकि उसे काम करना है।
उसे कसदी लोगों के देश में काम करना है।

26 “अति दूर से बाबुल के विरुद्ध आओ, उसके अन्न भरे भण्डार
गृहों को तोड़कर खोलो।
बाबुल को पूरी तरह नष्ट करो और किसी को जीवित न छोड़ो।
उसके शवों को अन्न के बड़े ढेर की तरह एक ढेर में लगाओ।
27 बाबुल के सभी युवकों को मार डालो।
उनका नहसंहार होने दो।
उनकी पराजय का समय आ गया है।
अत: उनके लिये बहुत बुरा होगा।
यह उनके दण्डित होने का समय है।
28 लोग बाबुल देश से भाग रहे है, वे उस देश से बच निकल रहे हैं।
वे लोग सिय्योन को आ रहे हैं और वे सभी से वह कह रहे हैं
जो यहोवा कर रहा है।
वे कह रहे हैं कि बाबुल को, जो दण्ड मिलना चाहिये।
यहोवा उसे दे रहा है।
बाबुल ने यहोवा के मन्दिर को नष्ट किया, अत:
अब यहोवा बाबुल को नष्ट कर रहा है।

29 “धनुर्धारियों को बाबुल के विरुद्ध बुलाओ।
उन लोगों से नगर को घेरने को कहो।
किसी को बच निकलते मत दो। जो उसने बुरा किया है उसका
उल्टा भुगतान करो।
उसके साथ वही करो जो उसने अन्य राष्ट्रों के साथ किया है।
बाबुल ने यहोवा का सम्मान नहीं किया।
बाबुल इस्राएल के पवित्रतम के प्रति बड़ा क्रूर रहा।
अत: बाबुल को दण्ड दो।
30 बाबुल के युवक सड़कों पर मारे जाएंगे, उस दिन उसके सभी
सैनिक मर जाएंगे।
यह सब यहोवा कहता है।

31 “बाबुल, तुम बहुत गर्वीले हो,
और मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ।”
हमारा स्वामी सर्वशक्तिमान यहोवा यह सब कहता है।
“मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ,
और तुम्हारे दण्डित होने का समय आ गया है।
32 गर्वीला बाबुल ठोकर खाएगा और गिरेगा
और कोई व्यक्ति उसे उठाने में सहायता नहीं करेगा।
मैं उसके नगरों में आग लगाऊँगा,
वह आग उसके चारों ओर के सभी को पूरी तरह जला देगी।”

33 सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है,
“इस्राएल और यहूदा के लोग दास हैं।
शत्रु उन्हें ले गया, और शत्रु इस्राएल को निकल जाने नहीं देगा।
34 किन्तु परमेश्वर उन लोगों को वापस लाएगा।
उसका नाम सर्वशक्तिमान परमेश्वर यहोवा है।
वह दृढ़ शक्ति से उन लोगों की रक्षा करेगा।
वह उनकी रक्षा करेगा जिससे वह पृथ्वी को विश्राम दे सके।
किन्तु वह बाबुल के निवासियों को विश्राम नहीं देगा।”

35 यहोवा कहता है,
“बाबुल के निवासियों को तलवार के घाट उतर जाने दो।
बाबुल के राजकीय अधिकारियों
और ज्ञानियों को भी तलवार से कट जाने दो।
36 बाबुल के याजकों को तलवार के घाट उतरने दो।
वे याजक मूर्ख लोगों की तरह होंगे।
बाबुल के सैनिकों को तलवार से कटने दो, वे सैनिक त्रास से भर जाएंगे।
37 बाबुल के घोड़ों और रथों को तलवार के घाट उतरने दो।
अन्य देशों के भाड़े के सैनिकों को तलवार से कट जाने दो।

वे सैनिक भयभीत अबलाओं की तरह होंगे।
बाबुल के खजाने के विरुद्ध तलवार उठने दो, वे खजाने ले लिये जाएंगे।
38 बाबुल की नदियों के विरुद्ध तलवार उठने दो।
वे नदियाँ सूख जाएंगी।
बाबुल देश में असंख्य देवमूर्तियाँ हैं।
वे मूर्तियाँ प्रकट करती हैं कि बाबुल के लोग मूर्ख हैं।
अत: उन लोगों के साथ बुरी घटनायें घटेंगी।
39 "बाबुल फिर लोगों से नहीं भरेगा, जंगली कुत्ते, शुतुरमुर्ग और अन्य मरुभूमि के जानवर वहाँ रहेंगे।
किन्तु वहाँ कभी कोई मनुष्य फिर नहीं रहेगा।
40 परमेश्वर ने सदोम, अमोरा और उनके चारों ओर के नगरों को पूरी तरह से नष्ट किया था
और अब उन नगरों में कोई नहीं रहता।
इसी प्रकार बाबुल में कोई नहीं रहेगा
और कोई मनुष्य वहाँ रहने कभी नहीं जायेगा।

41 "देखो, उत्तर से लोग आ रहे हैं,
वे एक शक्तिशाली राष्ट्र से आ रहे हैं।
पूरे संसार के चारों ओर से एक साथ बहुत से राजा आ रहे हैं।
42 उनकी सेना के पास धनुष और भाले हैं, सैनिक क्रूर हैं, उनमें दया नहीं है।
सैनिक अपने घोड़ों पर सवार आ रहे हैं, और प्रचण्ड घोष सागर की तरह गरज रहे हैं।
वे अपने स्थानों पर युद्ध के लिये तैयार खड़े हैं।
बाबुल नगर वे तुम पर आक्रमण करने को तत्पर हैं।
43 बाबुल के राजा ने उन सेनाओं के बारे में सुना, और वह आतंकित हो गया।
वह इतना डर गया है कि उसके हाथ हिल नहीं सकते।

उसके डर से उसके पेट में ऐसे पीड़ा हो रही है, जैसे वह प्रसव करने
वाली स्त्री हो।”

44 यहोवा कहता है, “कभी यरदन नदी के पास की घनी झाड़ियों से
एक सिंह निकलेगा।
वह सिंह उन खेतों में आएगा जहाँ लोग अपने जानवर रखते
हैं और सब जानवर भाग जाएंगे।
मैं उस सिंह की तरह होऊँगा।
मैं बाबुल को, उसके देश से पीछा करके भगाऊँगा।
यह करने के लिये मैं किसे चुनूँगा कोई व्यक्ति मेरे समान नहीं
है।
ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो मुझे चुनौती दे सके।
अत: इसे मैं करूँगा।
कोई गडेरिया मुझे भगाने नहीं आएगा।
मैं बाबुल के लोगों को पीछा करके भगाऊँगा।”

45 बाबुल के साथ यहोवा ने जो करने की योजना बनाई है, उसे
सुनो।
बाबुल लोगों के लिये यहोवा ने जो करने का निर्णय लिया है
उसे सुनो।
दुश्मन दुध मुँहे को, बाबुल के समूह (लोगों) से खींच लेगा।
बाबुल के चरागाह, उनके कृत्यों के कारण खाली हो जायेंगे।
46 बाबुल का पतन होगा,
और वह पतन पृथ्वी को कंपकंपा देगा।
सभी राष्ट्रों के लोग
बाबुल के विध्वस्त होने के बारे में सुनेंगे।

51

1 यहोवा कहता है,

"मैं एक प्रचण्ड आँधी उठाऊँगा।
मैं इसे बाबुल और बाबुल के लोगों के विरुद्ध बहाऊँगा।
2 मैं बाबुल को ओसाने के लिये लोगों को भेजूँगा।
वे बाबुल को ओसा देंगे।
वे लोग बाबुल को सूना बना देंगे।
सेनायें नगर का घेरा डालेंगी और भयंकर विध्वंस होगा।
3 बाबुल के सैनिक अपने धनुष—बाण का उपयोग नहीं कर पाएंगे।
वे सैनिक अपना कवच भी नहीं पहन सकेंगे।
बाबुल के युवकों के लिये दु:ख अनुभव न करो।
उसकी सेना को पूरी तरह नष्ट करो।
4 बाबुल के सैनिक कसदियों की भूमि में मारे जाएंगे।
वे बाबुल की सड़कों पर बुरी तरह घायल होंगे।"

5 सर्वशक्तिमान यहोवा ने इस्राएल व यहूदा के लोगों को विधवा सा
अनाथ नहीं छोड़ा है।
परमेश्वर ने उन लोगों को नहीं छोड़ा।
नहीं वे लोग इस्राएल के पवित्रतम को छोड़ने के अपराधी हैं।
उन्होंने उसको छोड़ा किन्तु उसने इनको नहीं छोड़ा।

6 बाबुल से भाग चलो।
अपना जीवन बचाने के लिये भागो।
बाबुल के पापों के कारण वहाँ मत ठहरो और मारे न जाओ।
यह समय है जब यहोवा बाबुल के लोगों को उन बुरे कामों
का दण्ड देगा जो उन्होंने किये।
बाबुल को दण्ड मिलेगा जो उसे मिलना चाहिए।
7 बाबुल यहोवा के हाथ का सुनहले प्याले जैसा था।
बाबुल ने पूरी पृथ्वी को मतवाला बना डाला।
राष्ट्रों ने बाबुल की दाखमधु पी।
अत: वे पागल हो उठे।

8 बाबुल का पतन होगा और वह अचानक टूट जाएगा।
उसके लिये रोओ!
उसकी पीड़ा की औषधि लाओ!
कदाचित् वह स्वस्थ हो जाये!

9 हमने बाबुल को स्वस्थ करने को प्रयत्न किया,
किन्तु वह स्वस्थ न हुआ।
अत: हम उसे छोड़ दे और अपने अपने देशों को लौट चले।
बाबुल का दण्ड आकाश का परमेश्वर निश्चित करेगा,
वह निर्णय करेगा कि बाबुल का क्या होगा।
वह बादलों के समान ऊँचा हो गया है।
10 यहोवा ने हम लोगों के लिये बदला लिया।
आओ इस बारे में सिय्योन में बतायें।
हम यहोवा हमारे परमेश्वर ने जो कुछ किया है उसके बारे में बतायें।

11 बाणों को तेज करो! ढाल ओढ़ो।
यहोवा ने मादी के राजाओं को जगा दिया है।
उसने उन्हें जगाया है क्योंकि वह बाबुल को नष्ट करना चाहता है।
यहोवा बाबुल के लोगों को वह दण्ड देगा जिसके वे पात्र हैं।
बाबुल की सेना ने यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर को ध्वस्त किया था।
अत: यहोवा उन्हें वह दण्ड देगा जो उन्हें मिलना चाहिये।
12 बाबुल की दीवारों के विरुद्ध झण्डे उठा लो।
अधिक रक्षक लाओ।
चौकीदारों को उनके स्थान पर रखो।
एक गुप्त आक्रमण के लिये तैयार हो जाओ।
यहोवा वह करेगा जो उसने योजना बनाई है।
यहोवा वह करेगा जो उसने बाबुल के लोगों के विरुद्ध करने को कहा।
13 बाबुल तुम प्रभूत जल के पास हो।

तुम खजाने से पूर्ण हो।
किन्तु राष्ट्र के रूप में तुम्हारा अन्त आ गया है।
यह तुम्हें नष्ट कर देने का समय है।
14 सर्वशक्तिमान यहोवा ने यह प्रतिज्ञा अपना नाम लेकर की है:
“बाबुल मैं तुम्हें निश्चय ही असंख्य शत्रु सेना से भर दूँगा।
वे टिड्डी दल के समान होंगे।
वे सैनिक तुम्हारे विरुद्ध जीतेंगे और वे तुम्हारे ऊपर खड़े होंगे एवं अपना विजय घोष करेंगे।”

15 यहोवा ने अपनी महान शक्ति का उपयोग किया और पृथ्वी को बनाया।
उसने विश्व को बनाने के लिये अपनी बुद्धि का उपयोग किया।
उसने अपनी समझ का उपयोग आकाश को फैलाने में किया।
16 जब वह गरजता है तब आकाश का जल गरज उठता है।
वह सारी पृथ्वी से मेघों को ऊपर भेजता है।
वह वर्षा के साथ बिजली को भेजता है।
वह अपने भण्डार गृह से हवाओं को लाता है।
17 किन्तु लोग इतने बेवकूफ हैं।
वे नहीं समझते कि परमेश्वर ने क्या कर दिया है।
कुशल मूर्तिकार असत्य देवताओं की मूर्तियाँ बनाते हैं।
वे देवमूर्तियाँ केवल असत्य देवता हैं।
अत: वे प्रकट करती हैं कि वह मूर्तिकार कितना मूर्ख है।
वे देवमूर्तियाँ सजीव नहीं हैं।
18 वे देवमूर्तियाँ व्यर्थ हैं।
लोगों ने उन मूर्तियों को बनाया है और वे मजाक के अलावा कुछ नहीं हैं।
उनके न्याय का समय आएगा
और वे देवमूर्तियाँ नष्ट कर दी जाएंगी।

19 किन्तु याकूब का अँश (परमेश्वर) उन व्यर्थ देवमूर्तियों सा नहीं है।
लोगों ने परमेश्वर को नहीं बनाया, परमेश्वर ने लोगों को बनाया। परमेश्वर ने ही सब कुछ बनाया।
उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।

20 यहोवा कहता है, "बाबुल तुम मेरा युद्ध का हथियार हो,
मैं तुम्हारा उपयोग राष्ट्रों को कुचलने के लिये करता हूँ।
मैं तुम्हारा उपयोग राज्यों को नष्ट करने के लिये करता हूँ।
21 मैं तुम्हारा उपयोग घोड़े और घुड़सवार को कुचलने के लिये करता हूँ।
मैं तुम्हारा उपयोग रथ और सारथी को कुचलने के लिये करता हूँ।
22 मैं तुम्हारा उपयोग स्त्रियों और पुरुषों को कुचलने के लिये करता हूँ।
मैं तुम्हारा उपयोग वृद्ध और युवक को कुचलने के लिये करता हूँ।
मैं तुम्हारा उपयोग युवकों और युवतियों को कुचलने के लिये करता हूँ
23 मैं तुम्हारा उपयोग गडेरिये और रेवड़ों को कुचलने के लिये करता हूँ।
मैं तुम्हारा उपयोग किसान और बैलों को कुचलने के लिये करता हूँ।
मैं तुम्हारा उपयोग प्रशासकों और बड़े अधिकारियों को कुचलने के लिये करता हूँ।
24 किन्तु मैं बाबुल को उल्टा भुगतान करूँगा, मैं उन्हें सिय्योन के लिये उन्होंने जो बुरा किया, उन सबका भुगतान करूँगा।

यहूदा मैं उनको उल्टा भुगतान करुँगा जिससे तुम उसे देख
सको।"
यहोवा ने यह सब कहा।

25 यहोवा कहता है,
"बाबुल, तुम पर्वत को गिरा रहे हो और मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ।
बाबुल, तुमने पूरा देश नष्ट किया है, और मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ।
मैं तुम्हारे विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाऊँगा। मैं तुम्हें चट्टानों से
लुढ़काऊँगा।
मैं तुम्हें जला हुआ पर्वत कर दूँगा।
26 लोगों को चक्की बनाने योग्य बड़ा पत्थर नहीं मिलेगा
बाबुल से लोग इमारतों की नींव के लिये कोई भी चट्टान नहीं
ला सकेंगे।
क्यों क्योंकि तुम्हारा नगर सदैव के लिये चट्टानों के टुकड़ों का ढेर
बन जाएगा।"
यह सब यहोवा ने कहा।

27 "देश में युद्ध का झण्डा उठाओ!
सभी राष्ट्रों में तुरही बजा दो!
राष्ट्रों को बाबुल के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयार करो!
अरारात मिन्नी और अश्कनज राज्यों को बाबुल के विरुद्ध युद्ध
के लिये बुलाओ।
उसके विरुद्ध सेना संचालन के लिये सेनापति चुनो।
सेना को उसके विरुद्ध भेजो।
इतने अधिक घोड़ों को भेजो कि वे टिड्डी दल जैसे हो जायें।
28 उसके विरुद्ध राष्ट्रों को युद्ध के लिये तैयार करो।
मादी के राजाओं को तैयार करो।
उनके प्रशासकों और उनके बड़े अधिकारियों को तैयार करो।

उनसे शासित सभी देशों को बाबुल के विरुद्ध युद्ध के लिये लाओ।
29 देश इस प्रकार काँपता है मानों पीड़ा भोग रहा हो।
यह काँपेगा जब यहोवा बाबुल के लिये बनाई योजना को पूरा करेगा।
यहोवा की योजना बाबुल को सूनी मरुभूमि बनाने की है।
कोई व्यक्ति वहाँ नहीं रहेगा।
30 कसदी सैनिकों ने लड़ना बन्द कर दिया है।
वे अपने दुर्गों में ठहरे हैं।
उनकी शक्ति क्षीण हो गई है।
वे भयभीत अबला से हो गये हैं।
बाबुल के घर जल रहे हैं।
उसके फाटकों के अवरोध टूट गए हैं।
31 एक के बाद दूसरा राजदूत आ रहा है।
राजदूत के पीछे राजदूत आ रहे हैं।
वे बाबुल के राजा को खबर सुना रहे हैं
कि उसके पूरे नगर पर अधिकार हो गया।
32 वे स्थान जहाँ से नदियों को पार किया जाता है अधिकार में कर लिये गये हैं।
दलदली भूमि जल रही है
बाबुल के सभी सैनिक भयभीत हैं।”

33 इस्राएल के लोगों का परमेश्वर सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है:
“बाबुल नगर एक खलिहान सा है।
फसल कटने के समय भूसे से अच्छा अन्न अलग करने के लिये लोग उंठल को पीटते हैं
और बाबुल को पीटने का समय शीघ्र आ रहा है।

34 “बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने अतीत में हमें नष्ट किया।

अतीत में नबूकदनेस्सर ने हमें चोट पहुँचाई।
अतीत में वह हमारे लोगों को ले गया और हम खाली घड़े से हो गए।
उसने हमारी सर्वोत्तम चीज़ें लीं।
वह विशाल दानव की तरह था जो तब तक सब कुछ खाता गया जब तक उसका पेट न भरा।
वह सर्वोत्तम चीज़ें ले गया, और हम लोगों को दूर फेंक दिया।
35 बाबुल ने हमें चोट पहुँचाने के लिये भयंकर काम किये और
अब मैं चाहता हूँ बाबुल के साथ वैसा ही घटित हो।"

सिय्योन में रहने वाले लोगों ने यह कहा,
"बाबुल हमारे लोगों को मारने के अपराधी हैं
और अब वे उन बुरे कामों के लिये दण्ड पा रहे हैं जो उन्होंने किये थे।"
यरूशलेम नगर ने यह सब कहा।
36 अत: यहोवा कहता है,
"यहूदा मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।
मैं यह निश्चय देखूँगा कि बाबुल को दण्ड मिले।
मैं बाबुल के समुद्र को सुखा दूँगा और मैं उसके पानी के सोतों को सुखा दूँगा।
37 बाबुल बरबाद इमारतों का ढेर बन जाएगा।
बाबुल जंगली कुत्तों के रहने का स्थान बनेगा।
लोग चट्टानों के ढेर को देखेंगे और चकित होंगे।
लोग बाबुल के बारे में अपना सिर हिलायेंगे।
बाबुल ऐसी जगह हो जायेगा जहाँ कोई भी नहीं रहेगा।

38 "बाबुल के लोग गरजते हुए जवान सिंह की तरह हैं।
वे सिंह के बच्चे की तरह गुर◌्राते हैं।
39 वे लोग उत्तेजित सिंहों का सा काम कर रहे हैं।

मैं उन्हें दावत दूँगा।
मैं उन्हें मत्त बनाऊँगा।
वे हँसेंगे और आनन्द का समय बितायेंगे
और तब वे सदैव के लिये सो जायेंगे।
वे कभी नहीं जागेंगे।"

यहोवा ने यह सब कहा।
40 "मैं बाबुल के लोगों को मार डाले जाने के लिये ले जाऊँगा।
बाबुल मारे जाने की प्रतीक्षा करने वाले भेड़, मेंमने और बकरियों जैसा होगा।

41 "शेशक पराजित होगा।
सारी पृथ्वी का उत्तम और सर्वाधिक गर्वीला देश बन्दी होगा।
अन्य राष्ट्रों के लोग बाबुल पर निगाह डालेंगे
और जो कुछ वे देखेंगे उससे वे भयभीत हो उठेंगे।
42 बाबुल पर सागर उमड़ पड़ेगा।
उसकी गरजती तरंगे उसे ढक लेंगी।
43 तब बाबुल के नगर बरबाद और सूने हो जायेंगे।
बाबुल एक सूखी मरुभूमि बन जाएगा।
यह ऐसा देश बनेगा जहाँ कोई मनुष्य नहीं रहेगा,
लोग बाबुल से यात्रा भी नहीं करेंगे।
44 मैं बेल देवता को बाबुल में दण्ड दूँगा।
मैं उसके द्वारा निगले व्यक्तियों को उगलवाऊँगा।
अन्य राष्ट्र बाबुल में नहीं आएंगे
और बाबुल नगर की चहारदीवारी गिर जायेगी।
45 मेरे लोगों, बाबुल नगर से बाहर निकलो।
अपना जीवन बचाने को भाग चलो।
यहोवा के तेज क्रोध से बच भागो।

46 "मेरे लोगों, दु:खी मत होओ।

अफवाहें उड़ेंगी किन्तु डरो नहीं।
इस वर्ष एक अफवाह उड़ती है।
अगले वर्ष दूसरी अफवाह उड़ेगी।
देश में भयंकर युद्ध के बारे में अफवाहें उड़ेंगी।
शासकों के दूसरे शासकों के विरुद्ध युद्ध के बारे में अफवाहें उड़ेंगी।
47 निश्चय ही वह समय आयेगा,
जब मैं बाबुल के असत्य देवताओं को दण्ड दूँगा
और पूरा बाबुल देश लज्जा का पात्र बनेगा।
उस नगर की सड़कों पर असंख्य मरे व्यक्ति पड़े रहेंगे।
48 तब पृथ्वी और आकाश और उसके भीतर की सभी चीज़ें
बाबुल पर प्रसन्न होकर गाने लगेंगे,
वे जय जयकार करेंगे, क्योंकि सेना उत्तर से आएगी
और बाबुल के विरुद्ध लड़ेगी।”
यह सब यहोवा ने कहा है।

49 “बाबुल ने इस्राएल के लोगों को मारा।
बाबुल ने पृथ्वी पर सर्वत्र लोगों को मारा।
अत: बाबुल का पतन अवश्य होगा।
50 लोगों, तुम तलवार के घाट उतरने से बच निकले,
तुम्हें शीघ्रता करनी चाहिये और बाबुल को छोड़ना चाहिये।
प्रतीक्षा न करो।
तुम दूर देश में हो।
किन्तु जहाँ कहीं रहो यहोवा को याद करो
और यरूशलेम को याद करो।

51 “यहूदा के हम लोग लज्जित हैं।
हम लज्जित हैं क्योंकि हमारा अपमान हुआ।
क्यों? क्योंकि विदेशी यहोवा के मन्दिर के

पवित्र स्थानों में प्रवेश कर चुके हैं।”

52 यहोवा कहता है, “समय आ रहा है
जब मैं बाबुल की देवमूर्तियों को दण्ड दूँगा।
उस समय उस देश में
सर्वत्र घायल लोग पीड़ा से रोएंगे।
53 बाबुल उठता चला जाएगा जब तक वह आकाश न छू ले।
बाबुल अपने दुर्गों को दृढ़ बनायेगा।
किन्तु मैं उस नगर के विरुद्ध लड़ने के लिये लोगों को भेजूँगा
और वे लोग उसे नष्ट कर देंगे।”
यहोवा ने यह सब कहा।

54 “हम बाबुल में लोगों का रोना सुन सकते हैं।
हम कसदी लोगों के देश में चीज़ों को नष्ट करने वाले लोगों का शोर सुन सकते हैं।
55 यहोवा बहुत शीघ्र बाबुल को नष्ट करेगा।
वह नगर के उद्‌घोष को चुप कर देगा।
शत्रु सागर की गरजती तरंगों की तरह टूट पड़ेंगे।
चारों ओर के लोग उस गरज को सुनेंगे।
56 सेना आएगी और बाबुल को नष्ट करेगी।
बाबुल के सैनिक पकड़े जाएंगे।
उनके धनुष टूटेंगे। क्यों क्योंकि यहोवा उन लोगों को दण्ड देता है जो बुरा करते हैं।
यहोवा उन्हें पूरा दण्ड देता जिसके वे पात्र हैं।
57 मैं बाबुल के बड़े पदाधिकारियों
और बुद्धिमान लोगों को मत्त कर दूँगा।
मैं उसके प्रशासकों, अधिकारियों
और सैनिकों को भी मत्त करूँगा।

तब वे सदैव के लिये सो जायेंगे,
वे कभी नहीं जागेंगे।”
राजा ने यह कहा,
उसका नाम सर्वशक्तिमान यहोवा है।

58 सर्वशक्तिमान यहोवा कहता है,
“बाबुल की मोटी और दृढ़ दीवार गिरा दी जाएगी।
इसके ऊँचे द्वार जला दिये जायेंगे।
बाबुल के लोग कठिन परिश्रम करेंगे
पर उसका कोई लाभ न होगा।
वे नगर को बचाने के प्रयत्न में बहुत थक जायेंगे,
किन्तु वे लपटों के केवल ईंधन होंगे।”

यिर्मयाह बाबुल को एक सन्देश भेजता है

59 यह वह सन्देश है जिसे यिर्मयाह ने सरायाह नामक अधिकारी
को दिया। सरायाह नेरिय्याह का पुत्र था। नेरिय्याह महसेयाह का
पुत्र था। सरायाह यहूदा के राजा सिदकिय्याह के साथ बाबुल गया
था। यहूदा के राजा सिदकिय्याह के राज्यकाल के चौथे वर्ष में यह
हुआ। उस समय यिर्मयाह ने सरायाह नामक अधिकारी को यह
सन्देश दिया। 60 यिर्मयाह ने पत्रक पर उन सब भयंकर घटनाओं
को लिख रखा था जो बाबुल में घटित होने वाली थीं। उसने यह
सब बाबुल के बारे में लिख रखा था।

61 यिर्मयाह ने सरायाह से कहा, “सरायाह, बाबुल जाओ। निश्चय
करो कि यह सन्देश तुम इस प्रकार पढ़ो कि सभी लोग सुन लें।
62 इसके बाद कहो, ‘हे यहोवा तूने कहा है कि तू इस बाबुल नामक
स्थान को नष्ट करेगा। तू इसे ऐसे नष्ट करेगा कि कोई मनुष्य या
जानवर यहाँ नहीं रहेगा। यह सदैव के लिये सूना और बरबाद स्थान
हो जाएगा।’ 63 जब तुम पत्रक को पढ़ चुको तो इससे एक पत्थर
बांधो।तब इस पत्रक को परात नदी में डाल दो। 64 तब कहो, ‘बाबुल

इसी प्रकार डूबेगा। बाबुल फिर कभी नहीं उठेगा। बाबुल डूबेगा क्योंकि मैं वहाँ भयंकर विपत्तियाँ ढाऊँगा।' "

यिर्मयाह के शब्द यहाँ समाप्त हुए।

52

यरूशलेम का पतन

1 सिदकिय्याह जब यहूदा का राजा हुआ, वह इक्कीस वर्ष का था।
सिदकिय्याह ने यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राज्य किया उसकी माँ
का नाम हमूतल था जो यिर्मयाह की पुत्री थी। हमूतल का परिवार
लिब्ना नगर का था। 2 सिदकिय्याह ने बुरे काम किये, ठीक वैसे
ही जैसे यहोयाकीम ने किये थे। यहोवा सिदकिय्याह द्वारा उन बुरे
कामों का करना पसन्द नहीं करता था। 3 यरूशलेम और यहूदा
के साथ भयंकर घटनायें घटी, क्योंकि यहोवा उन पर क्रोधित था।
अन्त में यहोवा ने अपने सामने से यहूदा और यरूशलेम के लोगों
को दूर फेंक दिया।

सिदकिय्याह बाबुल के राजा के विरुद्ध हो गया। 4 अत:
सिदकिय्याह के शासनकाल के नौवें वर्ष के दसवें महीने के दसवें
दिन बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने सेना के साथ यरूशलेम को
कुच किया। नबूकदनेस्सर अपने साथ अपनी पूरी सेना लिए था।
बाबुल की सेना ने यरूशलेम के बाहर डेरा डाला। इसके बाद
उन्होंने नगर—प्राचीर के चारों ओर मिट्टी के टीले बनाये जिससे वे
उन दीवारों पर चढ़ सकें। 5 सिदकिय्याह के राज्यकाल के ग्यारहवें
वर्ष तक यरूशलेम नगर पर घेरा पड़ा रहा। 6 उस वर्ष के चौथे महीने
के नौवें दिन भुखमरी की हालत बहुत खराब थी। नगर में खाने के
लिये कुछ भी भोजन नहीं रह गया था। 7 उस दिन बाबुल की सेना
यरूशलेम में प्रवेश कर गई। यरूशलेम के सैनिक भाग गए। वे रात
को नगर छोड़ भागे। वे दो दीवारों के बीच के द्वार से गए। द्वार राजा
के उद्यान के पास था। यद्यपि बाबुल की सेना ने यरूशलेम नगर को

घेर रखा था तो भी यरूशलेम के सैनिक भाग निकले। वे मरुभूमि की ओर भागे।

8 किन्तु बाबुल की सेना ने सिदकिय्याह का पीछा किया। उन्होंने
उसे यरीहो के मैदान में पकड़ा। सिदकिय्याह के सभी सैनिक भाग
गए। 9 बाबुल की सेना ने राजा सिदकिय्याह को पकड़ लिया। वे
रिबला नगर में उसे बाबुल के राजा के पास ले गए। रिबला हमात
देश में है। रिबला में बाबुल के राजा ने सिदकिय्याह के बारे में
अपना निर्णय सुनाया। 10 वहाँ रिबला नगर में बाबुल के राजा ने
सिदकिय्याह के पुत्रों को मार डाला। सिदकिय्याह को अपने पुत्रों
का मारा जाना देखने को विवश किया गया। बाबुल के राजा ने
यहूदा के राजकीय पदाधिकारियों को भी मार डाला। 11 तब बाबुल
के राजा ने सिदकिय्याह की आँखे निकाल लीं। उसने उसे काँसे की
जंजीर पहनाई। तब वह सिदकिय्याह को बाबुल ले गया। बाबुल में
उसने सिदकिय्याह को बन्दीगृह में डाल दिया। सिदकिय्याह अपने
मरने के दिन तक बन्दीगृह में रहा।

12 बाबुल के राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक नबूजरदान
यरूशलेम आया। नबूकदनेस्सर के राज्यकाल के उन्नीसवें वर्ष
के पाँचवें महीने के दसवें दिन यह हुआ। नबूजरदान बाबुल का
महत्वपूर्ण अधिनायक था। 13 नबूजरदान ने यहोवा के मन्दिर को
जला डाला। उसने राजमहल तथा यरूशलेम के अन्य घरों को
भी जला दिया। 14 पूरी कसदी सेना ने यरूशलेम की चाहरदीवारी
को तोड़ गिराया। यह सेना उस समय राजा के विशेष रक्षकों के
अधिनायक के अधीन थी। 15 अधिनायक नबूजरदान ने अब तक
यरूशलेम में बचे लोगों को भी बन्दी बना लिया। वह उन्हें भी ले
गया जिन्होंने पहले ही बाबुल के राजा को आत्मसमर्पण कर दिया
था। वह उन कुशल कारीगरों को भी ले गया जो यरूशलेम में बचे
रह गए थे। 16 किन्तु नबूजरदान ने कुछ अति गरीब लोगों को देश
में पीछे छोड़ दिया था। उसने उन लोगों को अंगूर के बागों और

खेतों में काम करने के लिए छोड़ा था।
17 कसदी सेना ने मन्दिर के काँसे के स्तम्भों को तोड़ दिया।
उन्होंने यहोवा के मन्दिर के काँसे के तालाब और उसके आधार
को भी तोड़ा। वे उस सारे काँसे को बाबुल ले गए।
18 बाबुल की
सेना इन चीज़ों को भी मन्दिर से ले गई: बर्तन, बेलचे, दीपक जलाने
के यन्त्र, बड़े कटोरे, कड़ाहियाँ और काँसे की वे सभी चीज़ें जिनका
उपयोग मन्दिर की सेवा में होता था।
19 राजा के विशेष रक्षकों का
अधिनायक इन चीजों को ले गया: चिलमची, अंगीठियाँ, बड़े कटोरे,
बर्तन, दीपाधार, कड़ाहियाँ और दाखमधु के लिये काम में आने वाले
पड़े प्याले। वह उन सभी चीज़ों को जो सोने और चाँदी की बनी
थीं, ले गया।
20 दो स्तम्भ सागर तथा उसके नीचे के बारह काँसे
के बैल तथा सरकने वाले आधार बहुत भारी थे। राजा सुलैमान ने
यहोवा के मन्दिर के लिये ये चीज़ें बनायी थी। वह काँसा जिससे वे
चीज़ें बनी थीं, इतना भारी था कि तौला नहीं जा सकता था।

21 काँसे का हर एक स्तम्भ अट्ठारह हाथ ऊँचा था। हर एक स्तम्भ
बारह हाथपरिधि वाला था। हर एक स्तम्भ खोखला था। हर एक
स्तम्भ की दीवार चार ईंच मोटी थी।
22 पहले स्तम्भ के ऊपर जो
काँसे का शीर्ष था वह पाँच हाथ ऊँचा था। यह चारों ओर जाल के
अलंकरण और काँसे के अनार से सजा था। अन्य स्तम्भों पर भी
अनार थे। यह पहले स्तम्भ की तरह था।
23 स्तम्भों की बगल में
छियानवे अनार थे। स्तम्भों के चारों ओर बने जाल के अलंकार पर
सब मिला कर सौ अनार थे।

24 राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक सरायाह और सपन्याह
को बन्दी के रूप में ले गया। सरायाह महायाजक था और सपन्याह
उससे दूसरा। तीन चौकीदार भी बन्दी बनाए गए।
25 राजा के विशेष
रक्षकों का अधिनायक लड़ने वाले व्यक्तियों के अधीक्षक को भी
ले गया। उसने राजा के सात सलाहकारों को भी बन्दी बनाया।
वे लोग उस समय तक यरूशलेम में थे। उसने उस शास्त्री को
भी लिया जो व्यक्तियों को सेना में रखने का अधिकारी था और
उसने साठ साधारण व्यक्तियों को लिया जो तब तक नगर में थे।
26-27 अधिनायक नबूजरदान ने उन सभी अधिकारियों को लिया।

वह उन्हें बाबुल के राजा के सामने लाया। बाबुल का राजा रिबला नगर में था। रिबला हमात देश में है। वहाँ उस रिबला नगर में राजा ने उन अधिकारियों को मार डालने का आदेश दिया।
इस प्रकार यहूदा के लोग अपने देश से ले जाए गए। 28 इस प्रकार
नबूकदनेस्सर बहुत से लोगों को बन्दी बनाकर ले गया।

राजा नबूकदनेस्सर के शासन के सातवें वर्ष में:
यहूदा के तीन हज़ार तेईस पुरुष।
29 नबूकदनेस्सर के शासन के अट्ठारहवें वर्ष में: यरूशलेम से आठ सौ बत्तीस लोग।
30 नबूकदनेस्सर के शासन के तेईसवें वर्ष में: नबूजरदान ने यहूदा के सात सौ पैंतालीस व्यक्ति बन्दी बनाए। नबूजरदान राजा के विशेष रक्षकों का अधिनायक था।

सब मिलाकर चार हज़ार छ: सौ लोग बन्दी बनाए गए थे।

यहोयाकीम स्वतन्त्र किया जाता है

31 यहूदा का राजा यहोयाकीम सैंतीस वर्ष, तक बाबुल के
बन्दीगृह में बन्दी रहा। उसके बन्दी रहने के सैंतीसवें वर्ष, बाबुल
का राजा एबीलमरोदक यहोयाकीम पर बहुत दयालु रहा। उसने
यहोयाकीम को उस वर्ष बन्दीगृह से बाहर निकाला। यह वही
वर्ष था जब एबीलमरोदक बाबुल का राजा हुआ। एबीलमरोदक
ने यहोयाकीम को बारहवें महीने के पच्चीसवें दिन बन्दीगृह से छोड़
दिया। 32 एबीलमरोदक ने यहोयाकीम से दयालुता से बातें कीं।
उसने यहोयाकीम को उन अन्य राजाओं से उच्च सम्मान का स्थान
दिया जो बाबुल में उसके साथ थे। 33 अत: यहोयाकीम ने अपने
बन्दी के वस्त्र उतारे। शेष जीवन में वह नियम से राजा की मेज पर
भोजन करता रहा। 34 बाबुल का राजा प्रतिदिन उसे स्वीकृत धन
देता था। यह तब तक चला जब तक यहोयाकीम मरा नहीं।

पवित्र बाइबल
The Holy Bible, Easy Reading Version, in Hindi

copyright © 1992-2010 World Bible Translation Center

Language: हिंदी (Hindi)

Translation by: World Bible Translation Center

License Agreement for Bible Texts World Bible Translation Center Last Updated: September 21, 2006 Copyright © 2006 by World Bible Translation Center All rights reserved. These Scriptures: • Are copyrighted by World Bible Translation Center. • Are not public domain. • May not be altered or modified in any form. • May not be sold or offered for sale in any form. • May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space). • May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included. • May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read VersionTM in English) must appear at the end of each quotation. Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com. World Bible Translation Center P.O. Box 820648 Fort Worth, Texas 76182, USA Telephone: 1-817-595-1664 Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE E-mail: info@wbtc.com WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

2019-11-15

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 8 Sep 2021 from source files dated 18 Aug 2021

7f0fcd5b-bc85-55f6-933a-0de82e7ef275